❀ निवेदन ❀

संसार को बुद्धिमानो ने असार माना है, केवल नारायण नाम का भजन कीर्तन ही इस अगाध भवसागर होने के लिये जहाज के सदृश्य सार है,

कलियुग केवल नाम अधारा। सुमर सुमर नर उतरहीं पारा ॥

आधुनिक कालमें मानव से योग यज्ञ, व्रत, उपवास, दान पुण्यादि कल्याण कर्म प्राय: नहीं से बनते हैं तो मनुष्य का आगमन के दौर से छुटकारा पाना असंभव प्रतीत होता है, पुरातन पथ प्रदर्शकों ने इसीलिये भूतकालीन कल्याण मार्गों को वर्तमान युगके लिये कठिन मानकर केवल भगवान के नाम का भजन कीर्तन यशोगान ही मोक्ष प्राप्तिका सुगम साधन बताया है, इस काव्य कुञ्ज के जन्म संस्कार का यही एक प्रमुख कारण है, और उद्देश है कल्याण प्राप्ति।

इस पुस्तक में साकार ब्रह्मप्रदर्शन एवं भक्ति प्रेम के साथ साथ मनोरंजनार्थ श्रृंगार को विशेषता इस लिये दी गई है कि जन साधारण को ज्ञान विज्ञान, योगादि की रचनायें, श्रृंगार की अपेक्षा लोहेके चने समान जान पड़ती हैं अपितु श्रृंगार में सभी की रुचि अधिक प्रतीत होती है, कुछभीहो–

तुलसी हरि के नाम को, रीझ भजो या खीज। उलटो सीधो निपज सी पड़यो खेत को बीज ॥

यह आपके कर कमलों में काव्य कुञ्ज का पहिला संस्करण है, जिसके मुद्रण एवं लेख में कुछ त्रुटियां भी दृष्टिगोचर होसकती हैं, अतः कवि क्षमा प्रार्थना के पश्चात् विचार शील है कि आगामी प्रकाशनों में इसके लिये विशेष ध्यान रखा जावेगा। यह प्रथम वाटिकाहै, और इसके बाद, दूसरी, तीसरी, चौथी के क्रम से ६ प्रतियाँ प्रतिवर्ष मुद्रण होंगी जोकि अनिश्चित समयपर जैसे २ छपेंगी वैसे २ इसके प्रेमी सज्जनों की सेवामें प्रस्तुत की जासकेंगी स्थाई ग्राहकों से इसका वार्षिक मूल्य३)रु शुल्क के तौर पर लिया जायगा पोस्टव्यय का कोई प्रश्न नहीं है खेरीज विक्रय में टोंक से बाहर के लिये डाक खर्च ग्राहकों के जिम्मे रहेगा पुस्तक प्राप्ति के लिये १०आने के टिकट पहले भेजना आवश्यक है वी. पी. नही भेजी जायगी थोक विक्रेता डिस्कउंट की बात चीत मैनेजर भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक से करें बिना अग्रिम जमा हुए माल रवाना नहीं होगा। जो महाशय स्थाई ग्राहक बनना चाहें ३)रु जरिये मनीआर्डर आज ही भेज दें जिस तारीख में रुपया जमा होगा उसी तारीख से उनके वर्ष की गणना होगी।

सुधाकर काव्य कुञ्जमें कोई भी कवि अथवा शाईर या लेखक इत्यादि अपनी रचनायें गद्यो पद्य व विज्ञापन मुद्रण करा सकते हैं किन्तु विवादास्पद प्रबंध प्रकाशित नहीं किये जायेंगे एवं रचनाकार अपने २ लेखों के उत्तर दाई स्वयं होंगे, किसी भी परियाम पत्र के गद्योपद्य का छापना या न छापना विषय घटाना बढाना व्यवस्थापक के आधीन रहेगा, विज्ञापनों का मूल्य समय और कागज के आकारपर निर्भर है अमुद्रित पत्र टिकट भेजने परही लौटाये जा सकेंगे, उत्तर प्राप्त करने केलिये टिकट या जवाबी कार्ड भेजना आवश्यक है, आने वाली रचनायें अथवा लेख सुन्दर सरल शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिये और उनका सारा विषय धार्मिक ईश्वरवादी भक्ति प्रेम आध्यात्मिक एवं मनोरंजक होना जरूरी है गद्य में भगवद् वंदनायें प्रार्थनायें और एकांकी ड्रामे आदि ही प्रकाशित हो सकेंगे किस्से कहानी नहीं, आशा की जाती है कि सज्जनवृन्द उपरोक्त विषय पर विशेष ध्यान देकर काव्य कुञ्जको हर प्रकार से परिश्रम सहयोग देने की कृपा करेंगे यही नम्र निवेदन है।

नोटः—जिन कविताओं में "सुधाकर,, की छाप नहीं है वह संगृहीत समझी जावेंगी।

विनीत

जी. एल. वी. एस.

मैनेजर भारत प्रिंटिंग प्रेस

टौंक (राजस्थान)

❀ अनुक्रमणिका ❀

घायल प्रेमी पृष्ठ ६.

की गत घायल जाने—
री सखा कछु मेरी कही—
जाणे वावा दुनियाँ में पीर पराई।
. तोरी वंसी निराली सुनी।
वन वारो रसिया वरसाने वाली नार।
त नाहीं घंश्याम—
प्रेम बराबर योग ना प्रेम बराबर ध्यान—
तुम विन निशि दिन कल न परत मोहे—
मैं कहा करूँ राम जिया बनो घबरावे।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव १०.

नील कमल सा सुघर सुलोचन श्याम वदन है।
कृष्ण जनम सुन गणपति आये।
है अजब ढंग से संसार में आना उनका।
सखी देखण चालो आज या ब्रज में प्रकटे श्री—
मिल चली झुंड के झुंड श्री ब्रज की बाला।
घनी मन फूल रही ब्रज नारं।
नीके रहो दोऊ भैया जसोदा मैया लाल तिहारे।
कृष्ण जनम की वेर घटा घन छाय रही।

सखी सुमन ११.

री सखी मोहन श्याम अलसाने।
लीला रचो नव कुंजे—
वंसी बजाओ कृष्ण—
श्यामा तोरी अँखियाँ में कजरा सुहावेरी
आओ २ रे श्या…म कृष्ण शोभा धाम।
श्याम २ श्याम भँवरा मधुर २ गूँजे —
गिरधरजी के नैना हैं प्रेम भरे।
कृष्ण नैना नहीं रहतो वान है।
जमुना तीर में गई री मैया बावरी भई।

सखी श्याम लीला १२.

यशोजी म्हारा नेणाँ में नंदलाल।
लागा लागी जी साँवरिया थाँसूं प्रीत—
थाँरी ओल्यूँ घणी म्हाने आवेजी राज—
आओ मोहन घनश्याम—
जी म्हाने वृन्दावन लेचालो—
होजी म्हारा मनमोहन घंश्याम सजन—
होजी म्हारा साँवरिया गोपाल विहारी—
सखी मेरा साँवरिया गोपाल रा वंसी—

राधा कृष्ण मुरलीवाद पृष्ठ १३.

देखो मानो नंदलाल।
मोहन तोरी वंसरी कैसी वजी रे।
आजा २ ओ मेरे बाँसुरी वाले आजा।

रूठी राधे १४

राधे तुम बड़ भागनी—
ना रूठो मनाऊँ तुम्हें राधे रानी।
मोसे ना बोलो साँवरिया चलो हटो जाओना।
हवे जैश्यूँ हवे पण जैश्यूँ राज—
श्री राधे नागरी प्यारी तू वृन्दावन की रानी है।
पिया तुम प्रीत करी हम जानी रे।
डोले मन गोकुल आय।
सुनादे सुनादे सुनादे मधुरी—

विरहन की पुकार १५.

मैं तो थाँकी वाट जोऊँ छूँ गिरधारी।
हरि आओजी आओ दरस दिखाओ—
म्हांने पहल्याँई मेवाड़ा राणा क्यों ना वरजी।
ओ, मदन मोहन घंश्याम विहारी।
सखीरी कर प्रीतम संग प्रीत।
ओजी म्हारा साँवरिया गोपाल विहारी।
मेवाड़ा राणा गिरधर संग लागी।

फिल्मी तर्जें १६.

बिनती तिहारी करें हम सारी गिरधर धारी।
छोड़ गये ब्रज राज हमें फिर नैनन में—
ऊधोजी तुम जाओ उन्हीं को समझाओ—
वैरण वसी मनमोहन की बाजी जमना तीर रे।
ठाड़ी कुञ्जन में जोऊँ कृष्ण बाट,
मुरली वारे साँवरिया तोरी मुरली की तान।
नैननवा के बाण सखीरी मोरे लागे री।
सखी पनिया भरन नहीं जाना—
आजा-आजा कृष्णा प्यारे आजा—

गजल गुल्जार १७.

सो वार मिटे हम जिसके लिये—
तेरी याद में अरे बेवफा मैंने—
जुनूने शोक ऐसी भी कोई तक़सीर होजाये।
वह तो हम आगोश है जिस को निहाँ समझा—
जिंदगी की हसरतें आसोफुगाँ समझाथा मैं।
सदाकत की मजाजी दौर में तहक़ीर होजाये।
आह किस जोक़ से घंश्याम घटा आके जमी।

श्री

सुधाकर काव्य कुंज

अनुवाद महा भारत अध्याय १८२

[मार्कण्डेय समास्या पर्व]

अनुवादक गिरधर दास वोहरा

कवि "सुधाकर" टौंक

कलियुग रहस्य

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

दोहा

मार्कण्डेय से लगे कहने युधिष्ठिर एक समय।
हाल कलियुग अरु प्रलयका कर कृपा कहिये मुनय ॥
हँस के यों बोले मुनीश्वर सुन युधिष्ठिर की विनय।
ध्यान से राजन सुनो मति मान यह सुन्दर विषय ॥

द्वादश सहस्र दिव्य वर्षों का एक कल्प कहलाता है।
सतयुग त्रेता द्वापरयुग के पीछे कलियुग आता है ॥
चतुरानन की दीर्घ आयु का एक कल्प हो पाता है।
तभी सृष्टि का आदि अंत करके ब्रह्मा सोजाता है ॥

कलियुग में आचरण नष्ट सभी हो जाते।
ब्राह्मण क्षत्रिय अरु वैश्य भ्रष्ट से पाते ॥
जप तप व्रत पुण्य अरु दान नजर नहीं आते।
माया वादी सर्वज्ञ ब्रह्म को गाते ॥
म्हाराज ! भेद जिनका—नहीं पाते जी।
मर्यादा जग को छोड़ फिरें बनकर मद माते जी ॥

ब्राह्मण षटकर्म तज भिक्षुक के सम बनजायँगे।
धर्म मृग यज्ञादि और स्वाध्याय सब विसरायँगे ॥
शूद्र ऊंचे बैठ कर विप्रों को ज्ञान सिखायँगे।
नष्ट धर्माचरण चारों वर्ण के हो जायंगे ॥

हिन्सा चोरी और दगा बाजी का फिर जम घट होगा।
लेन देन व्यापार हाट में छल पाखण्ड कपट होगा ॥
लुच्चे गुण्डे बदमाशों का दल बल वीर सुभट होगा।
सदाचार व्यवहार न्याय नीती का हठ नल छट होगा ॥

यों उलट जायगी दशा विश्व की सारी।
पति धर्म छोड़ फेंकेंगी शरम को नारी ॥
बन जायँगे सब मदिरा मांस अहारी।
अति घोर पाप होगा पृथ्वी पर भारी ॥
म्हाराज ! पुत्र होगा पितु घाती जी।
इस कठिन काल में नहीं किसीका कोई संगाती जी ॥

अल्प आयुष वीर्य बल हो मति पराक्रम खोयगा।
सुख अधर्मी को मिलेगा दुःख धर्मी रोयगा ॥
मोह निद्रा में ग्रसित संसार भ्रम मय जोयगा।
राज्य असुरों का चहुं दिशि मेदिनी पर होयगा ॥

पांच वर्ष की कन्याएँ भी गर्भवती होजायेंगी।
मात पिता को त्याग स्वयं इच्छा से व्याह रचायेंगी ॥
वीर्य वान पतियों को भी तजकर व्यभिचार कमायेंगी।
उत्तम कुल की सतियाँ भी शूद्रों सँग मौज उड़ायेंगी ॥

मुख से भी स्त्रियां काम भगों का देंगी।
पशुओं की तरह पर पुरुषों सँग विचरेंगी ॥
कर गर्भ पात स्वामियों का घात करेंगी।
शुचि सास श्वसुर को ठोकर मार लड़ेंगी ॥
महाराज ! वर्ण शङ्कर सृष्टी होगी।
सब धर्म कर्म हों नष्ट पाप ही की वृष्टी होगी ॥

उल्लुओं के घर बनेंगे कोकिलों के स्थान पर।
हंस वारिधि तज बसेंगे शुष्क सर सुनसानपर ॥
वृक्ष ना फूलें फलेंगे ठीक अपनी आन पर।
बिजलियां कड़केंगी सूखी खेतियों के धान पर ॥

गऊ बँधेंगी नीच शूद्र घर ब्राह्मण बकरी पालेगा।
लोभातुर हो भाई ही भाई का वध कर डालेगा ॥
गुरु पत्नी संग सेज रमण को चेला आंख लगालेगा।
इस प्रकार अंधी दुनियां में हाथ ! हाथ को खालेगा ॥

तब अनावृष्टि से अन्न न पैदा होगा।
हो आयु हीन भूखों से मरेंगे—लोगा ॥
बहु भांति भयङ्कर विषम उठेंगे रोगा।
आश्चर्य जनक अति विचित्र होंगे ढोंगा ॥

ज ! बहुत दुनियां घबरायेगी ।
ति विकट समस्या छिन्न भिन्न जगकी हो जायेगी ॥
गन्ध दा सब वस्तुओं में गन्ध ना रह पोयगी ।
मिष्ट आदिक रसों में स्वादिष्टता घट जायगी ॥
नास्तिकता वर्ण चारों में प्रकट दिखलायगी ।
सर्व भूमण्डल में पूरण शूद्र ता छाजायगी ॥

स्वार्थ परायण हाकिम अपना जोर शोर दिखलायेंगे ।
चोर डाकुओं से मिल ! धन जनता का हर लेजायेंगे ॥
क्रम क्रम से कर चड़ा चढ़ाकर शासन कोप बढ़ायेंगे ।
बहिन बेटियों को बलात से अपनी सेज चढ़ायेंगे ॥

आभीर जातिके मलिन्न होंगे राजा ।
खुद को विद्वान गिनेंगे उल्लु ताजा ॥
कामी कुत्तों की तरह तजेंगे लाजा ।
निर्दई घूंस लेले के करेंगे काजा ॥

महाराज ! गपोलें चुन चुन हाँकेंगे ।
रोने चिल्ला ने पर भी दया दृष्टि से न झांकेंगे ॥

धर्म वत होंगे दरिद्री अरु अधर्मी मालदार ।
सज्जनों को डाट देंगे दुष्टजन आंखें निकार ॥
ढोंग फैलायेंगे झूटे वेष मुनियों के से धार ।
लोक और पर लोक दोनों का नहीं होगा विचार ॥

सुन्दरता के हेतु शीस पर टेढ़ बाल भुकायेंगे ।
डींग मार कर सन्यासी प्रति जीव को ब्रह्म बतायेंगे ॥
जनता होय अचम्भे में ऐसी गप विप्र उड़ायेंगे ।
भक्ति भाव सत दया क्षमा और शील स्नेह मिटजायेंगे ॥

हाथों पर नख मस्तक पर जटा बढ़ाकर ।
मिथ्या तप दिखलायेंगे भस्म रमा कर ॥
लम्पट योगी ठग बनेंगे मूँढ मुँडाकर ।
जो चाकर हैं सब बन जायेंगे ठाकर ॥

महाराज न कहनी में तिल घटैगा ।
रोदेगी पृथ्वी ! और गगन सब चिल्ला उट्ठेगा ॥

शूद्र होवेंगे पुरोहित और पुरोहित शूद्र सम ।
ज्ञान रह जायेगा केवल ध्यान में ब्रह्मास्मिहम ॥
मच्छलियों का मान्स पंडित खांयगे गरमागरम ।
वस्त्र चिक्कने पहिन कर मदिरा पियेंगे बेशरम ॥

काम चेष्टा प्रबल रूप से पुरुष स्त्रियों में होगी ।
शक्ति हीन निर्बल अशान्त होगी सन्तान महा रोगी ॥
छोटे छोटे शरीर वाले लोग होंयगे पशु भोगी ।
सच्चा ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य भूतल पे मिलेगा ना योगी ॥

भेड़ों से भी कम दूध देंयगी गाएँ ।
देवियां दिव्य बन जायंगी कुलटाएँ ॥
जन गणो और क्या अधिक हाल समझाए ।
हैं यह ध्रुव विधि के अङ्क न मिटैं मिटाएँ ॥

महाराज ! धर्म अधरम में क्षय होगा ।
तब जानो युग का अंत और पृथ्वी पे प्रलय होगा

यदपि हैं दुर्गुण बहुत से कठिन महा कलिकालमें
किन्तु हैं गुण भी घने इस विषम माया जालमें ।
लाभ एक सबसे बड़ा कहतेहैं कलि विकरालमें
पुण्य कल्पित हो नहीं पातक जमाने हालमें ।

सतयुगमें योगी विज्ञानी ज्ञान ध्यान से तिरतेहैं
त्रेता में जप तप व्रत सयंम यज्ञ अनेकों करतेहैं ॥
द्वापर में हरिपद पूजाकर जन गण पार उतरतेहैं
पर कलियुग में केवल राम नाम ही सब दुख हरतेहैं ।

कलियुग हैं नहीं यह करयुग कहलाताहै ।
जैसा करता फल तैसा मिल जाताहै ॥
कर विनय 'सुधाकर' सबको समझाताहै ।
धर शीस धरा पर दास क्षमा चाहताहै ॥

म्हा राज ध्यान वचनों पर लाओजी ।
नित सत संगत में बैठ प्रेम से हरि गुण गाओजी

इस प्रकार भीषण नाश होजाने पर जगत और धर्म की स्थापना के लिये संभल ग्राम में ब्राह्मण के महा शक्ति शाली और बड़ा बुद्धिमान विष्णुयश नामक कल्की अवतार होगा। वह धर्मानुसार विश्व पर [illegible] प्राप्त कर के चक्र वर्ती राजा होगा, वहीं इस व्याकुल संसार को आनंदित करेगा. और ब्रह्माजी द्वारा रचित [illegible] मर्यादा को स्थापित कर के सम्पूर्ण पृथ्वी का सामराज्य ब्राह्मणों को देकर स्वयं वन गमन कर जावेगा।

※ प्रकाशक ※
भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राजस्थान)

※ सुधाकर काव्य कुञ्ज ※

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि "सु...
टोंक (राजस्थान)

श्री गणेश गान

[तरज] ओजी श्री कल्याण डिगी में जन ... जीन—

आवो श्री गजानँद गणपति देवा।
मंगल मूरती प्रथम पुजेवा॥ आवो०
विघन विनाशन रिधि सिधि दाता।
शङ्कर सुवन हो बुद्धि विधाता।
सुमति सदन दुर्व्यसन नशेवा॥ आवो०
आनँदघन प्रभु प्रथम मनाऊं। पत्र पुष्प नैवेद्य चढाऊं।
चरणन शरण "सुधाकर" लेवा॥ आवो०

[तरज] नखराली रा ढोला आवो रे म्हांका राज।

गिरजा शिव नंदन आवो रे आवो म्हांका राज।
श्री गणपति शिव शारद माता सुमर करूं गुण गान।
श्रीगुरु श्रीगोविन्द चरणमें मंगलदिन धरू ध्यान॥ गि.
करजोड़आर कहूं थांकी वीनती सुनहु गरीब नवाज।
अपनो जनकर राखियो स्वामी बांह गहेकी लाज॥ गि.
काहू के बल नाथ सजन को काहु के बल आधार।
दीन भरोसे नाथ तुम्हारे सोवत पांव पसार॥ गिरजा०
दास 'सुधाकर' निशि दिन गावे सुजस तुम्हारो नाथ।
करकरुणा भवसिन्धुमें तारियो बूडतको गहि हाथ॥ गि

[तरज] तुमहीं करोगे निस्तारा—

प्रथमकरूं थांकीसेवा गजानँद विघनविनाशन देवा॥ प्र
स्नान करा चौकी बैठाऊं।
रतन जड़ित सब वस्त्र सँवारूं।
भोग लगाऊं धर मेवा॥ गजा०
धूप दीप बहु विधि आरति कर।
मंगल मोदक धरत "सुधाकर"।
नाथ कुमति हर लेवा॥ गजा०

[तरज] प्रभु मोरी राखियो तुम लाज।
गण पति तुम ही सुमरूं आज।
शिव सुवन गिरजा नंदन गज वदन श्री गणराज॥ ग.

ऋद्धि सिद्धि प्रदा विनायक, पूज्य प्रथम समाज,
एकरदन सुख सदन पूरन करो 'सुधाकर' काज॥

[तरज] प्रभुजी म्हारी नाव उबारो बूडत सिंधु मँझार।

गजानँद प्रथम मनाऊं ऋध सिध के दातार।
गौरीनंदन शिवसुवन विनायक। बुद्धिविमल करतार॥
पूज्यप्रथम त्रिभुवनके स्वामी। दयानिधि करुणागार॥
दास "सुधाकर" शरण तुम्हारी।
कीजियो भव दधि पार॥ गजानंद०

[तरज] धुन, नाटक—

प्यारे प्या…रे। गौवरीसुवन गजवदन हमारे॥ प्या०
ऋधि सिध के दाता, माता गिरजा के ला…ला।
सुमरत सुख पाता, आता झूमत मतवा…ला।
सुधबुध के देवनहारे। विघननको निशिदिन टारे॥ प्या.
ध्यान लगावें शीशझुकावें मनफलपावें हम भगवन्।
यशगुण गावें प्रेमबढावें विनय सुनावें हम भगवन्।
करके अर्पन तनमनधन। नमें 'सुधाकर' हम सबजन।
सा रे म ग-प ध नी सा, सा नि ध प म ग रे सा।
प्यारे प्यारे गौवरी०

[तरज] हे प्रभु करुणा निधान, दया मय—

श्री गणपती गण राज विनायक—
ऋध सिध सुख सम्पति के दाता।
शंकर सुवन भवानी के नंदन—
विघन हरन त्रिभुवन जन त्राता॥ श्री०
एक रदन गज बदन सदन सुख—
शुभ्र चरणन विच शीश नवाता।
दास "सुधाकर" प्रभु गुण आगर—
नित करुणा कर तुम ही मनाता॥ श्री०

[तर्ज] भज मन राधे गोविंद हरि।

गणपति विघन हरा। गणपति विघनहरा ॥ भ.
ऋद्धि सम्पति सुख दाता। बुद्धि विमल करा ॥ भ.
दुर्मति अघ नाशक। जीवन सफल करा ॥ भ.
"सुधाकर,, प्रभु करुणा कर। शरण आन परा ॥ भ.
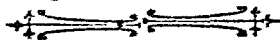
[तर्ज] झाँकी तिहारी, हमने निहारी।

आओ गजानँद गौरी के नंदन! शङ्कर के लाल—
परमलाल' दीन दयाल स्वामी मंगल काज करो ॥ आ.
ऋध सिध सुख सम्पति दाता।
त्रिभुवन के तुम पितु माता। शरणागत शीश नवाता।
विनती करूं तोर, कर दोउ जोर, सुखद 'बहोर' स्वामी-
सुमरुं "सुधाकर,, को ॥ आओ०
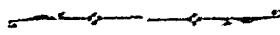
[तर्ज] जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

जय गणेश, जय दिनेश, जीवन सुख दाता। जय०
मङ्गल, मुद सदन शेष। नाशक घन विघन क्लेश।
देश देश सुत महेश, गौरी, विख्याता ॥ जय०
सत चित आनँद सुरेश। बुद्धि वाणि प्रद वरेश।
हरत त्रिविध ताप द्वेष, "सुधाकर,, विधाता ॥ जय०

[तर्ज] प्रभु मोरी तुमही राखोगे लाज।

गणपति ऋध्दि सिध के दातार ॥ गणपति०
मंगल मूरती सुखद विनायक। वंदौं बारम्बार ॥ गण०
एकरदन गजबदन विनायक। बुद्धि विमल भंडार ॥ गण-
पारवतीशिव सुवन 'सुधाकर,। वाणी विशद सुधार ॥ ग.
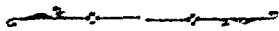
[तर्ज] गजानँद आनँद करो जी हमेश—

मनाऊं थाने श्रीगण पति गण राज—
विनायक गिरजा सुवन गणेश। टेर
स्नान करा चौकी पधराऊं, पहराऊं रतना रा भेष।
धूप दीप नैवेद लगाऊं, नित गुण गाऊं हमेस ॥ विना.
रिधसिध सुखसम्पति गुणसागर, सुमरुं सुखद सुरेश
विघन विनाशन विशद 'सुधाकर, आनँद करनमहेश ॥ वि.
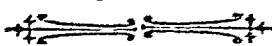
[तरज] जै, जै, करुणा निधान।

जै, जै, गणपति गणेश। जै, जै०
नाशक अघ विघन क्लेश। वर दायक सुत महेश ॥ जै०
करिवर तन एक रदन। मूषक वाहन सु बदन।
आनँद घन सौख्य सदन, सुखद 'सुधाकर, सुरेश ॥ जै०
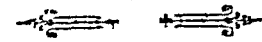
[तरज] पनिहारी जी हेलो।

प्रथम मनाऊं आपको गिरजा के लाल, गिरजा के लाल—
हरो सकल जंजाल! गणपति जी। टेर
एक रदन गज बदन गले कमलन की माल, कमलन—
सुन्दर रूप विशाल ॥ गणपति०
विघन विनाशक, सुखकरन, संतन प्रतिपाल, संतन—
कुमति निवारन वाल ॥ गणपति०
दास "रसिक,, चरणनपरे देओ भक्ति कृपाल, देओ—
सुजनहिं करो निहाल ॥ गणपति०

[तरज] गणपति तुम को ही प्रथम मनाऊं।

हित से श्री गणपति को ध्याऊं। टेर
ऋद्धिसिद्धि ले संग पधारो। निरख मगन हुइजाऊं ॥ हि.
स्नान करो चंदन चौकी पे, गङ्गाजल भर लाऊं।
भाल तिलक केसरको करिहूं, भूषणवसन सजाऊं ॥ हि.
निशि दिन तुमरो ध्यान धरुं उर, हर्ष २ गुण गाऊं।
आनँदकरन सकल दुखभंजन, तुमको प्रथममनाऊं ॥ हि.
मोती पाक मगद के मोदक कर २ भोग लगाऊं।
'हंसराज, पे दया करो नित चरणन शीश नवाऊं ॥ हि०

[तरज] दयानिधि तोरी गति गहन अपार।

गजानँद विघन विनाशन हार ॥ गजानँद।
एक रदन गज बदन विनायक रिधसिध के दातार।
सुख सम्पति मुद मंगल दायक, बुद्धि विमल सुधार।
गजानँद विघनविनाशन०
स्नान कराऊं वस्त्र सजाऊं गल पहिराऊं हार।
धूप दीप कर भोग लगाऊं लड्डुवन बाँह पसार।
गजानँद विघन विनाशन०
दीज्यो नाथ कृपाकर वाणी विद्या के भण्डार।
कीज्यो करुणा शिघ्र, "सुधाकर,, करुणा के आगार।
गजानँद विघन विनाशन०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

श्री राम जन्मोत्सव

❀ रचयिता ❀
श्री गिरधर दास वोहरा कवि "सुधा"
टोंक (राजस्थान)
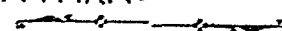
शुक्लाम्बरं धरं विष्णुं, शशि वरणं चतुर्भुजम् । प्रसन्नं वदनं ध्यायेत्, सर्व विघ्नोप शान्तये ॥

[तरज] हे प्रभु करुणा निधान विनय मोरी सुन लीज्यो ।

भारत में भगवान आन बन आजाओ ।
दुष्टन का अभिमान महान घटा जाओ ॥ भा०
हैं विपदा में भारत वासी ।
टेर सुनो वैकुण्ठ निवासी ।
धर करुणा पर ध्यान विधान बनाजाओ ॥ भा०
असुरन दलने घेर लिया है ।
क्यों तुमने मुख फेर लिया है ।
ले कर में धनु बान निशान मिटा जाओ ॥ भा०
भूलगये हैं याद तुम्हारी ।
कीजिये रक्षा नाथ हमारी ।
हैं हम पशुन समान कि ज्ञान सिखाजाओ ॥ भा०
दास "सुधाकर,, सेवक स्वामी ।
चरण कमल चित है अनुगामी ।
अब नैनन बिच आन सुजान समाजाओ ॥ भा०

[तरज] रिम झिम बरसे बादरवा—फिलिम
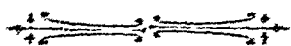
भारत में भय तारनियां दशरथ नृप के महलन में -
रघु नंदन आओ आओ सियावर आओ ॥ भा०
भूतल पर गौलोक निवासी आजाओ आजाओ ।
भारत वसुन्धरा की पीर मिटाजाओ मिटाजाओ ॥
चक्र सुदर्शन धारनियां—
धर कर धनु बान करन में ॥ रघुनंदन०
आर्य भूमि को फिर असुरों ने घेरा है, घेरा है ।
सूर्य वंश सूरज बिन जगत अँधेरा है, अँधेरा है ।
जीवन जनम सुधारनियां—
सरयू तट सुमनन वनमें ॥ रघुनंदन०
निर्मल अखियां बाट निहारी जोती हैं, जोती हैं ।
चरण कमल स्वामी के निशि दिन धोती हैं, धोती है
फिरसे रुम झुम पांजनियां —
बाजें उस राज भवन में ॥ रघुनंदन०
हे प्रभु प्राणाधार विनय टुक मेरी है, मेरी है ।
दिलमें हरदम याद "सुधाकर,, तेरी है, तेरी है ।
दुष्ट दलन दुख हारनियां –
भक्तन के भाव गहन में ॥ रघुनंदन०
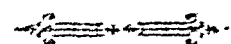
[तरज] देखो नट खट बिहारी रोके पनघट की नारि

आज जन्मे हैं राम सारी शोभा के धाम—
चलो लेने बधाई नृपति दरबार ।
बार बार बार ! बार बार बार ! बार बार बार ॥ आ.
आनंद घर घर नगर हाट छाये ।
महिमां न वर्णन में आवे हमार—
चली बन ठन के नार राजा दशरथ के द्वार,
करें लाला को गोदी में ले ले के प्यार,
प्यार प्यार प्यार रे ॥ आ०
याचक भी आये याचनियां भी आईं ।
आये तहां पर गुणी जन अपार—
करें अरजी सरकार देओ धन के भण्डार,
हाथी घोड़े हजार मांगे मुक्तन की मार
मार मार मार ! मार मार मार ! मार मार मार ॥ आ
ढाढी भी नाचे ढाढनियां भी नाचे ।
नाचे नगर नार बैयां पसार—
करे प्यारे को प्यार बैयां गरदन में डार,
ऐसी छाई "सुधाकर,, तहां पर बहार,
हार हार हार ! हार हार हार ! हार हार हार ॥ आज०

[तरज] जोबनवा ने कैसे कैसे जुलमवा ढाये।

लूँगी २ राजाजी से नई नई सारी।
२, राम लला पे, तन मन धन बलिहारी॥ मैं तो०
ऐसी शोभाछाई कछुबरनी न जाई हर्षितमन सब नरनारी।
२ फिरत कौसल्या, नृप मन आनँद—भारी॥ मैं०
गावत बधाई पुर अवध के माहीं सखी सुन्दर वार निहारी।
ऋषि मुनिजन बन मंगल बांचे, नाचें देदे—तारी॥ मैं०
गगन विमान छाये सुरन के आन कररहे पुष्पन वर्षा री।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन झूलें पलना चारी॥ मैं तो०
होऊँगी निहाल लूँगी मोतिन कीमाल नामानूं राज निहारी।
सबही आश पुराय 'सुधाकर, दीज्यो ढाडनियां री॥ मैं०
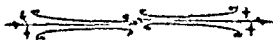
[तरज] साजन मोरी बारी उमरिया जी।

बधैया राजा बाज रहैया जी। ओ, बधैया। टेर
राजा दशरथ घर पुत्र प्रकट भये। आनँद मंगल छैया॥ ब०
मोतियन चौक पुराओ री सजनी। साज सुहाग सजैया॥ ब०
कंचन थार कनक जल झारी। आरती सुभग बनैया॥ ब०
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन। चिरंजी रहो चारों भैया॥ ब०
चन्द्र बदन मन हरन 'सुधाकर,। नैनन बीच समैया॥ ब०
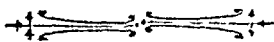
[तरज] सरोता कहां भूल आये–

सखीरी चलो आओ आओ, गाओरी बधैयां॥ सखी०
राम जनम दशरथ घर लीनो आनँद पुर में छैया।
गौ द्विज सुर संतन हित कारन प्रकटे चारों भैया॥ स०
नूतन साज सजो सब सजनी कर मङ्गलो लगैया।
हिल मिल भूप भवन सब चालो मोतियन चौक पुरैया॥
वर्णत महिमा लेन बधाई डाडन डाडी गैया।
थै थै तक तक ताला नाचे छिम छिम ताता–थैया॥ स०
मागद सूत वंदी जन सारे सुख माँगे वर पैया।
जो आनँद कबहूँ नहीं आयो सो अब पायो दैया॥ स०
ऋषिमुनि जन सब करत आरती दर्शन से सुख पैया
तन मन धन सब वार 'सुधाकर, चरणन शीस नवैया।
सखीरी चलो०

[तरज] आई सावन की बहार, बदरवा बरसे मूसलधार।
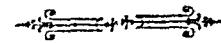
मच रही जय जय कार। बधाई बाजे नृपति के द्वार॥
आज अवध में आनँद छाये।
महिपिन के मन मुद न समाये
जाये भुवन सुत चार॥ बधाई०
गुरु वशिष्ठ ढिंग दशरथ ठाढे।
धन धन कहत प्रेम उर बाढे॥
पूजत चरण पखार॥ बधाई०
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन।
नाम धरे मुनि कर मन चिंतन।
त्रिभुवन रूप निहार॥ बधाई०
महिमा परम पुनीत "सुधाकर,,।
गुणिजन गावत नित वसुधा पर॥
तन मन सुरति बिसार॥ बधाई०
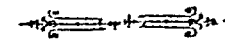
[त.] होजी म्हारा राधा गोपीनाथ री बंसी बाजी तो सई।

राजा दशरथ के दरबार बधाई बाजी तो सई॥ टेर
श्रवण सुनत ही जन्म रामको त्रिभुवन में खुशी भई।
कौशलपुर की जनता सारी भूपति द्वार गई॥ राजा०
प्रेम मगन होय नृप निज गनसें ऋद्धि लुटायदई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ पातुर नाचरही॥ रा०
पवन विमानन पर नभ छाये देव वधुन सँग लई।
होरहे जैजैकार भुवन में, पुष्पन वृष्टि छई॥ राजा०
दान हेम गज अश्व भूमि रथ अगणित वस्तु दई।
'भक्ति, 'सुधाकर, आस लगाकर तुलसीदास ने पई॥
राजा दशरथ के०

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

[तर्ज] लबों पे तबस्सुम निगाहों में बिजली वह देखो क़यामत चली आरही है।
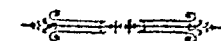
छुपा तुम कहीं भी दया धाम जाकर, मगर देश में तुमको आना पड़ेगा।
इसी जन्म भूमि में पुनः जन्म पाकर, सदा के लिये फिर न जाना पड़ेगा॥
प्रबल होचुका है असुर दल मुरारी भला कौन है जो खबर ले हमारी।
तुम्हीं को बिहारी ओ त्रिविध ताप हारी वही चक्र फिरसे घुमाना पड़ेगा॥
यह ऋषियों की भूमि है क्यों दीन आरत कि छाये हैं लंका नीति विशारद।
सनातन धरम और तुम्हारा यह भारत बचानो दयामय बचाना पड़ेगा॥
अनेकों ही रावन प्रकट होगये हैं सियारों सती संस्कृति के हरन को।
महा मोह में वीर जन सोगये हैं तुम्हीं को शरासन उठाना पड़ेगा॥
हिरण्यादि सृष्टि बनी जारही है विधानो की काली घटा छारही है।
दशा धर्म की खाक बनजारही है तुम्हें रूप नरसिंह बनाना पड़ेगा॥
विनय नम्र करता है यों चर्ण चाकर कब आओगे दीनो के द्वारे „सुधाकर" ।
जो आये गदाधर कभी तुम धरापर तो अवतार कल्की कहाना पड़ेगा॥

[तर्ज] प्रभु तेरे दरशन पाने से पहिले मेरा प्राण तनसे निकलने न पाये।

हो भगवान भक्तों के वश में सदा तुम तो भक्ति से तुमको रिझाना पड़ेगा।
मैं हूं भक्त और मेरे भगवान हो तुम यह सम्बंध पूरा निभाना पड़ेगा॥ हो भगवन०
सुदामा के तन्दुल चबाये थे तुमने मधुर बेर भिलनी के खाये थे तुमने।
इसी भांति तो प्रेम भक्ति के नाते मेरा भांति भोजन भी पाना पड़ेगा॥ हो भगवान
गये तुम घना भक्त की आन आने गये थे विदुर घर कभी शाक खाने।
मेरे द्वार भी नाथ कोई बहाने करके कृपा तुमको आना पड़ेगा॥ हो भगवान०
अहल्या उधारी नारी पाण्डुकी नारी ओ बांके बिहारी अब सुधलो हमारी।
जटायु की भूरी जटाओं से झारी वही प्यार जन पर लुटाना पड़ेगा॥ हो भगवान
अनेकों सदा नीच से नीच तारे अनेकों अधम से अधम भी उबारे।
तो मेरे अपराधोंपे भी तुम को प्यारे क्षमा भाव पूरन दिखाना पड़ेगा॥ हो भगवन०
कभी देवताओं को दियाथा अमर धन कियाथा उन्हीं के लिये सिन्धु मन्थन।
हमें भी दरश से चरन माधुरी धन "सुधाकर„ सुधासम पिलाना पड़ेगा॥ हो०

[तरज] खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुवे हैं।

समझ में आया है जो कि मेरे उसी का अनुभव सुनारहा हूं।
दुई का परदा उठाके दिलसे खुदी का नक्शा मिटा रहा हूं॥
जगत है ईश्वर का रूप सारा जगत से ईश्वर नहीं है न्यारा।
असार जग की प्रपंच धारा में सार ईश्वरही पा रहा हूं॥
पता नहीं है किसी का कोई कि कौन किस रूप में छुपा है।
मैं जान ईश्वरकी ज्योति सबमें सभी को मस्तक झुकारहा हूं॥
हैं विश्व में जो कि देह धारी अछूत वैश्यादि वर्ण चारी।
समझके ईश्वर की सृष्टि सारी गले सभी को लगारहा हूं॥
विधान कुछ कर्मका अलगहै जो करता सबको पृथक पृथक है।
मगर मेरे दिल में एकहै सब मैं सबके दिल में समारहा हूं॥
प्रकाश देता है ज्यों दिवाकर जगत में सबको समानता से।
उसीतरह से मैं बन "सुधाकर,, सुधा जगत को पिला रहा हूं॥

[तरज] कहरहा है आसमां यह सब समां कुछ भी नहीं।

मूर्ख हूं मैं मूर्खता मेरी पे मत कुछ ध्यान दो।
करके करुणा की नजर अब शान्ति भगवान दो॥
ओ कृपामय दीन हूं मैं, आप दीना नाथ हो।
दीन दुखियों को दयामय तुम दया का दान दो॥
हांकतेथे रथ कभी भारत में अर्जुन का तुम्हीं।
मेरेजीवन का भी रथ हांको मुझे सम्मान दो॥
उम्र गुजरी आपको जानां नहीं अज्ञान से।
रूप अपना और तुम्हारा जानलूं वह ज्ञान दो॥
है निवेदन नम्र चर्णों में "सुधाकर,, बस यही।
देह को दो मुक्ति दाता, जीव को कल्यान दो॥

[तरज] ए दर्दे दिल बतादे कबतक तू कम न होगा।

मैं मनको रंग रहाहूं तनको नहीं रगूंगा।
जल में कमल है जैसे इस विश्व में रहूंगा॥
तज मान मोह ममता हिंसा असत्य चोरी।
पाखण्ड दंभ तृष्णा इन से सदा बचूंगा॥
देही समझ चुकाहै, है देह चार अपनी।
यह लाख होगी मेरी, पर इसका मैं नहूंगा॥
ब्रह्मांड की गुफा में अज्ञानता के वश हो।
सोती रहेगी दुनियां मैं रात दिन जगूंगा॥

पाऊंगा जब "सुधाकर,, कर्मों का नाश करके।
दृष्टा रहूंगा जगका ना दृश्य मैं बनूंगा॥
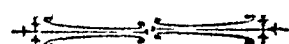
[त.] जुदा गुल से रहे बुल बुल भला फिर कैसे राहत हो।

यह कहना ना मुनासिब है तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं।
सुनो मेरे रिझाने का स्वयं रस्ता बताऊं मैं॥
रिझाया था मुझे भिलनी के झूंटे चार बेरोंने।
न झूंटे खट्टे मीठे पर कभी कुछ ध्यान लाऊं मैं॥
रिझाना जो मुझे चाहे विदुर से पूछले रस्ता।
सुदामा की झपट कर पोटली चांवल चबाऊं मैं॥
न रीझूं गान गप्पोंसे न रीझूं तान टप्पों से।
बहादो प्रेम के आंसू चला बस आप आऊं मैं॥
न रीझूं फूल से फल से न रीझूं राग के जलसे।
हृदय में भेद है जबतक कहो क्योंकर समाऊं मैं॥
न पत्थर सा मुझे समझो नरम हूं मोम से बढकर।
गरम आहें जो छोड़ो तो पिघल बस जाऊं मैं॥
न मन में चाह है पूरी न आंखों में हैं प्रेमाश्रु।
बताओ तो "सुधाकर,, किसतरह फिर तुमको पाऊं मैं॥

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ रचयिता ❀
श्री गिरधर दास वोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

नम्र विनय

[तरज] सैयो सावण को आयो आवसी।
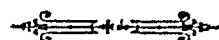
थांकी सुरता में साजन म्हारा नैण झराझर बरसे—
म्हांने चरणां रा दरशण स्वामी कदतो मिले।
थांकी ओल्यूं डी कर २ पल पल छिन २ जिवडो तरसे-
म्हारा हिवडा रा अंतर्यामी कदतो मिले। थांकी०
थांसो सुख दाता प्रभु जी पायो ना जग में कोई।
ऊमर अँवाला सारी दुखडया में खिरया खोई।
माया में फंस कर काया अब करमां ने रोई प्रभु जी-
सेवक ने सब सुखधामी कदतो मिले॥ थांकी०
चिंता में चित छे म्हारो लागे छे सब जग खारो।
रोरो कर नित दुखियारो, शरणीं म्हाले छे थांरो।
चंचल छे चपला सूं भी यो मन ओगण गारो प्रभु जी-
ईं की गत ने विश्रामी कदतो मिले। थांकी०
पापां री पोटां माथे धरकर, आयो छूं थांपे।
ईं कां बोझां सूं सारी धरती भी हूंपे कांपे।
थां बिन पण दीनां री करुणा काकु रा सुन्द सांपे प्रभुजी-
ईं दुख से पूरण कामी कदतो मिले॥ थांकी०
अब तो केसरिया म्हांने करणी री माफी दीज्यो।
संकट में शरणागत री सांवरिया थे सुध लीज्यो।
निर्धन रो बेडो भव से पार 'सुधाकर, कीज्यो प्रभुजी-
जीवन रा सुर पुर गामी कदतो मिले। थांकी०

[त.] मत जाओ पिया परदेस हेवड़ा री मारी मर जाऊंली।

श्याम सुन्दर जी रे देस पिया नहीं मानूं मैं तो जाऊंली।
कोमल तन थारो सेप दरशण कर सुख पाऊंली॥ श्याम.
हरि का चरणा में मैं तो तन मन धन बिसराऊंली।
ध्यान लगाऊंली हमेश निशिदिन प्रभुगुण गाऊंली, श्या.
बांकीसी झांकी बाँकी पलकाँरा पलना में झुलाऊंली।
झूलेला प्यारा मथुरेश हिवडा में फूली ना समाऊंली, श्या.
पीत बसन घनश्याम बदन पहिराऊंली।
मोर मुकुट पर पेश रतना री किलंगी झुकाऊंली॥ श्याम.
कीट कुण्डल बांका नाका में मोती फल
कूंवर थारा कारा केश कजरा ज्यों नैणामें बसाऊंली
मोहन प्यारा जी ने मांखन मिश्री खवाऊंली।
गोद खिलाऊंली सुरेश कुंजन में नाचूं ली नचाऊंली, श्या.
जद बांकी मीठी २ मुरली री धुन सुन पाऊंली
प्रेम बढाऊंली विशेष बालूं सांची लगन लगाऊंली, श्या
रूठ जावेला म्हारा कान्हा तो शिघर मनाऊंली।
आनँदघन सर्वेश "गिरधरजी,, ने समझाऊंली॥ श्याम.
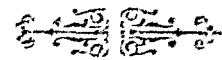
[तरज] नखराली लावन लगार मने छिटकाय सती—

सखी त्याग जगत सूं मोह ममत,
मैं तो प्रभुजी रा जस गुण गाऊंली।
तज विषियन री अनुराग,
सजन सुमरन सूं ध्यान लगाऊँ ली॥ सखी०
दरशण करवा नित उठ मन्दिर जाऊँली।
प्रभुजी रा चरण कमल में सीस झुकाऊँली।
म्हारो तन मन धन उनका चरणन में,
अर्पण सब कर आऊंली॥ सखी०
दूर कुमति कर सुमती ने अपणाऊंली।
पाल दया कोई जीवने नहीं सताऊंली।
निज आतम ने पहिचाण परम पद,
जोग जुगत सूं पाऊंली॥ सखी०
प्रभुजी री छवि नित नैणा मांय झुलाऊंगी।
हित चित सूं कर सेवा टहल बजाऊंली।
सब माया रा परपंच असत,
म्हारा मन सूं दूर हटाऊंली॥ सखी०
सत मारग में अपणा पाऊं जमाऊंली।
काम क्रोध ने छोड़ सभी गम खाऊंली।
धर निशि दिन आरत ध्यान "सुधाकर,,
नैनन जल बरसाऊंली॥ सखी०
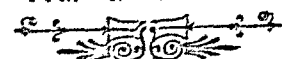
] भजल्यो सतवन्ती श्री भगवान ए।

म्हारा प्रभुजी शरणों में आयो चरणां दास जी-
राखो अपणे पास जी ॥ अजी०
थांसूं ध्यान लगास्यूं जस गुण गास्यूं प्रभुजी।
जगमग ज्योति जगास्यूं दरसण पास्यूं प्रभुजी।
अजी म्हारा प्रभु जी—
दुष्कर्मां रो फल नास जी॥ सेवक ने०
तन धन थांके भेट चढास्यूं प्रेम बढास्यूं प्रभु जी।
रसना ने थांको ही पाठ पढास्यूं नाम रटास्यूं प्रभु जी।
अजी ओ म्हारा प्रभु जी—
चाकर रा चित री पूरो आस जी॥ सेवक ने०
नैणां में थांको ही रूप बसास्यूं रंग जमास्यूं प्रभु जी।
पलकां ने थांकी गेल बिछास्यूं सीस नवास्यूं प्रभु जी।
अजी ओ म्हारा प्रभु जी—
मेरो चातक ज्यों जन रो प्यास जी॥ सेवक ने०
विन्ती पर ध्य न 'सुधाकर, ल्याज्यो मत बिसराज्यो प्रभुजी।
निर्बुध री करणी पर मत जाज्यो दया दिखाज्यो प्रभु जी।
अजी ओ म्हारा प्रभु जी—
भक्ति रो मन में करो प्रकाश जी॥ सेवक ने०
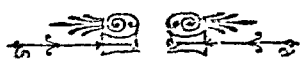
[तरज] सुरमां की डाबी तो म्हारे हाथ देदीज्यो।

प्रभुजी थांका चरणा में अबतो सीस झुकाऊं छूं।
दूरी माया ममता ने कर शरणा में आऊं छूं॥ प्रभु०
लागी २ साजन सुमरन सूं लगन।
जागी २ जिवडा में गहरी सुरता री अगन।
कब आऊं सेवा में कब पाऊं दरशन।
पूरी २ करुणा सूं नैना जल बरसाऊं छूं॥ प्रभु०
जो थे म्हारी करणी री ओछी प्रियवर जाओला।
म्हारा सारा दुष्कर्मां ऊपर ध्यान लगाओला।
तो फिर म्हांसो अपराधी जन दूजो नहीं पाओला।
इतना भारी दूनियां में नित उठ पाप कमाऊं छूं॥ प्रभु.
तारो २ प्यारो स्वामी सेवक छूं थांको।
थे ही करस्यो निस्तारो म्हारा सङ्कट विपदां रो।
हेलो सुणज्यो सुखदाता दुख में निर्बल दीनारो।
सांचा मन सूं केसरिया थाने टेर सुणाऊँ छूं। प्रभु०

म्हारा मन री जाणोला सब थे अंतर्यामी छो।
थे अविनाशी अविकारी औ निश्छल निष्कामी छो।
सारा जग का करता हरता भरता सरनामी छो।
सुमती सागर 'सुधाकर, थांका जस गुण गाऊँ छूं॥ प्र०

[त.] बीछूड़ो उतारे जाने जान दूयूं रे बालमां।

ओ मनमोहन कृष्ण कन्हाई जी सांवरिया।
म्हांका चीर चुराय के जाय छुप्या—
थाने कांई या भाई जी, सांवरिया॥ ओ०
थांके ही कारण कातिक न्हाई जी सांवरिया।
थे तो करी पण यो निठुराई जी सांवरिया।
म्हे तो ठाडी छां अंग उघाडी थे साडी—
क्यों? म्हांकी छुपाई जी सांवरिया॥ ओ०
श्री जमुना जी रो नीर छे ठारी जी सांवरिया।
पीर उठे म्हांने जाड़ा री भारी जी सांवरिया।
म्हारा कुञ्ज विहारी ओ श्याम मुरारी—
क्यों म्हांने सताई जी सांवरिया॥ ओ०
गोप्यां तो थासूं प्रीत लगाई जी सांवरिया।
दरशण रे हित वेग सी, धाई जी सांवरिया॥
पण थांने तो छाई घणी चपलाई—
अनोखी ठिठाई जी सांवरिया॥ ओ०
दे द्यो जी म्हांका वस्त्र दयाकर सांवरिया।
पांय पड़ूं थांके सीस झुकाकर सांवरिया।
जद बैठ कदम्ब की डार पे माधुरी—
बंसी बजाई जी साँवरिया॥ ओ०
श्याम कहे सुन री मतवारन नागरिया।
तू जमना जी री छे अपराधन बावरिया।
होय नग्न जो न्हाई लजाई नहीं—
मर्याद घटाई "सुधाकरिया,,॥ ओ मनमोहन०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ रचयिता ❀
श्री गिरधर दास बोहरा कवि "सुध
टोंक (राजस्थान)

चेतावनी
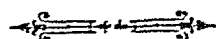
[तरज] कायाका पिंजरा डोलेरे एक साँसका पंछीबोले ।

है अजब खेल जिनमन का, इस मतवाली दुनियाँ में ।
कोई आता' कोई जाता' । कोई हँसता' कोई गाता ।
पीट पीट सिर रोता कोई, कोई देवी देव मनाता ।
पटमरा देखा कोई कोई खाली सुनिया में ॥ इस मन०
कोई मंदिर महल बनावे । कोई शादी ब्याह रचावे ।
कोइ हवापर किले चुनावे, ऊँचे २ शिखर चढ़ावे ।
अन्न बिना कोई दुखपावे, बोया सो लुनिया में ॥ इस
जिसको समझे रे प्यारा । वोही पाया अति दुखियारा ।
झूठकपटका,सब व्यवहारा, जान'सुधाकर,कीन्हकिनारा,
बिनहरिनाम यहांका सारा, नकशा बदगुनियाँ में ॥ इस.
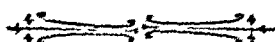
[तरज] मन हरि को भजन कर भाई ।

है दो दिनकी जिन्दगानी, राम सुमर रे प्राणी ॥ टेर
यह संसार असार है सारा, झूटी असत कहानी ।
सारनामहै नारायण का, जप तनमनसे ध्यानी ॥ राम०
क्या लाया क्या लेजावेगा, सोच समझ रे मानी ।
पड़ीरहेगी सारीवसुधा, अंत न सँग कछु जानी ॥राम०
तेली का सा बैल बना नर, खूब फिराई घानी ।
पापकपटकर मायाजोड़ी, हरि की याद भुलानी ॥ राम०
वेद पुराण भागवत गीता, सुनी न सन्तन वानी ।
अपनी २ टान "सुधाकर,, खाक जगतकी छानी ॥ रा०
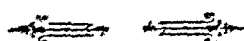
[तरज] रे मन राम सुमर दिन रैन ।

रे मन शिवशिव भज सुखकन्द ।
रह निशि दिन निर्द्वन्द ॥ रे मन शिव०
विषय वासना त्याग जगतकी, दुखदा दुरित दुरन्द ।
खोज परमपद निजकाया में, मायाहोय मुकुन्द ॥ रे मन.
हृदय गगन में विमल ज्ञानको, उदयहोय जब चन्द ।
दृष्टि परे तब आतमब्रह्म को, रूप अखण्ड अमन्द ॥ रे०
अष्ट कमल दल वक्षस्थल बिच, मधुकरही मकर
रसचाखनको बन मधुकरसम, छाँड कलुष मकरन्द ।
शून्यशिखरपर दृढआसनकर, दिव्यज्योती निरखं
दासोऽहम तज सोऽहम २ तत्वमसिः जपछन्द ॥ रे म०
घटके पटको खोल "सुधाकर,, नैन निपट कर बन्द ।
आपही आपमें आप समाकर, ले अनंत आनन्द ॥ रे.

[तरज] जगत में, स्वारथ के सब मीत ।
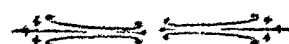
रे मन उमरा बीतीजाय । टेर
बारबार तोहे मैं समझाऊं । तू नहींसमझे हाय ॥ रे मन.
नरतन पाय भजनकर प्रभुको, मतना समय गमाय ।
चरण कमलमें ध्यानलगा, मिल नारायण से धाय ॥ रे.
काहू न पावक में जारजावे, काहू न सिंधु समाय ।
काहू न अवला करि बनआवे, काहू कालनहींखाय ॥ रे.
धर्मको धन पावक न जरावे, मन नहींसिंधु समाय ।
पुत्र न अवला करि बनआवे, नाम काल नहींखाय ॥ रे.
क्योंनहीं तृष्णात्याग "सुधाकर,, गुण गोविंदकेगाय ।
जीवनकेदिन बीतनपर पुनि शिरधुनिधुनि पछताय ॥ रे.
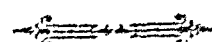
[तरज] भजन बिन उमरा बीतीजाय ।

करम का ढंग निराला है ।
क्या फूला फिरता किसघुनमें, तू मतवाला है । करम'
आतानहीं नजर यहाँकोई, जीव सुखी खुशहाल ।
लगाहुआ है थोड़ा २ सब को रंज मलाल ।
जगत सब देखाभाला है ॥ करमका.
आज किसी को तख्तनशीं, होने का हर्ष अपार ।
कल रोते उनही को देखा, खब जार बेजार ।
बदन पर कम्बल काला है ॥ करमका.
बड़े बड़े योधा अवनी को, अपनी अपनी गाय ।
समागये इसमें, पर यह ना हुई किसी की हाय ।
जगत मताबोंकी शाला है ॥ करमका.

पिता बन्धु सबदेखे, मित्र कुटुम्ब परिवार।
टिकट जिसदम यमपुरका, कोईनहीं हितकार।
में डाला है ॥ करमका.
आँख हियेकी खोलो, अरु कछुकरो विचार।
फिर हाथ न आवे, साधन करो अपार।
कुछ होनेवाला है ॥ करमका.
गो विश्व विषय सबमाई भजनकरो तिहुँकाल।
पार अगर होनाहै भवसागर से "गिरधरलाल,,।
पो हरिनामकी माला है ॥ करमका.
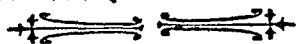
[तरज] दिखाल्याओ दादीजी मोहे राम जनम दरबार।
भजन कर भगवत का लगजाय जो बेड़ा पार। टेर
जगत सब झूठी माया। अरे मन क्यों भरमाया।
नाशवान है यह काया, तू करता जिसको प्यार ॥ भज.
नाम हरि का चित लाकर। प्रेम से नित्य जपाकर।
ज्ञान ध्यान से सुरत लगाकर, लेना आसन मार ॥ भ.
मित्र धन महल खजाना। संग कुछ भी नहीं जाना।
नहीं कोई अपना, बेगाना है, सारा संसार ॥ भजन.
'सुधाकर, श्याम विहारी। मुकुट धर कृष्ण मुरारी।
गिरवर धारी सङ्कट हारी, पर होजा वलिहार ॥ भज.
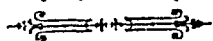
[तरज] जपो हरि नाम, वन्दे उमरा बिहानीरे।
तजो अभिमान! उमरा व्रथा ना गमाओ रे।
यह दुर्लभ मानुष तन पाकर मतना मुफत गमाओ रे।
भजन करो आनँद घन प्रभु को—
भव के वन्धन से भैया छूट क्यों न जाओरे ॥ तजो.
गर्भवास में क़ौल कियाथा क्या? सो नांय भुलाओरे।
जन्म जगत में पाकर के अब—
जीवन नैया को भैया पार ही लगाओ रे ॥ तजो.
सत्संगत में बैठ प्रेम से गुण गोविंद के गाओ रे।
धर निज आतम ज्ञान, ध्यान से—
अपनी काया में माया राम ने जगाओ रे ॥ तजो.
चरण कमल विच ध्यान लगाकर संतन शीस झुकाओरे।
आशा तृष्णा त्याग "सुधाकर,,—
गिरवर धर विश्वम्भर ने आपणो बनाओ रे ॥ तजो.
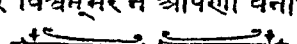
[तरज] प्रभु तू, प्रभु तू, प्रभु तू, प्रभु तू।
कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा।
हेरे मन निशिदिन पल छीन जपना ॥ कृष्णा०
ब्रज राज "सुधाकर,, श्याम बिना—
संसार असार में कोई न अपना।
धन माल रु महल कुटुम्ब परिवार—
सभी दिन चार का है एक स्वपना ॥
चेत अरे मन मूरख तू—
कर प्यार न याको विसार कलपना।
विश्व बहार को थोरी सी बाहर—
निहार ले यार है आखिर खपना ॥
यही सोच विचार के तज तृष्णा ॥ कृष्णा०
ध्यान भगवत का धरो कुछ मान मोह विसार के।
प्यार अरु व्यव्हार झूटे हैं सभी संसार के ॥
भीम अर्जुन युधिष्ठिर सहदेव नकुल कुमार के।
रहगये गुण और अवगुण शब्द दो ही सार के ॥
"गिरधर,, भज गिरवरधर तृष्णा ॥ कृष्णा०
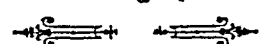
[त] रेमन कर भगवत से प्रीत जगतमें जीवन दो दिन का,
प्यारे प्रेम प्रभो से करले जीवन मतना व्रथा गँवाय। टेर
प्रेम को दे निज दिल में स्थान।
ब्रह्म अपने को ले पहिचान।
बना यों आतम का कल्यान।
ध्यान उसी से लगा न जाने प्रान चला कब जाय ॥ प्या०
वह मालिक सबका है सिरताज।
उसी को है सब जग की लाज।
दौर झट आय भक्त हित काज।
आलस में क्यों पड़ो समय को परिवर्तन होजाय ॥ प्या.
गर्भ में रह्यो दुःख से रोय।
जन्म जब दियो दया कर तोय।
अकारथ मूरख मतना खोय।
अबतो आँखें खोल काल रह्यो शिर पर चक्कर खाय ॥ प्या.
दया निज उर के अन्दर धार।
लगेगा भव सागर से पार।
मिलेंगे नारायण करतार।
कर निशिदिन शुभ कर्म "सुधाकर,,—
जनम मनुज को पाय ॥ प्यारे प्रेम०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक
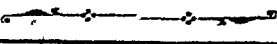
❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

भक्तों के भगवान

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि "
टोंक (राजस्थान)

[तरज़] दीनन पती दीन बन्धु भजरे मन मेरे।

श्री रघु पती चरण शरण सब सुख मन लहि रे ॥ श्री०
रसना गुण गाय गाय। प्रभु दरशन पाय पाय।
जग दुख बिसराय धाय, सुख निधि पद गहि रे ॥ श्री०
ममता मल त्याग भाग। रैन दिवस जाग जाग।
धर हिय प्रेमानुराग सरिता सम बहि रे॥ श्री०
हैं वही पितु मात तात। ब्रह्मादिक जिन हीं ध्यात।
निगमागम सुयश गात, जग पति कहि कहि रे ॥ श्री०
विश्व विषय विपद जान नाम 'सुधाकर' हु पान।
त्रिभुवन पती अटल मान, भक्ति मुक्ति चहि रे ॥ श्री०

[तरज़] सुमरन कर राम नाम बिसरे मत भाई।

जय जय रघु कुल दिनेश वैदेही साथे।
दीनन रो सुन सँदेश धरत हाथ माथे॥ जै जै
सबही अघ दूर करत। भक्ति विमल पूर्ण धरत।
ममता मद मान हरत, करुणा कर नाथे॥ जै जै०
रे मन नहीं सीख सुनत। त्रिभुवन पति नाँय गुनत।
मूरख क्यूं मूड़ धुनत तज कर निज पाथे॥ जै जै०
निशि दिन हरि गुण जो गात।
सोहि मन 'सुधाकर,, समात।
मिलि हैं प्रभु परत माँत। भर भर कर बाथे॥ जै जै.

[तरज] नाथ कैसे गज को फंद छुड़ायो।

नाथ मैं तो आयो हूं शरण तुम्हारी।
मोरी सहाय करोजी गिरधारी॥ नाथ०
भक्त उबारन असुर सँहारन देह मनुज की धारी।
ऐसे हो शर्णागत वत्सल, विपदा जन की टारी॥ नाथ०
गर्भित रावण जानि न महिमा छलसे हरी सिया प्यारी।
अंजनी सुत बजरंग ने जाकर लंक जरा दई सारी॥ ना०
मख सम्पूर्ण कियो मुनि को पुनि, तारी अहल्या नारी।
जाय जनक पुर तोड़ धनुप को, सीता सोच निवारी॥ ना०
जानि अशुभ दिन अपने पती को बोली मँदोदरी।
जाय चरण पिया गहो रघुवर के नातर होयगी ख्वारी।
अशरण शरण दया निधि तुमहो राखो लाज हमारी
दीन 'सुधाकर, शर्ण गही प्रभु हो निशि दिन बलिहारी॥
नाथ मैं तो आयो हूं शरण०

[तरज] बतादे सखी कौन गली गये श्याम।

कहत हरि अर्जुन मान सही।
काम क्रोध मद लोभ जो त्यागे, है मेरो भक्त वही॥ कहत०
शत्रु औ मित्रसदा सम जाने तृपणा जिन मन गई।
द्वेष कपट छल छिद्र गँवा जिन सत्यत सुधा रस लई॥ क०
पालत जो वैराग्य सदा मन दुविधा धोय दई।
विषय वासना छांड करी जिन सेवा नित नित नई॥ क०
सुख दुख पुण्य पाप नहीं जाने गति निर्द्वंद गही।
आपही आपमें आनंद माने, प्रभुमय देखे मही॥ कह०
सुनो सखा तुम सत्य प्रतिज्ञा जो मम हिय बस रही।
जो मोहिं भजे भजूं मैं ताको, भक्ति 'सुधाकर, कही॥ क०

[तरज] भजन कर भगवत का धर ध्यान—

दयामय दीनन पती भगवान।
विपद विनाशन सुमति प्रकाशन, जगपती करुणानिधान॥
कृपासिन्धु जगबन्धु विहारी, अविगत अमित महान।
उपमा रहित सहित पियप्यारी, प्रतिभा परम सुजान॥
कमलनैन नारायण स्वामी, व्रजधन जीवन प्रान।
घट घट व्यापक अंतर्यामी, भज मन प्रभु निर्वान॥ द०
मोहन मदन मनोहर माधव, महिमा सुयश बखान।
भज मन श्री रघुनन्दन राघव, कर तनमन से गान॥
नित आसनदृढ़ होय "सुधाकर,, धर भृकुटीबिच ध्यान।
आप ही आपमें आप समा! कर निज आतम कल्यान॥
दयामय दीनन पती०

] उमरावजी दासी रे गेह वना आवज्यो ।

हरि आओजी दयालु दया धार ने । टेर

गज वेर तो प्रभु टेरत ही धाया आप ।

गरुड दीन दुख उवार ने ॥ हमारे०

पदी री लाज सभा माँझ रखी जान सती ।

दुशासन रो मान मार ने ॥ हमारे०

रां रे काज गरल आप ने पियूष कियो ।

शाक विहँस खायो विदुर वारने ॥ हमारे०

नरसी रे हेतु भगा पाग साज आविया ।

साँवल साह वन हुन्डवी सिकार ने ॥ हमा-

भीलनी रा वेर वन में जाय ने उच्छिष्ट भख्या ।

तारी गणिका प्रेमनी निहार ने ॥ हमारे०

कीज्यो दयालु दया दीन "सुधाकर,, जन पर ।

चरणन रो दास निज विचार ने ॥ हमारे हरि०
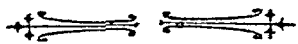
[तरज] कायाका पिंजरा डोलेरे एक साँस का पंछी बोले ।

तेरी दिन दिन काया छीजेरे मन राम भजन करलीजे ।

पंच तत्व की वनीहै काया । जामें मन तू देखरिझाया ।

है जगकी सवझूटी माया, जा में उरे न सीजे रे ॥ म०

मातपिता वान्धव सुत दारा । स्वारथका है सव परिवारा ।

अंतसमय कोउ ना हितकारा, मत दुविधामें खोजे रे ॥ म

सारीउमर विषयन में खोई । सुखमें हँसरह्यो दुखमें रोई ।

अवतो रामरूप जिय जोई, हरिचरणन चित दीजे ॥ म०

पाप कपट छलछिद्र भुलाकर, आपही आपमें आप समाकर

राम नाम भज नित्य "सुधाकर"

प्रेम सुधा रस पीजे रे ॥ मन राम नाम०
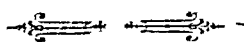
[तरज] सोवेछे कि जागे री नागन थारो कंथ ।

नेक कृपा कीजो मोपे स्वामी ओंकार । टेर०

निर्गुण सगुण ब्रह्म अघ नाशक, बुद्धि विमल भण्डार ।

दीन दयालु उधार पतित को डूब्यो भव सिन्धु मँझार ॥

निराकार निर्विघ्न चतुर्दश, लोकहु सिरजनहार ।

आपही विश्व प्रलय के कर्ता, आपही पालनहार ॥

निश्चर खलदल मारण कारण, धरयो रूप साकार ।

कहलाये दशरथ नृप नन्दन, कौशल राज कुमार ॥

जल थल गगनरु अगन वायु में, जगमगात करतार ।

विना भजन कछु भेद न पावे, युक्ति करो ना हजार ॥

ध्यान "सुधाकर,, धर माधव को, त्याग विश्व जंजार ।

अविनाशी अविकार सुमर नर, मानुष जन्म सुधार ॥ ने०
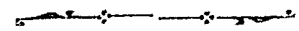
[तरज] दे दियो वचन को दान—

मैं अगुण अवुध रघुराज, काज मेरो किसविध सारोगे ॥

प्रण कियो पतंग ने भारी । चित गहन दिवाकर धारी ।

तुम्हीं सिरताज निहारोगे ॥ मैं अगुण०

निरवल मतिहीन अज्ञाना । चढे पंगु शिखर चढजाना ।

दयामय विघन निवारोगे ॥ मैं अगुण०

तव महिमा अमित गुणागर । कवि अंध नाम नैणाधर ।

"सुधाकर,, तुमही उवारोगे ॥ मैं०
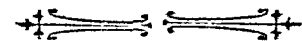
[तरज] दया निधि तोरी गति लखि ना परे ।

शरण में राखें हैं भगवान ।

लाडचाव से पालपोस कर सुखनिधि करुणानिधान ॥ श०

कमल नैन नारायण स्वामी, जगमग ज्योति महान ।

घटघट व्यापक अंतर्यामी जगपति जीवनप्रान ॥ शरण०

रमा रमण रघुनन्दन राघव, रघुपति जनि हनुमान ।

भज मन प्यारे मुकुन्द माधव, सहित सुताब्रपमान ॥ श०

सुमरनकर निशिदिन तनमनसे महिमा अमित वखान ।

आनँदघन दीनन सुखदाता' त्रिभुवन जन कल्यान ॥ श०

आरत हरण भक्तभय नाशन दास "सुधाकर,, जान ।

चरन कमल चित ध्यान लगाकर करत विशद गुण गान ॥

[तरज] प्रभु मोरी अब विनय चित धरो ।

दयानिधि दीन के दुख हरो ॥ टेर

दीन वन्धु दयालु दाता । तव शरण जन परो ॥ दया०

प्रणतपाल कृपाल प्रण निज । प्रकट हरि अब करो ॥ द०

अशुभ कर्म उधार अधिपती । भक्ति समहिय धरो ॥ द०

शरण चरण लई 'सुधाकर, । चाहे सब जग लरो ॥ द०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

दीन की पुकार

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि "
टोंक (राजस्थान)

हे ! दयामय दीन की सुनिये पुकार । कीजिये करुणा जगत के कर्णधार ॥
डूब जायेगी कि होजायेगी पार । मन की नवका तन के सागर के मंझार ॥

(तरज) रघुकुल में सूर्य्य समान हो तुम सिया राम तुम्हारी जय होवे ।

तुम्हें भूल न जाऊं दयालु हरि मुझे ध्यान में ध्यान दिलाते रहो ।
गिरजाऊं न जीव पतंग हूं मैं, मेरी डोर को नाथ हिलाते रहो ॥
प्रभु कर्म के बंधन मुक्त हुआ तुमसे हूं अलग मुझे मुक्त करो ।
करो चाह पृथक अविनाशी मगर पुनि जीव में जीव मिलाते रहो ॥
मुझे मोक्षकी चाह नहीं भगवन्, है चाह तुम्हारे दर्शन की ।
शुभ दर्शन हो के हेतु प्रभो, मरता हूं मैं आप जिलाते रहो ॥
अज्ञान हूं बालक दीन महान, सुजान हो तुम जरा ध्यान धरो ।
नादान हो करुणा निधान सदा, शिशु जान अजान खिलाते रहो ॥
बेचैन "सुधाकर,, नैन हैं यह. बरसाते सुधा दिन रैन हैं यह ।
सुखदैन असहन जो प्रेम में हो, उसे प्रेम सुधा ही पिलाते रहो ॥

(तरज) लबोंपे तवस्सुम निगाहों में बिजली यह देखो क़यामत चली आ रही है ।

प्रभो भक्त वत्सल दयामय बिहारी दया भाव दीनोंपे लाना पड़ेगा ।
सदा चरणसेवा जो करते तुम्हारी उन्हें संकटों से बचाना पड़ेगा ॥
कभी चक्र स्वामिन चलायाथा तुमने कभी ग्राहसे गज बचायाथा तुमने ।
कभी कंस का शिर उड़ाया था तुमने हमें भी दुखों से छुड़ाना पड़ेगा ॥
तजी निजप्रतिज्ञा भी थी भक्तकारन न आयुध गहूंगा तुम्हारा था यह प्रन ।
किसी ब्रह्मचारी ने कहाथा वचन पन तुम्हें शस्त्र भगवन उठाना पड़ेगा ॥
विभीषणको भगवन् दियाराज तुमने औ बाली सुवन को दियाताज तुमने
अनेकों जनकी रखी लाज तुमने कृपाकर हमें भी निभाना पड़ेगा ॥
कुरुक्षेत्र में जब किया युद्ध दर्शन हुआ मोहसे था शिथिल अंग अरजुन ।
दिया ज्ञान गीता का तुमने उसे पन हमेंभी वह साधन सुनाना पड़ेगा ॥
'सुधाकर, नहीं क्या सुनोगे हमारी जगतके नियंता जगत ताप हारी ?
शरण में पड़ा है जो चरण का पुजारी उसे भी हिये से लगाना पड़ेगा ॥

[बृहदारण्यक उपनिषद् के है
की एक वैज्ञानिक पद्]

दोहा

देव दनुज मानव सभी लहें परं कल्यान ।
पालें जो द. अर्थको दमन दया अरु दान ॥

(तरज) मन जप सुखसे हरि नाम,
जगत में जीवन दो दिन का ।

गये देव दनुज मानव
जिज्ञासी बन ब्रह्माजी प ।
उपदेश मिला तीनो को
अक्षर एक ही द, द, द. ॥ टेर
प्रथम इन्द्र ने सोचा हूं मैं
स्वर्ग लोक का वासी ।
विविध भांति के सुख भोगों में
रहता सदा विलासी ।
इन्द्रियां दमन करने को
पितामह कहते हैं मुझ स ॥ उप०
किया मनुज ने कर्म योनि पर
अर्थ लाभ का ध्यान ।
समझा द, से करना चहिये
मुझको दसवां द न ।
कल्यान जीव का विमल बुद्धि से
र मानुप कर ल ॥ उप०
असुर ने जाना क्रोध और
हिंसा है मेरा काम ।
दया पालना जीवों पर
है इस द, का परिणाम ।
यह परं तत्व पाने का साधन
आयोजन से ह ॥ उप०
लगे पूछने पूज्य कहो
क्या समझे द, का ज्ञान ।
बोले तीनो निज २ क्रम मे
दमन दया अरु दान ।
है सार 'सुधाकर' श्रद्धा में
कुछ संशय मतसम झ ॥ उप०

बन्धु करुणा निधे सुन दीनन की टेर।
करुणा प्रभु आइये फिर दीनन की बेर॥

देखालो देखलो मोहन अदा किसकी निराली है।

यह तो कहदो दीनोका उद्धार कब होगा।
भवसागर से भारत का बेड़ा पार कब होगा॥
दुराचारी दुखी करते हैं भगवन् दीन दासों को।
भला इस देश में फिर धर्म का व्यवहार कब होगा॥
बनाया फूल सम जनको प्रभो इस बाग दुनियां में।
मगर यह फूल स्वामी के गले का हार कब होगा॥
लगेगी कब लगन इस मनमें घन प्रीतम के दर्शन की।
यह तन जीवन धन के शुभ चरणन पर बलिहार कब होगा॥
"सुधाकर,, सांवरे घंशयाम लीला धाम बनवारी।
बतादो गिरधरधारी तुमसे सच्चा प्यार कब होगा॥

[तरज] इश्क में जीने गुजरते हैं गुजरने वाले।

दीन बंधु हो दया दीनो पे लाते रहना।
कृष्ण अर्जुन से किये प्रण को निभाते रहना॥
मूरती मनमें रहे नैन में प्यारे दर्शन।
ध्यान में बांसुरी ब्रजराज बजाते रहना॥
मान मोहादी विषय क्रोध व तृष्णा डायन।
ताप माया के मेरे मन से हटाते रहना॥
डूब जाऊं न कहीं नाथ मैं भव सागर में।
ज्ञान बल्ली से मेरी नाव चलाते रहना॥
प्रेम में लीन हो आनंद मे निद्वन्द रहूं।
गान वंसी का मधुर तान सुनाते रहना॥
वीनती है यही गोविंद "सुधाकर,, माधो।
अपने भक्तों को सदा दर्स दिखाते रहना॥

[तरज] चैन से सोरहाथा मैं किसने मुझे जगादिया।

बांसुरी बजादे श्याम माधुरी लतान में।
झट प्रकट निकट हो कान्ह आन कुंज स्थान में॥
बावरी की अब कोई विथा निहारे तो सही।
विन अनल जो जल रही है प्रेम की चितान में॥
क्यों बहे न नैन नीर जब वियोग की हो पीर।
दरस विन हुई अधीर मीन के समान में॥
हा न टूटी लेखनी वियोग जिन लिखा हमें।
संत नन क्या सोगये थे जा सभी मसान में॥
रंग राग आपके दासी कुटिल के संग हों।
और मलूं भभूति अंग खूब ध्यान ध्यान में॥
टेर यह विनत भरी तू जाके कहियो सहचरी।
देर ना पयान की है प्रेमिका के प्रान में॥
राधिका के प्रेम चंद कृष्ण "सुधाकर" मुकुन्द।
वीनती आनंद कंद लाओ नेक ध्यान में॥
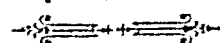
[तरज] बिहारी तुमने बंसी का बजाना किससे सीखा है।

विनय प्रभु नम्र सुन लीजे कृपा कीजे कृपा कीजे।
सुमति निज दासको दीजे कृपा कीजे कृपा कीजे॥
तुम्हारे चर्ण पाने की सदा तृष्णा है प्रेमी को।
मनोरथ पूर्ण करदीजे कृपा कीजे कृपा कीजे॥
हूं भगवन् दीन मैं! तुम दीन बन्धो दुख हारी हो।
दयामय धीरता दीजे कृपा कीजे कृपा कीजे॥
भँवर भवसिन्धु से बेड़ा लगाओ पार भक्तों का।
'सुधाकर' निज शरण दीजे कृपा कीजे कृपा कीजे॥
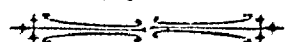
(त.) खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिंदवाले पडे हुएहैं,

करो दयामय दया वह अपरम् धरम सनातन समर्थ होवे।
युगों २ का किया परिश्रम न देश वालों का व्यर्थ होवे॥
मिटारहे हैं मिटाने वाले हमारे सद् भाव सद् गुणों को,
न तुमको क्योंकर बुरालगे जब तुम्हारे संमुख अनर्थ होवे
जो चाहतेहैं अहित हमारा जिन्हें विधर्मी चरण है प्यारा।
बगैर सोचा बिना विचारा न पूरा उनका मनर्थ होवे॥
जो जुल्म ढाने में कारवां हैं जो खुद परस्ती से शादमां हैं।
जो अपनी हस्ती से बदगुमां हैं न प्राप्त उनको पदर्थ होवे,
करो'सुधाकर, कृपा यह आकर विनय मैं करताहूं सिर झुकाकर
कि देश भारत वसुन्धारा पर प्रसिद्ध दीनों का अर्थ होवे॥

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❁ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❁

घायल प्रेमी

※ रचयिता ※

श्री गिरधर दास वोहरा

टोंक [राजस्थान

गोपाल बालं भुवनैक पालं संसार माया मतिमोह जालम् ।
यशो विशालं शिशुपाल कालं बाल मुकुन्द मनसा स्मरामि: ॥

[तर्ज] दर्शन दे हित आओ म्हारा प्रभु जी—

घायल की गत घायल जाने जो कोई घायल होय ।
प्रेम की पीर को प्रेमी ही जाने और न जाने कोय ।
घायल थी एक प्रेम की मीरा ।
कृष्ण वियोग में होय अधीरा ।
खोजती पीतम प्रेम की तीरा ।
विष गयो अमृत होय ''' विषगयो अमृत होय ॥ घा०
तुलसी सूर थे प्रेम के रोगी ।
एक त्रिया एक गणिका भोगी ।
राम मिले तिन्हें कृष्ण से योगी ।
प्रेम ही के वश होय ''' प्रेम ही के वश होय ॥ घा०
घायल थी रुकमणि अरु राधा ।
श्याम मिलन हित प्रेम कियाथा ।
सह सह कर संकट दुख बाधा ।
नित अँसुवन मुखधोय ''' नित अँसुवन मुख धोय ॥ घा०
प्रेम के देव हूं शरण तुम्हारी ।
प्रेम हो तुम मैं प्रेम पुजारी ।
आओ "सुधाकर,, प्रेम निहारी ।
दो प्रभु दर्शन मोय ''' दो प्रभु दर्शन मोय ॥ घा०

[त०] मोहे अच्छे पिया वाही देस बुलालो—
हिंद में जिया घबरावत है ।
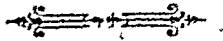
सुनएरीसखी कछु मेरीकही बतलातो सही गये आज कहां ।
मन मोहन सोहन राज कहां मेरे जीवन के शिरताज कहां ॥
मैं निहारत बाट चली री अली ।
लगी खोजन कृष्ण को कुञ्जगली ।
मोहे सांच कहो वृषभानु लली ।
ब्रज छांड छुपे ब्रजराज कहां,बतलानोसही गये आज कहां ॥
सुन एरी०

मोहे चैन नहीं दिन रैन परे ।
सुख दैन न धीरज नैन धरे ।
तन मन घायल मधु बैन करे ।
बिन श्याम बने मेरो काज कहां,बतलानोसही गये आज कहां
गोपी बल्लभ गोविन्द को री ।
ब्रज चन्द, मुकुन्द अनंत को, री ।
चलो ढूंढन निकसें सखी नगरी ।
जब लागगई तब लाजकहां बतलानोसही गयेआजकहां ॥ सु
मोरी लागी लगन अब नो छूटे ।
घुली प्रेम की गांठ सो ना खुटे ।
सांची प्रीत "सुधाकर,, ना टूटे ।
मैंरहूंगोवहां सुखसाज जहां बतलानोसही गयेआज कहां ॥ सु
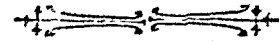
[तर्ज] सभा में मेरा आप ही करोगे निसतारा ।

कुण जाणे बावा दुनियां में पीर पराई ॥ कुण०
जा दिनसे सखी नैना लागो नींद निमिष नहीं आई ।
बिरहकी आग जरत जियरा में होरी सम अधिकाई ॥
कुण जाणे०
छांड गये निर्दई लगाकर प्रीत दया नहीं आई ।
अखियां दीन दरसकी प्यासी घन बन मेह बरसाई ॥
कुण जाणे०
तनमन धन अर्पन कर उनके जीवन ज्योति जगाई ।
प्यारे साजन आन मिलो हम तुमसे लगन लगाई ॥
कुण जाणे०
उठत कलेजे हूक प्रेमकी कठिन महा दुख दाई ।
पापी प्राण न निकसत तनसे साजनबिन अकुलाई ॥
कुण जाणे०
दीन दयालु दिनेश दयाकर दीन विनय चितलाई ।
तृषित भवँर रस फूल 'सुधाकर दीजियो पान कराई ॥
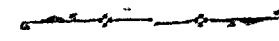
[तरज] सांवरिया से लागी लगन सजनी।

श्याम तोरी बंसी निराली सुनी। टेर

चन्द्र मुकुट कुण्डल सुभग घूंघर वारे केस।
मन मोहन सँग माधुरी सोहत सुन्दर भेष॥
मधुर २ मुरली अधर कर, धर सुघर सुरेश।
आनँद घन टेरन लगे ब्रज भूषण मथुरेश॥
सुखद "सुधाकर,, ध्वनी॥ श्याम०
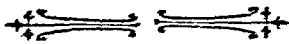
[तरज] सखीरी मोरी अखियां सांवरिया सूं लागी।

वृन्दावन वारो रसिया, बरसाने वारी नार।
सखीरी मन बसिया यह दोऊ सुकुमार॥ वृन्दा०
जाकी बांकी झांकी औ सजीलो सिणगार।
जो मोहन सोहन व्रज धन जन मन मोहे जादू डार।
वही है मधु हँसिया करूं मैं जाको प्यार॥ वृन्दा०
सीस मुकुट कानन में कुण्डल केसर तिलक लिलार।
गल वैजन्ती माल विराजे घूंघर वारे बार।
अधर धर वंसिया बजावे सुखकार॥ वृन्दा०
दिनदिन पलपल छिन२ गिन २ वयेन दिये गुजार।
मैं अर्पन कर तन मन धन चरनन पर गइ बलिहार।
नैनन छवि लसिया रसीली रिझवार॥ वृन्दा०
प्रियवर मनहर मधुकर गिरवर सुघर कुँअर सुखकार।
नटवर नागर श्याम "सुधाकर,, राधे कृष्ण मुरार।
लागीरी मोरी अखियां वाही सूं जमना पार॥ वृन्दा०
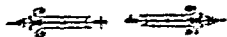
[तरज] लाज रखो जी सिया राम।

बिसरत नाहिं घंश्याम, मुकुटछवि नैनन घूमे॥ बि०
तुमबिन निशिदिन चैन न तनमन, नंदनंदन सुखधाम।
उठत एक हूक चितहु में॥ बिसरत ना०
चंद्रवदन चितवनडिग अलकन, छवि घनललित ललाम।
मदन गति तापर झूमें॥ बिसरत ना०
आओ सजन आनंद घन जनमन, शोभा सदन सुनाम।
शरण चरणन की हूं मैं॥ बिसरत ना०
ब्रजभूषन हरि दीजियो दरशन, मन मोहन अभिराम।
"सुधाकर,, पद रज चूमें॥ बिसरत नाहिं०

प्रेम बराबर योग ना प्रेम बराबर ध्यान।
प्रेम बिना जप तप सभी प्यारे थोथा जान॥
जेह घट प्रेम न संचरे तेह घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की सांस लेय बिन प्रान॥

[त.] श्याममनोहर मधुकर मुरली प्रेम से नेक बजाओ।

तुमबिन निशिदिन कल न परत मोहे दर्शनदयो घंश्याम,
श्याम वदन छवि नैनन घूमे।
बिरह की हूक, उठे चित हू में।
बिसरत ना ब्रज धाम॥ दर्शन०
आनँद घन प्रभु करुणा कीज्यो।
शरण चरण लई जन सुध लीज्यो।
मदन मोहन सुख धाम॥ दर्शन०
किस विध तुमरो जस गुण गाऊं।
महिमा को कहुं अंत न पाऊं।
सौख्य सदन निशकाम॥ दर्शन०
ब्रज भूषण ब्रज राज "सुधाकर,,।
मदन मोहन नटवर नट नागर।
लीला ललित ललाम॥ दर्शन०
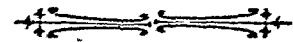
[तरज] नजरिया न मारो छैला लग जायगी।

मैं कहा करूं राम जिया घणो घबरावे॥ टेर
लगाके प्रीत सखी दर्स दिखाते ही नहीं।
आप भी आते नहीं हमको बुलाते भी नहीं।
बेदर्दी को हाल कोई जाय समझावे॥ मैं.
चैन दिन रैन नहीं नैन में निंदिया कैसी।
चकोरि चन्द्र बिना, रहत है चकित जैसी।
या जल बिन मीन जैसे सुख नहीं पावे॥ मैं.
फूल को देख भँवर फूल सो झूमत डोले।
फूल रस पाय तो गुंजार में अमृत बोले।
मेरे रूठे साजन को मनाय कोई लावे॥ मैं.
मैं जिनके प्रेम में निशि दिन विलीन तन मैं हूं।
मिलेंगे फूल से मधुकर इसी लगन में हूं।
"सुधाकर,, सुखद यों मधुर गान गावे॥ मैं.

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

श्री कृष्ण जन्मोत्सव

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक . (राजस्थान)

नील कमल सा सुघर सुलोचन श्याम बदन है। कृष्ण रैन में चंद्र सरीखा, प्रिय दर्शन
तनपर, मणि से जटित, मनोहर स्वच्छ वसन है। तारा गणसे लखित प्रफुल्लित, मनो गगन
मोर मुकट है शीस पर गल मोतियन की माल है। विश्व जीतने के लिये प्रकटी मूर्ति रसाल है

[तर्ज] हे कमला पति जगदाधारी–
दीन जनन की सुध प्रभु लीज्यो।

कृष्ण, जनम सुन गण पति आये–
अथ सिध सुद मंगल के दाता।
नंद रानी जहां, पलना झुलावे–
त्रिभुवन मात पिता की माता॥
दूँद दुदुंयाला, सूँड सुड़याला।
पग नूपुर कर ताल बजाता।
एक रदन गज बदन विनायक–
वरदायक स्वर सुन्दर गाता॥
मूषक वाहन विघन विनाशन।
सुर नर मुनि जन, जिनको मनाता।
शंकर सुवन भवानी के नंदन–
दास "सुधाकर,, तिन को ही ध्याता॥
कृष्ण जनम सुन॥
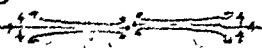
[तर्ज] इश्क में जी से गुजरते हैं गुजरने वाले।

है अजब ढंग से संसार में आना उनका।
देखकर दंग हैं यह रंग जमाना उनका॥
शेष सय्या पे शयन करते हैं जो सागर में।
सूप के कोने में है रूप सुहाना उनका॥
जिन को त्रिभुवन का धनी जग में कहा करते हैं।
कैद खाना है भला जन्म ठिकाना उनका॥
कहते जिनको हैं निराकार निरंजन भू पर।
हमने साकार सुना वंसी बजाना उनका॥
याद आता है "सुधाकर,, वह समय बारम्बार।
गोपियों को कभी कुञ्जन में नचाना उनका॥
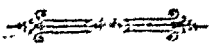
[तर्ज] सखी देखण चालो राज भवन में–
राम जनम की धूम।

सखी देखण चालो, आज, या ब्रज में–
प्रकटे श्री, गोकुल चंद॥
नंद महर घर ढोटा जायो, छायो, घणों आनंद।
सुन्दर श्याम मनोहर मूरति, मोहन परमानंद॥
सखी देखण चालो०
मंगल साज सजे सब, सजनी चालत चाल गयंद।
नाचत गावत, ताल बजावत, होय सभी निर्द्वन्द॥
सखी देखण चालो०
भांति अनेकन बाजा बाजे, वेद भणे द्विज वृन्द।
दूध दही घृत माखन की छई आँगन में मकरंद॥
सखी देखण चालो०
बांटत दान अनंत "सुधाकर,, गुणिजन गावत छंद।
पूत सपूत जियो जसुदा तेरो लालन मुख अरविंद॥
सखी देखण चालो०

[तर्ज] है कठिन इश्क की पीर लगे सो ही जाने।
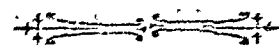
मिल चलीं झुंड के झुंड श्री ब्रज की बाला।
भये प्रकट गोकुल चंद नंद घर लाला॥
लै कंचन थारमें हार, हरिद्रा रोरी।
कर नवल नार शृंगार प्रेम रंग बोरी॥
मणि रत्न कमल पुष्पन से भर भर झोरी।
आतुर भई मानो मिलन को चंद्र चकोरी॥
देहँ अंजन, खंजन, नव कंजन, तेहि काला॥ मिल चली०
सब गावन गीत पुनीत सरस सुखदाई।
चमकत दमकत जसुदा के मन्दिर आई॥

नव चन्द्र उदय भयो देख हरषि न समाई।
गई चरणन पर बलिहार अशीस, सुनाई ।।
६ बार रिझवार, विसर निज हाला ।। मिल चली०
पुनि मंगल कलश, धराय दीप बली बारी।
निज कुल की कीन्हीं रीत विविध विधि सारी ।।
ठाड़ी मुख निरखत चंद्र वदन मन हारी।
शोभा विलोक रही, सकल भुवन की नारी ।।
पहिरावन प्रभुको लगी फुलन की माला ।। मिल चली०
छाये अनंत आनंद मदन सकुचाये ।
लीलाधर लीला करन अवनि पर आये ।।
निज मति सम कछु गुण रूप "सुधाकर,, गाये।
सुर नर मुनि गुणि जन सकल परम् सुख पाये ।।
हरि दीजियो दरशन त्रिभुवन रूप रसाला ।। मिल चली०
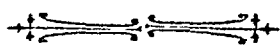
आज गोकुल में कन्हैया का जनम होता है।
बांसुरी बजती है श्री कृष्ण भजन होता है ।।

[तरज] विपत में हिरनी हरि को पुकारी।

घनी मन फूल रही ब्रजनारी—
जाकी शोभा मैं बरनूं कहारी ।। घनी०
गोकुल चंद प्रकट भये सजनी, गावत मंगल चारी।
भादौं पाख प्रथम वदि अष्टमी कृष्ण रैन अँधियारी ।।
घनी मन फूल०
शीतल मंद सुगंध सुहावत है सुखकंद बयारी।
श्री यमुना वन घन लहरावत, मोद भयो अति भारी ।।
घनी मन फूल०
दूध दही घृत कुम २ अक्षत, हाथ लिये जल झारी।
केसर चंदन कंचन थारमें, मंगल साज सँवारी ।।
घनी मन फूल०
निरखत श्याम वदन छवि सागर पूरण चंद्र छटारी।
दास 'सुधाकर, श्री गिरधर पर तन मन धन सब वारी ॥
घनी मन फूल०
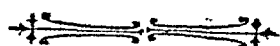
मोर मुकुट कुण्डल सुभग घूँगर वारे केश।
श्याम मनोहर माधुरी—हिवड़े बसो हमेश ।।

[तरज] करमन की गति न्यारी।

नीके रहो दोऊ भैया, जसोदा मैया लाल तिहारे ।। नीके०
धन्य घरी धन भाग नहारो।
धन अनुराग सुहाग तिहारो।
जो प्रभु सम सुत पैदा ।। जसोदा मैया०
मंगल मोद भयो अति भारी।
नाचत गावत सखी जन सारी।
प्रेम मगन अति छैया ।। जसोदा मैया लाल०
पुण्य दिवस शुभ आज मनाऊँ।
श्याम वदन छविपर बलि जाऊँ।
चितवन चाव बढैया ।। जसोदा मैया ॥ लाल०
श्याम गोरे मुख नंद के लाला ।
परम "सुधाकर,, रूप रसाला ।
मुनियन मन रिझवैया ।। जसोदा मैया०
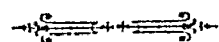
[तरज] चँदावल शिवनार अकेली रहगई रे।

कृष्ण जनम की बेर घटा घन छाय रही।
बरसन को चहूँमेर उमड कर आय रही ।। कृष्ण०
सखी जन मिल सब गात बधाई।
सुन्दर राग सुहाग सुहाई।
मंगल धुन रही टेर, हिये हुलसाय रही ॥ कृष्ण०
झुंड के झुंड चलीं सब नारी।
नव तरुणी सुन्दर सुकुमारी।
व्रज मण्डल लियो घेर परं सुख पाय रही ।। कृष्ण०
भूल रही गति निज तन मन की।
प्रेम मगन भई मति गोपियन की।
मोतियन माल बिखेर, मधुर मुस्काय रही ।। कृष्ण०
श्याम 'सुधाकर, छवि सुन चातुर ।
नैनन निरख भई मैं आतुर ।
निमिष करी नहीं देर चरन चित लाय रही ॥ कृष्ण०
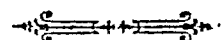
प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❁ सुधाकर काव्य कुंज ❁

※ सच्चा सुमन ※

※ रचयिता ※
श्री गिरधरदास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

[गज़ल] जाओ २ पिया मोसे, करो न लराई।
देखो सखी मोहन श्याम अलसाने ॥ टेर
मोर मुकुट कटि कीट पीताम्बर।
कुण्डल लट लटकाने ॥ देखो०
लोचन अरुण कमल सम शोभित।
अधर तमोल रचाने ॥ देखो०
डग मग चाल चलत मग पग धरि।
नैनन नींद घुलाने ॥ देखो०
भोर भये हमरे ढिग आये।
रैन गँवाई किन जाने ॥ देखो०
अट पट बैन कहत सुन्दर ने।
मरम की बात छुपाने ॥ देखो०
मंद मधुर मुसकाय "सुधाकर"।
सुन प्रिय बचन लजाने ॥ देखो०

[तर] कृष्ण बजाजा बंसी कहां लागी इतनी दे र—
लीला रचो नव कुंज ! पुंज पुंजे फिर बल वी" र।
ता थिलंग त्रक थुंजे २ गुंजे स्वर गम्भीर ॥ लीला०
कणधा कणधा थुक थुक थुंजे।
ता ता थै थैं त्रक ता तुंजे।
नचत नचावत रसिक दोउ नन्दे।
नागरि नट दिलगी"र ॥ ता थिलंग०
छिम २ छि छि छिम नूपुर बाजे।
धिन २ धा तिन किट किट साजे।
सुन २ सुरपति निज मन लाजे।
थाकेऊ यमुना नी"र ॥ ता थिलंग०
मधु रस मुरली सुन ब्रज नारी।
धावहिं विकल होय मतिमारी।
कोऊ अटपट कोऊ लिपट उघारी।
होयकर प्रेम अधी" र ॥ ता थिलंग०
बंसी वट तट विटप की छैंयां।
निकट विमल जल निर्मल बहियां।
नवल कमल दल उज्वल गैयां।
कहियां त्रिविध समी"र ॥ ता थिलंग०
इस विध धर बहु रूप "सुधाकर,,।
बहु गोपियन सँग बहु नट नागर।
गावत बांह में बांह गुथा कर।
कालंद्री के ती" र ॥ ता थिलंग०

[त.] कृष्ण बजाजा बंसी कहां लागी इतनी दे"
भारत में फिर आके सुनाजा उस मुरली की टेर।
बंसी बजाओ कृष्ण फिर कालंद्री के ती"र।
शोभित विमल कमल दल रहे जहां, बहे जल निर्मल नीर
फिर वही मोहन धेनु चराओ।
फिर गुवालन सँग माखन खाओ।
दुष्ट दलन यदु वी"र ॥ शोभित विमल०
खेलन के मिस गेंद कन्हैया।
आ, भारत में नाग नथैया।
राखो मखियन के ची"र ॥ शोभित विमल०
फिर वही शाक-विदुर घर खाओ।
तान्दुल अरु मधु बेर भी पाओ।
गद् गद् पुलक शरी" र ॥ शोभित विमल०
फिर असुरन को मान घटाओ।
फिर वसुधा को भार हटाओ।
सज्जन बंधाओ धी"र ॥ शोभित विमल०
फिर गिरधर गिरवर कर धारो।
फिर सुरपति को गर्व निवारो।
हरेऊ "सुधाकर,, पी" र ॥ शोभित विमल०

[दरज] सैयां तोरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी।
श्यामा तोरी अखियां में कजरा, सुहावे री ॥ श्या०
प्रेम भरी चितवन सुकुमारी।
मंद हसन पिय प्यारी, मुसकावेरी ॥ श्यामा०
चंद्र बदन मृगलोचन — सुन्दर।
अलकन दोउ नागन सी दिखावे री ॥ श्या०
कोमल तन सुख सदन नागरी।
मोहन मन वश कर इठलावेरी ॥ श्यामा०
नटनागर मनहर मुरलीधर।
हँस हँस कर तोहे कंठ लगावेरी ॥ श्यामा०
नंद नदन बृषभानु सुताके।
चरण कमल "सुधाकर,, चित लावेरी ॥ श्यामा०

[तरज] मान मनवा रे मान, अपना रूप पिछान।

आओ रे श्याम ! कृष्ण शोभा धाम ॥ आओ.
हमहु निहारत बाट तिहारी।
कब से खड़ी ओ, गिरवर धारी।
चित चपल चतुर व्रजनारी। सारीरे श्याम ॥ कृष्ण०
वंसीवट तट निकट कुञ्जन में।
नटवर निरत करत मधु बन में।
रास रच्यो हरि सघन चमनमें। बन, में रे श्याम ॥ कृ.
एक बेर फिर ब्रज में आओ।
ब्रज मोहन व्रज राज कहाओ।
फिर गोपियन सँग रास रचाओ। आओ रे श्याम ॥ कृ०
कबहुँ तुम बावन बन आये।
कबहुँ रूप नरसिंह बनाये।
अवध 'सुधाकर, राम कहाये। धायेरे श्याम ॥ कृष्ण०
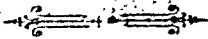
[तरज] ताल, कहरवा मात्रा १६

श्याम श्याम श्याम भँवरा मधुर र गुञ्जत मधु बन में।
आन तान वान मुरली कूकत सजनी सुमनन बन में ॥
चंद्र मुकुट कुण्डल सुभग घूँगर वारे केस।
मन मोहन अरु माधुरी सोहत सुन्दर भेस ॥
मधुर मधुर मुरली अधर, धर, कर सुधर सुरेश।
आनँद घन टेरन लगे, व्रज भूषण मथुरेश ॥
आम जाम काम झूमत कूकत 'सुधाकर, सघन चमनमें।
ज्ञान मान ध्यान बिसरत, मुनिजन सुन र धुन उपवनमें ॥
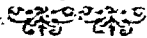
[तरज] मेरे नैनो में तुमही समाये सनम।

गिरधरजी के नैना हैं प्रेम भरे। प्रिय वर जी के नैना०
मोरी लागी लगन प्यारी चितवन पर।
तन मन धनहू की गई सुध ही बिसर।
ऐसी बाँकी चपल चित चोर नजर।
अधरन मधु बैनो है प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के०
आली देखो री कैसी निराली — छटा।
रही कोटिन काम को रूप — घटा।
कर में लकुटी कटि पीत — पटा।
दुख हर सुख देना हैं प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के०
प्यारी प्यारी तिहारी यह झाँकी बनी।
मोसे बरनी न जाय जाकी शोभा घनी।
रूप सुन्दर से शर्माय रही दामनी।
पहरे फूलों के गहना हैं प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के०

जाकी जासे लगी है कभी छूटेगी ना।
घुली प्रेम की गाँठ सो खूटेगी ना।
साँची प्रीत अरीत से टूटेगी ना।
'सुधाकर, पद गहना हैं प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के०

[तरज] तेरी आँखे नहीं। यह तो तीर हैं।

कृष्ण नैना नहीं यह तो बान हैं।
श्याम भौंएँ नहीं यह कमान हैं ॥ हां कृष्ण नैना०
आनँद खान हैं ! सुखद महान हैं ! चातुरवान हैं ॥ हां.
शीस सुन्दर मुकुट की छटा क्या बनी।
कर्ण कुण्डल तिलक भाल शोभा घनी।
कारी अलकें यह नागन समान हैं ॥ कृष्ण नैना०
रत्नमाला सुभग क्रीट पीताम्बर।
कर लकुटिया त्रिभंग अंग मुरली अधर।
धरके ठाड़े रँगीले जवान हैं ॥ कृष्ण नैना०
ज्यों वह तारा गणों में सुखद चंद है।
त्यों चहूँ ओर घेरे सखी वृंद—है।
गावें मिल सारी मोहन को गान हैं ॥ कृष्ण नैना०
शोभती संग वृषभान प्यारी सुता।
मन हरन पर निछावर हैं लावण्यता।
पिया प्यारी के प्यारे बखान हैं ॥ कृष्ण नैना०
तान बंसी नहीं है कठिन तीर है।
मंद मुसक्यान ही जिनकी अकसीर है।
जिस पे वारी 'सुधाकर, के प्रान हैं ॥ कृष्ण नैना०

[तरज] सीताराम रटो रे भैया, राम कहो।

जमुना तीर में गई री मैया बावरी भई ॥ जमुना०
ठाड़ो चपल श्याम तहाँ सुन्दर शोभा ना बरनई।
बाँको अलकन तिरछी चितवन तन मन धन हर लई।
मैया बावरी भई ॥ जमुना०
कोमल तन नैनन बिच कजरा अधरन मुरली लही।
हिये हार हाथन युग गजरा लख शोभा छक रही।
मैया बावरी भई ॥ जमुना०
मधुर तान मोहन अधरन पर ऐसी प्रिय कछु छई।
काहू कहूँ व्रज घन तहाँ जैसो आनँद बन बर सई।
मैया बावरी भई ॥ जमुना०
गल दोऊ बैयाँ डार 'सुधाकर, चूम मुखाम्बुज कही।
योवन दान लगत है मेरो, कुच मंडल लिये गही।
मैया बावरी भई ॥ जमुना०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

※ रचयिता ※
श्री गिरधरदास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

※ सखा श्याम लीला ※

[तरज] सखी म्हांने प्यारा लागे रघुवीर।

बसो जी म्हारा नैणा में नँद लाल।
श्री राधे वृषभान दुलारी गोधन सँग गोपाल॥ बसो जी.
कुसुमल पाग केसरिया जामो।
भाल तिलक ज्यांके झलकत भामो।
लोचन रतन विशाल॥ बसो जी म्हारा०
कृश कटि सुन्दर सुभग नितम्बा।
सोहत सँग श्यामा जग अंबा।
भामनि तरुण तमाल॥ बसोजी०
कुण्डल करण कपोलन लाली।
शोभा मुकुट रसिक बन माली।
अधरन मुरली रसाल॥ बसोजी म्हारा०
श्यामा श्याम सुरेश "सुधाकर,,।
सुनियो दीन विनय चित लाकर।
त्रिभुवन करन निहाल॥ बसोजी म्हारा०

[तरज] कद आवोला कन्हैया म्हारे द्वार—
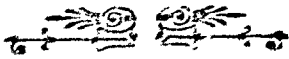
लागी रे जी सांवरिया थांसूं प्रीत लगन पण ना छूटे॥
मैं दधि बेचन जावती नित उठ गोकुल ग्राम।
थे तठां बंसी बजावता, ले सखियन को नाम।
जी में गावंछा रसीला मीठा गीत॥ लगन०
नैनन में झूमे सदा वह कजरा रा नैन।
हिवड़ा में खटके पिया मीठा मधुरा बैन।
म्हारा बालपणा रा प्यारा मीत॥ लगन०
मन मोहन मन में बसो, चितवन में ब्रज राज।
पलकन में ढक राखस्यूं लोक लाज रे काज।
आपां प्रीत करांला इण रीत॥ लगन०
म्हे थांने निरखां सांवरा पट घूंगट री ओट।
थे म्हांसूं नजर मिलावता कर अखियन से चोट।
लीनो मनड़ो "सुधाकर,, म्हारो जीत॥ लगन पण०
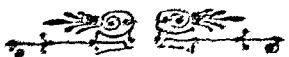
[तरज] म्हारी बैयां न मैयां छुड़ाओ रे,
थां की ओल्यूं घणी म्हाने आवे जी राज—

मोहन सुन्दर सांवरिया मन मोहन सुन्दर माधो
जिव देख्या बिना दुख पावे जी राज॥ मोहन० म०
थाँका मुखड़ा री शोभा न्यारी। शरमावे जी चँद्र उजा०
ललचावे लुभावे रिझावे जी राज॥ मोहन०
पट पीत सुरंगी सोहे। सखियन रो मदन मन मोहे।
नव यदन जोबन लहरावे जी राज॥ मोहन०
जद मुरली री धुन सुन पाऊँ। मैं तो बावरी सी बन जाऊँ।
म्हारो जीव घणो घबरावे जी राज॥ मोहन०
छवि झूमत नैणा रे आगे। प्यारी रे 'सुधाकर, लागे।
चपलासी चित्त चुरावे जी राज। मोहन०

[तरज] दीननपति भगवान— (फिल्मी)
जाओ मोहन घनश्याम--
निरदन, हमको बना! सौतन घर जाओ॥ टेर
छांड के गोकुल छांड वृन्दावन।
छांड के माखन छांड के सखो जन।
ब्रज ग्वालन के प्राण--
बरन दासी कुटिल कुबजा को रिझाओ॥ जा०
तोड़ा है तुमने प्रेम का नाता।
भूलेगी कब? पर, जसुदा माता।
नंद महर जी के प्रान--
प्यारे, प्रेम सदन चाहे मन से भुलाओ॥ जाओ०
याद तुम्हारी जिस दम आवे।
निशिदिन अखियां नीर बहावें।
दर्शन बिन सुखधाम—
सखियां तरसत हैं! हरि नाँय सताओ॥ जाओ०
छांड हमें ब्रजराज "सुधाकर,,।
तुम सुख पाइयो मथुरा जाकर।
हमतो जपेंगी तेरो नाम—
नटवर मनहर गिरधर! तुम ही दुराओ॥ जा०

[त.] जी म्हां ने प्यारा र लागे सांवरिया मोहन नंदकिशोर।
म्हाने वृन्दावन ले चालोजी म्हारा साँवरिया गोपाल।
मैं बेटी वृषभानु की जी थे नँदजी रा लाल।
थांकी म्हांकी जोडी बणी छे, सुन्दर रूप रसाल॥
जी म्हाँ ने वृन्दावन०
मोरमुकुट माथा पर साजिया चंचल नैन विशाल।
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया घूँगर वारा बाल॥
जी म्हाँ ने वृन्दावन०
क्रीट कुंडल आनन में सोहे केसर चंदन भाल।
पीत वसन त्रिभुवन मन मोहे झाँकी तरुण तमाल॥
जी म्हाँ ने वृन्दावन०
गलवैजन्ती माल बिराजे मोती [illegible]
शोभा देख मदन मन लाजे पेसा छो दीन दयाल॥
जी म्हाँ ने वृन्दावन०
छबि नटनागर श्याम सुधाकर निशिदिन करत निहाल।
तट जमना पर बंसी बजाकर चालो छो चाल मराल॥
जी म्हाँ ने वृन्दावन०

[त.] रे मन कर उस दिन की याद कि जिस दिन चला-
चल चल होगी।
होजी म्हारा मन मोहन घनश्याम सजन सांवरिया सुखदाई।
दरसण कद द्योला, सुखधाम रहूं बिन दरसण अकुलाई॥
होजी म्हारा मन मोहन०
प्रभुजी थांकी नित उठ जोऊं बाट।
निहारुं जल भरतां जमना घाट।
होजी म्हारा मनमें रहत उचाट उदासी तनमें घन छाई॥
होजी म्हारा मन मोहन०
रहोजी म्हारा नैणा में नँद-लाल।
मनोहर नटवर — रूप रसाल।
होजी थाने ना विसरूँ व्रजलाल फिरूँ बिरहनसी घबराई॥
होजी म्हारा मन मोहन०
करीछी म्हासूं क्यां ? थे झूटी प्रीत।
जगत जाणे जीने अनरीत।
होजी म्हारा बालपणारा मीत कन्हाइ थांकी देखी चतुराई॥
होजी म्हारा मन मोहन०
आओजी पिया प्यारा नंद कुमार।
"सुधाकर,, त्रिभुवन रा सिरदार।
होजी थासूं पीतम हेत लगार थणी जीवनधन दुखपाई॥
होजी म्हारा मन मोहन०

[त.] होजी म्हारा राधा गोपी नाथ री बंसी मन हर-
लीनो जी।
होजी म्हारा सांवरिया गोपाल बिहारी वृंदावन वासी
म्हारे घर आओजी जशोदा लाल मुरारी मोहन सुखरासी
कन्हाइ थांकी नित उठ निरखूँ चाल।
चलत जैसे सुन्दर — बाल — मराल।
निहारूं थांका चञ्चल नैन विशाल खड़ी शुभ दर्शन की प्यासी
मुकुट छवि निशिदिन करत निहाल।
मनोहर घूँगर वार — बाल।
रंगीली गल वैजन्ती माल लजावे चांद पूर्ण मांसी॥
सुहावे सँग दाऊ दीन दयाल।
लुभावे मन शोभा तरुण तमाल।
सजन थांका मोहन वचन रसाल प्रेमकी डार दई फांसी॥
"सुधाकर,, आई शरण व्रज बाल।
भई थांका प्रेम में विकल विहाल।
प्रभुजी म्हारो मेटो जग जंजाल अरज करे चरणां की दासी
म्हारे घर आओजी०

[त.] ओए सखी राधे नंदकुमार मधुर छवि छाई नैननमें
सखी मेरा साँवरिया गोपालरी बंसी बाजे मधुबन में।
एरी मेरा व्रजमोहन नँदलाल सखिन सँग नाचे कुञ्जनमें॥
बहत जहां जमना, निर्मल नीर।
सुहावत शीतल, सुरभ समीर।
उड़ावत गोपियन, जन के चीर।
एरी तहां सुन्दर श्याम शरीर चपल दुति साजे कुञ्जनमें॥
रहे खिल नव कमलन के फूल।
मिटावन बिरहन मन के शूल।
सुहावन साजन के अनुकूल।
एरी तहां तन मन की सुध भूल मदन घन लाजे कुञ्जनमें॥
खड़ी सब सखियां परम रसाल।
श्री राधे ललितादिक व्रज बाल।
निहारत नंद नदन को ख्याल।
एरी जासे त्रिभुवन होत निहाल सरस ऋतु राजे कुञ्जनमें
भइरी मैंतो धुन सुन विकल अधीर।
प्रेम की होन लगी हिय पीर।
"सुधाकर,, काह कहूं तोहे बीर।
एरी वाकी चितवन धन्न को तीर लग्यो मेरे आजे कुञ्जनमें
सखी मेरा सांवरिया०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

राधा कृष्ण मुरली वाद

※ रचयिता ※
श्री गिधर दास बोहरा कवि "सुधाकर"
टोंक (राजस्थान)

दोहा श्री राधा नव नागरी मन ... म । करत परस पर विविध, विधि लीला ललित ...

कृष्ण

मुरलिया देदो राधा प्यारी ।

राधा

मुरलिया मैं ना लीनी मुरारी ॥

कृष्ण

चंचल नैना मोहन बैना ।
मंद हसन सखी उन सुख दैना ।
चंद्र बदन मन हारो ॥ मुरलिया देदो०

राधा

प्रेम सदन त्रिभुवन मन भावन ।
नीरख तन मुख मदन लजावन ।
नंद नदन गिरधारी ॥ मुरलिया मैं ना०

कृष्ण

प्रिये वादनि मोहे नांय खिजाओ ।
देदो बाँसुरी नांय छिपाओ ।
श्री वृष भानु दुलारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

मूल कहूँ सोनन डिंग आओ ।
मूंठ ही हमरो नाम लगाओ ।
देखी-बात तुम्हारी ॥ मुरलिया मैं ना०

कृष्ण

चोर लियो तुम तन मन मेरो ।
माधुरी कर लियो चरणन चेरो ।
मोहनी हमपर डारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

चोरत हो तुमही सबके मन ।
कुञ्ज गलिन में नित दधि माखन ।
आनँद घन बन चारी ॥ मुरलिया मैं०

कृष्ण

छीनलियो चित चितवन मोरी ।
करदियो कामण तुम व्रज गोरी ।
व्रज भूषण व्रज नारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

हम नहीं जानत कामण टोना ।
नाहक हमरो नाम धरोना ।
जीवन धन सुख कारी ॥ मुरलिया मैं०

कृष्ण

मोरी मुरलिया तुमही छुपाई ।
कहत है सुन्दर आंख लजाई ।
मनहर कामण गारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

श्याम तनक नहीं तुमसे दुराऊं ।
देखलो भूषण वस्त्र दिखाऊं ।
खोल के चूनर सारी ॥ मुरलिया मैं ना०

कृष्ण

चतुर सखी मेरो मान हरेगी ।
गोपी जन कोउ नाम धरेगी ।
रार करेगी महतारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

चपल छैल तुम मानत नाहीं ।
सांच कहत हूं सोगन खाहीं ।
मानो जी प्रेम पुजारी ॥ मुरलिया मैं ना०

कृष्ण

जो नहीं दो मोरी बांसरी ललना ।
तो तुमरे ढिग आऊंगो कल ना ।
सोचलो नेक विचारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

स्याम सघन ब्रज के रसिया हो ।
नस नस में पिया तुम बसिया हो ।
जाओगे कित हित टारी ॥ मुरलिया मैं.

कृष्ण

अँगियां मांय छुपाकर वंसी ।
बात बनात हो तुम चतुरन सी ।
छल भरी प्रीत दिखारी ॥ मुरलिया देदो.

राधा

वृन्दावन के सुमनन वन में ।
नाचो सखी बन ! तब सखियन में ।
पाओगे मुरली अधारी ॥ मुरलिया मैं ना.

कृष्ण

जमुना तट नित बीन बजाऊं ।
गोपी ग्वालन सँग सुख पाऊं ।
रस में विष भयो भारी ॥ मुरलिया देदो.

राधा

ब्रज वनितन की वेरन सोतन ।
टेरत निशिदिन करत वियोगन ।
तन मन कर दियो छारी ॥ मुरलिया मैं.

कृष्ण

लाख तुम्हें ललना समझाई ।
पर चित हूं में फूंक न आई ।
ओ बरसाने वारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

लो यह मुरलिया श्याम "सुधाकर,,
तान सुनाओ ध्यान से गाकर ।
मैं बन जाऊं मत धारी ॥ मुरलिया मैं०

[तरज] अरे मन बोल रे बोल ।

देखो मानो नँदलाल । छांडो मोरी नरम कलाई ॥ देखो०
ग्वालन वाणी को सँभाल, मतना मुख से अट पट बोले ॥
क्यों मोहन हम सँग इटलाओ ।
जा सोतन सँग प्रेम बढाओ ।
झूठी सौगँद खाओ ना, मैं जानू तुमरी चाल ॥ देखो०
मैं ग्वालन हूँ नार नवेली ।
मतना छेड़ो जान अकेली ।
सुनलो गिरधर पहली ना, फिर दूंगी थाँने गाल ॥ देखो
तू मग में मटकावत जाती ।
योवन मद में मस्त लखाती ।
बढ कर बात बना ती क्यों मैं जानू तेरो हाल ॥ ग्वाल
बस मत ज्यादा बात बनाओ ।
दान हमारो देकर जाओ ।
लो, यह ! माखन खाओ कह यों चली 'सुधाकर, ग्वाल ॥ ०

[तरज] छुपे हो कहां जाके प्यारे कन्हैया ।

मोहन तोरी वंसरी कैसी बजी रे ॥ टेर
मीठी रसीली रँगीली सुरीली तान ।
ऐसी सुनाई मोरी सुध बिसरी रे ॥
भूल गई रूब गृह काजन को --
श्रवणन सुन धुन प्यारे हरी रे ॥ मोहन०
मैं जल भरन गई जमना पर ।
छेड़ करन मोरी फोरी गगरी रे ॥ मोहन०
मानों मोहन नहीं जाय कहूँगी ।
मात जसोदा से हम सगरी रे ॥ मोहन०
श्याम सुन्दर तुम मनोहर मुरली ।
अधरन ऊपर खूब धरी रे ॥ मोहन०
प्रीत करी कुबजा सँग "गिरधर,, ।
छांड गये हमें कैसी करी रे ॥ मोहन०

[तरज] दिन की आहें न गई रात के नाले न गये ।

आजा २ ओ मेरे बांसरी वाले आजा ।
अपने दासों को मुसीबत से बचाले आजा ॥ आजा०
तेरी महिमा न किसी से हुई वर्णन अबतक ।
खोजते २ पग पड़गये छाले- आजा ॥ आजा०
दीन बंधो है तेरा नाम जगत में रोशन ।
दीन दुखियों के प्रभो पालने वाले आजा ॥ आजा०
मैं सिवा तेरे कहां जा, किसे फरियाद करूँ ।
तूही है तूही है सब जानने वाले आजा ॥ आजा०
वीनती अबतो "सुधाकर,, की भी सुनले प्यारे ।
आरजू मेरी के पहचान ने वाले आजा ॥ आजा०

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

* रचयिता *

श्री गिरधर दास चोहरा कवि "सुधाकर"

टोंक (राजस्थान)

राधे तुम बड़ भागवती, कौन तपस्या कीन ।
तीन लोक तारन तरन, सो तुमरे आधीन ॥

वृक्ष परी का लाड़ली, सांच कहो मोय आज ।
गरजी क्यों रिसियाय के मुखफेर्यो केहि काज ॥

[तरज] मेरा हाल उन श्याम प्यारे ने कहा ।

ना रूठो मनाऊं तुम्हें राधे रानी ।
तजो मान को मानती ओ सयानी ॥

काहेको फेर लियो मुख सुन्दर, बोलत हो मधु बैन नहीं ।
कछु भूल भई तो बताओ प्रिया, न खिजाओ छिपाओ नैन नहीं ॥
दिन सोच ही सोच में बीत गयो, पर प्यारी कटेगी रैन नहीं ।
मनहारी तुम्हारी छबीली छटा बिन कृष्ण को आवत चैन नहीं ॥
हँसो लाडली प्रेम लीला लुभानी । ना रूठो मनाऊं०

केहि काज भई व्रजराज से आज, नराज कहो तो सही ललना ।
अपनो प्रिय प्रीतम जान सदा, जेहि नेक बिसारत थी पल ना ॥
घनश्याम बिना व्रजवास तुम्हें, निशि बासर आवत थी कल ना ।
तिनको केहि हेतु भुलाय रसीली, वियोग में सीख लियो जलना ॥
बनी बावरी क्यों सखी मन लुभानी ? नारूठो मनाऊं०

रिसियाय के राधे लगी कहने, हमरे ढिग मोहन काहे को आओ ।
व्रजमें व्रज नारी बिहारी बनी, ललिता चन्द्रावल गोपी पे जाओ ॥
कपटी तुमरो मन है गिरधर, छल की न हमहु से बात बनाओ ।
जिनके सँग रास बिलास लहो, तिनके सँग झूठो स्नेह रचाओ ॥
ना हमको रिझाओ करो मेहर बानी । नारूठो मनाऊं०

इही भांति इते हठ ठानरही, नटनागर सूं वृषभानु दुलारी ।
मनमोहन ने उठ बांह गही, अरु कहन लगे सुन प्राणन प्यारी ॥
हमरो तुम बिन तुमरो हम बिन, बनि है नहीं बानक लेहु निहारी ।
पूरण ब्रह्म कहावत हूं, तुम पूरण शक्ति हो आदि हमारी ॥
"सुधाकर" को प्यारी सुधा तुम सुहानी । नारूठो मनाऊं०

[तरज] मोहन कर हमसे बरजोरी-
तुम इतराओ ना ।

मोसे ना बोलो साँवरिया ,
चलो हटो जाओ ना ।
काहाँ हाथ लगा मुखसरिया-
सौगन खाओ ना ॥ मोसे ०
जाओ रे पिया मोय नाँय खिजाओ ।
जा सोतन सँग प्रेम बढ़ाओ ॥
मत झूटा विश्वास बँधाओ, जान मोहि-
बावरिया बात बनाओ ना ॥ मोसे ०

सांच कहूं मैं कँवर कन्हाई ।
प्रीत लगा तुमसे पछताई ।
देखलई तुमरी चतुराई नटवरिया-
नागरिया, बात बनाओ ना ॥ मोसे०

वा एक निर्लज ठगनी नारी ।
कुबजा कुटिल कुरूप गँवारी ।
ता पर रीझे श्याम बिहारी, मधुकरिया-
मनहरिया, कुछ शरमाओ ना ॥ मोसे०

दासी सेती प्रीत लगाकर ।
व्रज वासी हरि श्याम "सुधाकर" ।
राधा सी मुख चन्द्र भुलाकर गोपियन रो-
गिरधरिया नाम लजाओ ना ॥ मोसे०
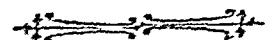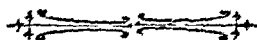
[थियट्रीकल गुजराती ढंग का गायन]

हवे जैस्यूं, हवे पण जैस्यूं राज ।
रँगवीना तमे आवज्यो ॥ हवे०
बरियाविहारी, बैयाँ न हमारी, छूवोबनवारी पछी ऐस्यूँ
छी ऐस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रँगवीना०
मैं जल भरन जातरहीं जमना ।
तुम काहे मग रोकत ललना ॥
मात जसोदा से कहिस्यूं,
मैंतो कहिस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रँगवीना०
गोरस वेचन घरसे निकसी सास ननद की चोरी सूं ।
तुम झगरत हो कर पकरत हो मोहन बाराजोरी सूं ॥
नहींरहिस्यूं ! नहीं रहिस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रँग०
सीसपे गागरि धर ब्रजनागरि कलस सजा दोउ बैयाँ पर ।
चली चतुर चितचोर 'सुधाकर, मारत नैंन कन्हैया पर ॥
सुखपैस्यूं ! सुखपैस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रँग०

[त.] जमाना छान मारा है यह दुनियां देखी भाली है ।

श्री राधे नागरी प्यारी तू बृन्दावन की रानी है ।
विहारन लाडली ललना जगत का मन लुभानी है ॥
चिवुक सांवल विन्दु छवी द्युति इन्दु द्वन्द विनाशनी ।
कनक कुण्डल सुभग झलकत कपोलन मृदु हासनी ॥
ललित मुखमें पान सरस महान प्रेम प्रकाशनी ।
नासिका शुक दृढ नितम्बनी अधर विम्ब विलासनी ।
तू मृगनयनी है पिक बैनी है सुख दैनी है स्यानी है ॥ श्री.
मदन मोहन सो लता सोहन दशन जिमि दामनी ।
चपल चितवन निकट अलकन सुभग लटकन नागनी ॥
ब्रषभानु नंदनी दुख निकंदनी जगत वंदनी भामनी ।
चंद्र वदनी चित हरनि मुख नवल कमलन कामनी ॥
मनोहर माधुरी शोभा "सुधाकर,, ने वखानी है ॥ श्री०

[तरज़] एरी सखी सांवरो सजन लागे प्यारो री ।

पिया तुम प्रीत करी ! हम जानी रे ॥ पिया०
दे विश्वास गये हरि मथुरा ।
कुवजा संग ऋत मानी रे ॥ पिया०
कारो है तन तैसो मन भी है कारो ।
कपट भरी है तोरी बानी रे ॥ पिया०
आनँद घन हित चित की बतियां ।
जानत सब राधा रानी रे ॥ पिया०
बार बार तोहे समझाय हारी ।
मानी ना हमरी कहानी रे ॥ पिया०
सुखद "सुधाकर,, तुम बिन हमरी ।
चिन्ता में देह सुखानी रे ॥ पिया०

[तरज] भज मन सीताराम ।

डोले मन गोकुल गाम । निशि दिन घूमत ॥ डोले०
मोहन मदन हरन मन वाला ।
ब्रज धन जग जीवन नँदलाला ।
लख लावण्य ललाम ॥ डोले मन०
सुन्दर सुखद सुशील सुहावन ।
लोचन ललित ललन मन भावन ।
अनुपं छवि, सुख धाम ॥ डोले मन०
चन्द्र लजावन सुभग सयानी ।
श्री ब्रषभानु सुता गुण खानी ।
सोहत सँग ब्रज बाम ॥ डोलत मन०
चितवन चंचल सुभग "सुधाकर,, ।
कोमल अँग कुच मण्डल ता पर ॥
भरे दीधि सुत घनश्याम ॥ डोले०

[तरज] एक फिलमी गायन ।

सुनादे सुनादे सुनादे मधुरी–
बांसुरी की तान सुनादे मधुरी······ई ॥ सु०
श्याम मोहन पिया वंसी वजादे ।
मधुर मधुर धुन फिर से सुनादे ।
बनादे २ बनादे बावरी ॥ बांसुरी की०
ऐसी सुना मुरली माधो वन में ।
प्रेम की एक नई मोरे तन में ।
बसादे २ बसादे नगरी ॥ बांसुरी की०
कान्ह कँवर मत कर चित चोरी ।
अपने ही रंग में साजन गोरी ।
रँगादे २ रँगादे चुनरी ॥ बांसुरी की०
श्याम "सुधाकर,, कृष्णमुरारी ।
प्रेम की दुविधा दुरित हमारी ।
मिटादे २ मिटादे सगरी ॥ बांसुरी की०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

रचयिता
श्री गिरधर दास वोहरा, कवि
टोंक (राजस्थान)

विरहन की पुकार

(तरज) ओजी म्हारे टप टप चूवे छे पसीनो ।

मैंतो थांकी बाट जोऊंछूं गिरधारी ।
म्हारे घर आयो जी मोहन बनवारी ॥ मैंतो०
सांवरिया थांकी गैल निहारूं प्यारा लाल जी ।
थे आयो म्हारा आंगणिया में रूपरसाल जी ॥
ओ जी म्हारा हिवड़ा रा प्रेम पुजारी ॥ म्हारे घर०
मोहन जी प्यारा थांकी सी झांकी थांकी सोहनी ।
ओ कामणगारा कारा केसां री छवि मोहनी ॥
तीखा २ नैण मदन मन हारी ॥ म्हारे घर०
मैं कोरी २ मथणी में माहिड़ो जमाय के ।
जी मीठी २ मिसरी माखन में मिलाय के ।
थांने म्हारे हाथ खवाऊं सुखकारी ॥ म्हारे घर०
ओ श्याम थांने गोदूयां में लेले चुचकार स्यूं ।
ओ कान्ह थांका मुखड़ा री शोभा ने निहारस्यूं ॥
जी लागे छवि चन्द्र छटा सी प्यारी प्यारी ॥ म्हारे घर०
अलबेला थांकी घूमे छे झांकी म्हारा नैन में ।
ओ छैला थेंतो मोह लीनी जी मीठा बैन में ॥
मैं भूली सुध श्याम "सुधाकर, सारी ॥ म्हारे घर०

(त.) मने तारो ओ उवारो स्वामी आप सब जगत तारेला ।

हरि आयो जी आयो दरस दिखाओ -
ना तरसाओ मोहन सुन्दर श्याम ।
म्हारी पीर मिटाओ प्रेम बढाओ-
नैनन में बस आयो जी ओ अभिराम ॥ हरि०
साजन थांकी सांवरी झांकी-
बांकी सजीली बणी सुख धाम ।
चञ्चल चितवन चोर लियो म्हारो-
मोती सो मन बिन दाम ।
ओ घनश्याम, लीलाललाम, टेर करे ब्रजबाम ॥
हरि आयो जी०
प्रेम अगाध में बूड़ गई मति-
भूलगई घरबारको काम ।
बावरी सी भई पंथ निहारूं-
बैठी जपूं थांको नाम ।
ओ घनश्याम- लीलाललाम टेर करे ब्रजबाम
हरी आ ओ जी आ ओ०
आंगलियां री मूंदड़ली पिया-
बैयां में कीनो छे मोकली धाम ।
देह गले थांका चरणां री चिन्ता में-
सूख गयो सब चम ।
ओ घनश्याम लीलाललाम टेर करे ब्रजबाम ॥
हरी आ ओ जी०
ओ नटनागर श्याम "सुधाकर"-
शीश झुकाय करूं छूं प्रणाम ।
जावे छे जीव कलेजा सूं थांविन राखूं ली कबलग थाम ।
ओ घनश्याम लीलाललाम टेर करे ब्रजबाम-
हरि आ ओ जी०

[तरज] सुरमांरी डाबी तो म्हारे हाथ देदी ज्यो ।

म्हांने पहल्यांई मेवाड़ा राणा क्यों ना बरजी ।
म्हारा जिया में समाय गया गिरधर जी ॥ म्हांने०
बाल पणा सूं प्रीत हमारी ।
गिरधर जी सूं लागी प्यारी ।
अबतो यो तन मन बलिहारी, करदियो उनपर जी ।
कोमल कोमल नैना सुन्दर ।
शीश मुकुट कटि पर पीताम्बर ।
मुरली श्याम सजी होटां पर, मनड़ो लियो हर जी ॥म्हां०
लाग गई अब लाज कहांकी ।
हिवड़ारे बिच रमगई झांकी ।
गिरधर बन गई मीरां थांकी चरणां चाकर जी ॥ म्हां०
रूठो आप जगत सब रूठे ।
घुली प्रेम की गांठ न छूटे ।
प्रीत "सुधाकर,, से नहीं टूटे, छूटे सब घर जो ॥म्हां०

दल लोचन प्रभो यह है निवेदन दास का । निज चरण की देकर शरण सेवक बनालो आप का ॥

ने देखी जग की रीत मीत सब झूठे पड़गये ।
मोहन घंश्याम विहारी दरस दिखाजा ।
मदन छवि धाम मुरारी म्हारे घर आजा ॥
थांकी बाट सांवरिया नित मधुवन में जोऊं छूं ।
थांकी ओल्यूं साजन अंसुवन मुखड़ो धोऊं छूं ।
म्हारा नैनां निसि दिन बरसे ।
दरसण बिन जिवड़ो तरसे । ओ…
म्हारे लागी हिवड़े अगन लगन की आर बुझाजा ॥ ओ०
तीखी २ अंखियां सुन्दर मनहर घूंघर वाराकेस ।
मीठी २ बतियां छल बल नटवर कामणगारा भेस ।
म्हारी सुरता में जब छावे ।
तन मनकी सुध बिसरावे । ओ…
मैं तड़पूं सब दिन रैन लाल जी धीर बँधाजा ॥ ओ०
पाणीड़ा रो मिस कर घरसूं नित जमनापर जाऊं छूं ।
छाने २ मन मन्दिर में थांने कान्ह बुलाऊं छूं ।
घड़ी पल छिन चैन न पाऊं ।
जिवड़ाने घणो समझाऊं । ओ…
ओ मीरां का गोपाल लाल म्हारा मन का राजा ॥ ओ०
माथे मथणी धर गोरस की कुञ्जन मांय पुकार करूं ।
जो मधुवन में मिलो 'सुधाकर, तो पलकन से प्यार करूं ।
मैं बन जाऊं ब्रजकी नारी ।
थे छैल बणो गिरधारी । ओ…
मैं गोपी बणूं रसाल ग्वाल बन माखन खाजा । ओ मदन०
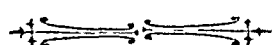
(तरज) जियरा राम भजन करले रे ।

सखीरी कर प्रीतम सँग प्रीत । अपनो आपो जीत ॥ स०
सांचो नेह लगाले सजनी ।
बनजा चंद्र चकोर सी रजनी ।
मन मन्दिर के मांय बसाले साजन परम पुनीत ॥ स०
प्रीत की रीत समझले पूरी ।
शीश चढै चरणन की धूरी ।
अपनी अपनता आप मिटा कर नैन निरख निज मीत ॥
विपियन को तज राग दिवानी ।
दुनियां है सब स्वप्न कहानी ।
माया प्रबल जगत की सारी ममता है भयभीत ॥ सखी०
मोर कही तू सुन अलबेली ।
अपने पिया की बनजा सहेली ।
सुरता मांय "सुधाकर,, गा नित पीव मिलन के गीत ॥
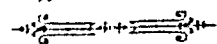
(त) ओ जी म्हारा राधा गोपीनाथ री बंसी बाजी तो सही ।

ओ जी म्हारा सांवरिया गोपाल विहारी वृन्दावन वासी ।
म्हारे घर आओ जी जसोदा लाल मुरारी मोहन सुखरासी ॥
कन्हाई थांकी नित उठ निरखूं चाल ।
चलत गति सुन्दर बाल मराल ।
निहारूं चञ्चलनैन विशाल खड़ी शुभ दरशन की प्यासी ॥
मुकुट छवि निसि दिन करत निहाल ।
हरत मन घूंघर बारा बाल ।
रंगीली गल बैजन्ती माल चमक रही चञ्चल चपलासी ॥
सुहावे संग दाऊ दीन दयाल ।
लुभावे मन शोभा तरुण तमाल ।
सजन थांका मोहन बचन रसाल प्रेम की डारदई फांसी ॥
'सुधाकर, आई शरण ब्रज बाल ।
भई थांका प्रेम में विकल विहाल ।
प्रभुजी म्हारो मेटो जगजंजाल अरजकरे चरणा की दासी ॥
म्हारे घर आओ जी जसोदा लाल०
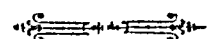
(तरज) मन मोहन प्यारे नैनन के तारे आप हो ।

मेवाड़ा राणा गिरधर सँग लागी म्हांकी प्रीत ॥ टेर
निर्मल तन ने उजलो कर लियो मान मोह ने जीत ।
मन मन्दिर में राज विराजे झांकी परम पुनीत ॥ मेवाड़ा०
सांचा मन सूं सेवा करस्यूं जग से होय नचीत ।
प्राण सूं भी प्यारा म्हारा बाल पणारा मीत ॥ मेवाड़ा०
स्नान कराऊं वस्त्र सजाऊं भोग धरूं नवनीत ।
चँवर दुलाऊं चरण दबाऊं गाऊं मधुरा गीत ॥ मेवाड़ा०
मीरा दासी अब गिरधर की सांच भई परतीत ।
होनी हो सो होय "सुधाकर,, मत ना हो भयभीत ॥
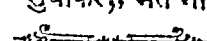
प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

[तर्ज] अखियाँ मिलाके जियाभरमाके चलेनहीं जाना।

विनती हमारी करें हम सारी गिरधरधारी। टेर

तोरी है शान न्यारी अन न्यारी वान न्यारी।
मीठी मुस्कान न्यारी मुरली की तान न्यारी।
प्यारे बनवारी जाऊं बलिहारी गिरधरधारी॥ विन०

आओजी आओ कान्हा माखन चुरानेवाले।
वंसी की प्यारी प्यारी रागों में रिझानेवाले।
छवि चितहारी सोहे अति भारी गिरधरधारी॥ विन०

फिरसे ग्वालोंके भैया गौओं को चराने आओ।
फिरसे जमुना पे रास लीला को रचाने आओ।
जोवें मग सारी ठाड़ी व्रजनारी गिरधरधारी॥ विन०

बिगड़ी बनाओ मेरी आओ जी 'सुधाकर' प्यारे।
दासी के जिया में समाओ ओ नैनन तारे।
ओजी ओ मुरारी हरि हितकारी गिरधरधारी॥ विन०

[त०]भूलनेवालेभूलगये फिर यादक्योंउनकी आके सताए।
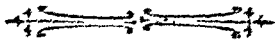
छोड़गये ब्रजराज हमें तब नैननमें काहे फिर २ आओ।
जाओ बसो पिया, सौतनके संग—
जानूंगी जब, मेरे मनसे भी जाओ॥ छोड़०

वोहीमुरलिया,वोहीलकुटिया,वोहीकमलिया,वोहीसँवरिया।
मेरे तो चित में वोही छवि है—
तुम जाके छुपे तो इसे भी छुपाओ॥ छोड़०

भूलगये जब बात हमारी, सूरत ही चितवन से बिसारी।
फिर भी सताए क्यों याद तुम्हारी—
कान्ह जरा मोहे यह तो बताओ॥ छोड़गये०

तुमनेहीजमुनापेवंसीबजाकर,तुमनेहीबावरीहमकोबनाकर।
प्रेम की आग लगाई है तुमनेही—
तुमही "सुधाकर,, आके बुझाओ॥ छोड़गये०
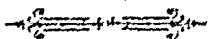
[तर्ज] जाओरी आली श्याम पिया को समझाओ—

ऊधो जी तुम जाओ उन्हीं को समझाओ—
बनाओ नहीं यहां बतियां॥ हां···टेर

चोटकभी जिसने नहींखाई। वह क्याजाने पीर पराई।
जरा! सोच के तुम्हीं बतलाओ—
बनाओ नहीं दिन रतियां॥ हां···ऊधोजी०

घायलकी गत घायल जाने। पीर पराई कौन पिछाने।
हमें! ज्ञान न अपना सुनाओ—
दिखाओ मत कोई पतियां॥ हां···ऊधोजी०

बेदर्दी को दर्द न आवे। आपहँसे अरु हमको रुलावे।
ऐसे! कपटी के गीत न गाओ—
जलाओ मत सोगी छतियां॥ हां···ऊधो जी०

या ब्रजसे हरि मथुरा जाकर। भूलगयेहमें श्याम 'सुधाकर,
फिर! नाहक मन ललचाओ—
सुनेगी नहीं कछु सखियां॥ हां···ऊधोजी०
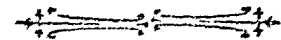
[तर्ज] लागे सजनी सांवरिया के नैना बनकर तीररे।

बैरण बनसी मनमोहन की बाजी जमना तीर रे॥ टेर

कदम की छाऊँ में बीन बजावत।
बावरी ब्रज बनितन को बनावत।
का, करूं सजनी चैन न आवत जिया भरमावत—
कैसे राखूं धीर रे धीर रे धीर रे॥ बैरण०

नवल योवन मेरो बारी उमरिया।
जात वृन्दावन भूली डगरिया।
मैं गोकुल की कान्ह गुजरिया श्याम कँवरिया—
साँवरिया बेपीर रे पीर रे पीर रे॥ बैरण०

ऐसो मधुर रस गान सुनायो।
ऋषि मुनि जनन रो चित भर मायो।
मन ललचायो कमल खिलायो चलत थकायो—
कालिंद्री रो नीर रे नीर रे नीर रे॥ बैरण०

श्रवणन बिच मुरली धुन पाकर।
निज निज ग्रह को काज भुलाकर।
दौर परी सब सखियां "सुधाकर,, सुध बिसराकर—
उलट पुलट सज चीर रे चीर रे चीर रे॥ बैरण०

[तर्ज़] मुखड़ा मेरा यह चांद सा है उजला आजा—
परदेसी बांके बलमां।
ठाड़ी कुञ्जन में जोऊं कृष्ण बाट प्यारे आजा आजा
मन मोहन सुन्दर साँवरा ॥ हां···ठाड़ी०
ऐसी कहा भई भूल साँवरिया।
छांड गये तुम हमरी नगरिया।
बारी उमरिया बीती जातहै ! मोरी तुम बिन साजन,
बारी उमरिया बीती जातहै ॥ हां···ठाड़ी ०
सुन्दर श्याम सोतन सँग छाये।
याद क्यों उनकी हमको सताये।
निंदिया नहींआये दुख पायहै ! मेरो उन बिन तनमन
निंदिया नहींआये दुखपायहै ॥ हां ं ठाड़ी०
पिया बिन निशिदिन चैन न पावें।
रोय २ सखीयां नैन गमावें।
घुट २ मन जियरा भाग्योजायहै ! कहा पड़गईउलझन
घुट २ मन जियराभाग्योजाय है ॥ हां ं ठाड़ी०
घायल की गत घायल जाने।
विरह की चोट "सुधाकर" माने।
गाने मस्ताने कोई गाय है ! वन प्रेमकी जोगन—
गाने मस्ताने कोई गायहै ॥ हां···ठाड़ी०
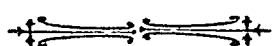
[तरज़] नैना लागे सांवरिया से मोरे सखी।

मुरली वाले सांवरिया तोरी, मुरली की तान।
तन मन छीनो, वश कीनो, हरलीनो मेरो प्रान ॥ मु०
श्याम जबसे सुन पाई। बावरी सी बन आई।
भूल गई सब चतुराई।
सुध बिसराई अकल गँवाई, सुन २ सुन्दर गान। मु०
रसीली कामण गारी। अजब धुन मोहन प्यारी।
बजावत कुञ्ज बिहारी।
प्रेम कटारी लागत कारी। सजनी सांची मान ॥ मु०
'सुधाकर' बसगई तनमें। वह छवि घूमत नैननमें।
बनूंगी अब जोगनमें।
कुञ्जन वन में श्याम लगन में। गाऊंगी यही गान ॥ मु.
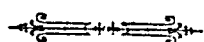
सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

[तरज़] भारत में भगवान, प्रान बन आजाओ।

नैननवा के बान, सखीरी मोरे लागेरी ॥ नैन०
मैं जल भरन जायरही जमुना।
बीचमे मिलगये कान्ह ! भाग मोरे जागे री ॥ नैन०
छीन झपट मोरे माथे से गागर।
जोबनवा को दान ! श्याम मोसे मांगे री ॥ नैन०
हँस मुस्कावत बीन बजावत।
गावत मधुरो गान ! प्रेम रस पागेरी ॥ नैन०
सुयश न बरनो जात "सुधाकर"।
आनँद देव महान ! सकल दुख भागे री ॥ नैन०

[त.] सखी ब्रज में खेले होरी, मोहन सँग राधे गोरी।
सखी पनियांभरन नहींजाना, पंघटपे खड़ाहै कान्हा। स
मैं जल जमुना भरने जातरहीमारग निकस्यो आना।
छीनझपट मोरेमाथे की गागर, बैयांपकर लिपटाना ॥ स.
बीन बजावत जिया भरमावत, मधुर २ कछु गाना।
हँस मुस्कावत सैन चलावत मनमें कपट भरिआना ॥ स.
सोतन के सँग प्रेम बढ़ावत, हमसे करत बहाना।
ऐसो नटखट निपट अनारी, मन मोहन मस्ताना ॥ स.
श्याम 'सुधाकर' बावरीकरदई प्रेमको जाल बिछाना।
सास नँनद मोसे आज लरेगी, देगी जिठानी ताना ॥ स०

[त.] धीरे २ आरे बादल धीरे २ जा···मेरा बुल २ सो-
आजा २ कृष्णा प्यारे आजा। कछु मीठो २ गा···
प्रेम की बंसी मधुर बजाकर, मोहन राग सुना ॥ आ०
तोरी बंसी ने पिया मन हर लियो मेरो···हर
बांकी चितवन की अदाने कर लियो चेरो···कर.
गा, तुझे मेरी कसम कछु तान मधुरी गा··· ॥ प्रेम०
लेगई हैं छीन मन, मोहन तेरी आखें···हां तेरी.
उड़के आजाते कभी होती अगर पांखें···हां अग.
ला, दया करके जरा अब ध्यान हमपर ला··· ॥ प्रेम०
रोरही हैं गोपियां सब याद में तेरी···यादमें.
होगई तन में "सुधाकर" मनकी एक ढेरी···मन.
मत सतारे निर्दई, विरही को धीर बँधा··· ॥ प्रेमकी०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

✻ रचयिता ✻
श्री गिरधरदास वोहरा कवि
टोंक (राजस्थान

✻ ग़ज़ल गुज़रा ✻

सौबार मिटे हम जिसके लिये वह यार हमारा हो न सका।
एक बार हुआ दीदार सनम, वह प्यार दुबारा हो न सका॥
उस रश्के क़मर की आंखियों ने गो हमको इशारे हज़ार हुवे।
फिर भी दिलदार की नज़रों से नज़रों का नज़ारा हो न सका॥
बुलबुल ने बहुत चाहा गुल को सदके भी हुई क़ुरबाँ भी गई।
लेकिन सैयाद की चालों से गुलशन में गुज़ारा हो न सका॥
ओ शमअ रोशन जल २ कर तुमने भी गिला तो खूब किया
इस दर्द का पर परवाने को इज़हार तुम्हारा हो न सका॥
बेदाद सितम करते ही रहे फ़रियाद मेरी कुछ भी न सुनी।
हँसते ही रहे रोने पे मेरे वह यार गवारा हो न सका॥
ओ पर्दा नशीं मैं भी तुमको बे पर्दा ही करके मानूँगा।
पर्दे ही पर्दे में जो अगर दीदार तुम्हारा हो न सका॥
लिखना मैं 'सुधाकर, से क्योंकर लिखने की कोई तदबीर न थी।
तक़दीर की रुकावट दुनियाँ में कुछ मन का विचारा हो न सका।

तेरी याद में अरे बेवफ़ा मुझे ख़ुद को ख़ुद की ख़बर नहीं।
मैंने ख़ुद ही ख़ुद को मिटा लिया, लिया तूने कोई असर नहीं॥
मुझे था मुराद निहाले ग़म को सितम अलम तो मिला मगर।
तेरे दीद से कभी दीदा तर को मिला सुकून सबर नहीं॥
किया इश्क़ ने मुझे नातवाँ बचीं मुख़्तसर हैं यह उलझनें।
शबोरोज़ तो क्या ए जाने जाँ मुझे चैन आधी पहर नहीं॥
अरे पर्दे साज़ओ लामकीं मैं शहीदे नाज़ हूँ माहजबीं।
कभी पर्दे पर्दे में नाज़नी क्या? नज़र पे होगी नज़र नहीं॥
मैं अज़ल का एक पयाम हूँ एक शुद न शुद सा क़याम हूँ।
तेरे दर का अदना ग़ुलाम हूँ, हूँ वह शाम जिस की सहर नहीं॥
न मिटादूँ इश्क़ की हस्तियां न बहादूँ नालों की नदियां।
न उड़ादूँ अर्श की धज्जियां तो समझना मुझको 'क़मर, नहीं॥
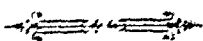
जुनूने शौक़ ऐसी भी कोई तदबीर होजाये।
के पिन्हां उक़दा मालाय निहल तक़दीर हो जाये॥
रुख़े रोशन का नज़्ज़ारा कहीं तशहीर
क़यामत होके माने कुहर आलमगीर
तहैयुर है तसव्वुर में किसी तस्वीर का नक़्श
नज़र आये जिन्हें तस्वीर वह तस्वीर होजाये॥
लबे लाले बदख़्शां के तबस्सुम की मसीहाई।
दिले बिस्मिल के कामिल ज़ख़्म पे इक्सीर होजाये।
रगड़कर पीसदे सुरमाँ बनादे गर फ़लक मुझको।
तो नज़रों में समाजाऊं मेरी तौक़ीर होजाये॥
पकड़ ही लूं क़दम जाने कहां जाने न दूं दिल से।
हक़ीक़त गर्चे मेरे ख़्वाब की ताबीर होजाये॥
जुनूने जोश में बेहोश हूँ या रब तुही जाने।
कहीं काबे में बुतख़ाना नहीं तामीर होजाये॥
मुअम्मां हो सके मुश्किल का हल यह नामावर कहना।
"सुधाकर,, के लिये ऐसी कोई तदबीर हो जाये॥

यह तो हमआग़ोश है जिसको निहां समझा था मैं।
फिर वही हमदोश है जिसको अयाँ समझा था मैं॥
आलमे मस्ती में मय पीने को कोई नूर की।
इसलिये आलम को साक़ी की दुकाँ समझा था मैं॥
कुछ नहीं समझा ज़माने में अगर समझा तो बस।
क़ैस के मानिन्द अपनी दास्तां समझा था मैं॥
फिर भी अपने वस्ल से शादाँ करोगे तुम कभी।
जब जुदा तुमने किया यह जाने जां समझा था मैं॥
ओ तमाशाई तमाशा ही तमाशा है तेरा।
है तमाशा ही तमाशा यह कहां समझा था मैं॥
शुद न शुद गुम शुद बरामद शुद शुदा आख़िर न शुद।
फ़लसफ़ा यह ही हक़ीक़त का रवाँ समझा था मैं॥
ख़्वाब की ताबीर को सादिक़ "सुधाकर,, जानकर।
आबो गिल के खेल को अपना जहां समझा था मैं॥

...ी की हसरतें आहो फुगाँ समझा था मैं।
...ी बेताबी को अपना इम्तेहाँ समझा था मैं॥
...न दहर में बुल बुल की क़िसमत का जहूर।
...सैयाद जिसको बाग़बां समझा था मैं॥
...न क्योंकर पड़ीं फ़ुर्क़त में रातें उम्र भर।
...दिन का ही चमन को आशियाँ समझा था मैं॥
...या उक़दा समझ में यह नहीं आया मगर।
...लसानी को क्यों शीरीं बयाँ समझा था मैं॥
फ़ितरते फ़ानी से अब ग़ाफ़िल नहीं बेदार हूँ।
फ़र्ज़ रूहानी नहीं जब महर्वां समझा था मैं॥
इस से ज्यादा सख्त नादानी भी क्या? होगी मेरी।
आबो गिल के खेल को अपना जहां समझा था मैं॥
राहनुमा कोई न था गो था जमीनो आसमाँ।
तो "सुधाकर,, तुमको ही, रोशन जमां समझा था मैं॥
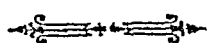
सदाक़त को मजाज़ी दौर में तहक़ीर होजाये।
खुदी बेखुद बनादे महेला तक़फ़ीर होजाये॥
खुदा जाने किसी खुद्दार पे मैं खुद हूं क्यों बेखुद।
खुदी से है यह मुमकिन ना खुदा तक़रीर होजाये॥
मैं कहता हूं अनलहक़ जज़बये मंसूर के सानी।
जिगर के पार सूली तीर या शमशीर होजाये॥
ग़ज़ब है क़हर है आज़ार है आफ़त मुसीबत है।
किसी काफ़िर की क़ल्बे ज़ार में तनवीर होजाये॥
मिटाना है मिटादे, पर समझ कर रहबरे आमिल।
शहीदे नाज़ का नामो निशाँ आख़ीर होजाये॥
न होते वह जुदा मुजसे न मैं उनसे जुदा होना।
कहूं क्या? मैं कि जब उल्टी मेरी तक़दीर होजाये॥
सदा यह है के वहशत में किसी वहशी का अफ़साना।
यगाना बन जमाने के लिये तकबीर होजाये॥
तुझे बख्शा करम अपने से ओ फ़ितरत के दीवाने।
यह मेरे नामये आअमाल में तहरीर होजाये॥

क़मर से चाँदनी है तो क़मर भी चाँदनी से है।
"क़मर,, को चाँदनी से किस तरह तनक़ीर होजाये॥

✻ चारबेत ✻

आह किस जोक़ से घनश्याम घटा आके जमी।
दामनी नाचती है शोक़ से बादल में रमी॥ आह०
धीमी धीमी तेरी रीहाना अदाएँ भाई।
ठंडी ठंडी सुबे अलका की हवाएँ आई॥
भीनी भीनी गुले सोसन पे लताएँ छाई।
रंग मस्ताना सुहाना है! नहीं कुछ भी कमी। दामिनी०
मेरे ग़मख्वार दिले ज़ार के प्यारे बादल।
नैन तरसते हैं तुम्हें नैनों के तारे बादल॥
बस तुम्हीं हो मेरी बिरहा के सहारे बादल।
दूर करसकते हो बस तुम्ही मेरे दिल की ग़मी॥ दामिनी०
घूमते घूमते तुम उनकी तरफ़ जाओगे।
झूमते झूमते मोती वहाँ बरसाओगे॥
चूमते चूमते लतिकाओं को हर साओगे।
मेरे दिल की भी सुना देना ज़रा दो नज़्मी॥ दामिनी०
चीखना मेरा गरजना से सुना देन उन्हें।
आँसुओं का गिला झड़ियों से बता देना उन्हें॥
बिजलियों से मेरी वहशत का पता देना उन्हें।
कहना इज्जत से अज़ल मेरा! ओ, अबरे अज़मी॥ दा०
बर्क़ बेताब से वह खुद भी लरजते होंगे।
आह के नारे वहाँ पर भी गरजते होंगे॥
नैन उनके भी मेरे ग़म में बरसते होंगे।
क्यों? अभी पाके भी हम जलते हैं दो दिल ज़खमी॥ दा०
नाचते मोर हैं और बुल बुलें चहचाती हैं।
केत की मोलसरी जूही झुकी जाती हैं॥
दिल को मरग़ूब बहारें यह सभी भाती हैं।
फिर भी नाचार 'सुधाकर, तेरी धारें न थमी॥ दामिनी०
आह किस जोर से०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

2५५५1

❁ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❁

समता

※ रचयिता ※

श्री गिरधरदास वोहरा कवि "सु

टोंक (राजस्थान)

डा. साहब श्री शंभुदयालजी महोविद्

सी. एम. ओ. टोंक (राजस्थान) की

जन्म सेवा के उपलक्ष में,

अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे।
धनवंतरी के सानी, जिनमें कमाल देखे ॥

दर्शन की मूरती हैं, सुन्दर विचित्र ढँग के। उज्जवल मयङ्क मुख पर नैना हैं सब्ज रँग के ॥
मणि हीर से दशन हैं, विद्युत प्रभा अनँग के। हैं रूप गत्र अनूप निर्मम नरोत्तमँग के ॥
सम्पन्न सब गुणों से, जौहर विशाल देखे।
अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

वाणी विशिष्टता में जादू सा कुछ असर है। हर दिल अजीज पन से हर दिल में उनका घर है ॥
हर तौर खुश सखुनवर दुनियां में नामवर है। हर गुल खिला हुआ है हर शाख पुर समर है ॥
शशि के समान शीतल, सुखकर रसाल देखे।
अमरत्व के प्रदानी शंभो दयाल देखे ॥

उत्तम चिकित्सकों में आला है काम जिनका। सी. एम. ओ. के पद से भूषित है नाम जिनका ॥
हर रोग मर्ज पर है, काबू तमाम जिनका। आरोग्यता शिफा से शोहरा है आम जिनका ॥
लुकमान से भी बढ़कर, ऊँचे खयाल देखे।
अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

करते हैं रोगियों की सेवा यों सौख्य दाता। ज्यों प्यार से सुलाती बालक को कोई माता ॥
हाँ, ऑपरेशनों के तो मानिये विधाता। नस नस की हरकतों के हैं आप पूर्ण ज्ञाता ॥
तत्काल कुछ करिश्मे, सम इन्द्रजाल देखे।
अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

जो कुछ रक़म किया है अहवाल खुद कलम से। कोई गलत न समझे, अपने गलत फहम से ॥
है हाल चश्म दीदा जो कह रहे हैं तुम से। खाकर कसम भी कहदें, पूछे जो कोई हम से ॥

दुश्मन तेरा "सुधाकर,, शर्दिश जवाल देखे।
श्मशान की चिता में अतिगहन् ज्वाल देखे ॥

"सुधाकर,,

प्रो० भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक (राजस्थान)

वर्षीय योजना — सना | शीर्षक | सप्ताह समारोह
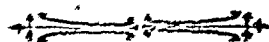
व | बहारे जिंदगी की जो सना है। | के

आ। दि० १०-१२-५६ सुनहरी पंचवर्षी, योजना है॥ | उपलक्ष में

न को इस तरह उन्नत बनाया।
वीरानों को जन्नत कर दिखाया॥
ज़की-ज़र हुक्मराँओं ने लुटाया।
तो शादाबी ने खुद दामन बिछाया॥
आक़िल, आलिमों की खोजना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बनाये बाँध और नहरें निकालीं।
जो बंजर थीं, वह उपजाऊ बनालीं॥
मरुस्थल में भी तरकीबें वह डालीं।
हजारों क़िस्म की पौदें जमालीं॥
खिजाँ हरसूए गुलशन से फना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

ग़रीबी बर जहन्नम जारही है।
अमीरी पुर तरन्नुम आरही है॥
तरक़्क़ी मुल्क को अपना रही है।
फ़ज़ा जोबन चमन पर लारही है॥
यह लासानी उरूजो ओजना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बहुत इल्मो हुनर के स्कूल हैं अब।
शफ़ाख़ाने बहुत माअकूल हैं अब॥
हजारों फ़लसफ़ी मशगूल हैं अब।
न मंजर माज़ी ओ मजहूल हैं अब॥
अभी बाक़ी बहुत आलोचना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बहुत सीमेन्ट उपजाते हैं अब हम।
बहुत अस्पात ढलवाते हैं अब हम॥
लखों, टन कोयला पाते हैं अब हम।
हरएक जा, रेल्वे लाते हैं अब हम॥
जहाज़ों का जख़ाइर चौगुना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

अब आज़ादी अमन के साँस लेगी।
जमीं भारत की फूलेगी फलेगी॥
यह थोड़ा खाद लेकर माल देगी।
तुम्हें जौहर जवाहरलाल देगी॥
खुश आबो बाद में तम्मूजना है।
सुनहरी पंचवर्षी०

जो बिजली भाखरा, चंबल से लेंगे।
तो चमका सिम्त चारों चाँद देंगे॥
जो बर्क़ी कारख़ाने अब खुलेंगे।
वह उँगली के इशारों पर चलेंगे॥
हमें मंजिल से, ऊपर पहुँचना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

हफ्त अक़लीमों से अपनी दोस्ती है।
निफ़ाक़त बदगुमाँ क्यों ? कोसती है॥
नशेमन पर मेरे क्या ? सोचती है।
क्यों ? अपने बालो पर खुद नोचती है॥
तेरी बेसूद साजो सोजना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

हम इतने ओज क़ुतबी पर चढ़ेंगे।
के हद्दे जोक़ से आगे बढ़ेंगे॥
जियेंगे और हँस हँस कर मरेंगे।
तरक़्क़ी मुल्को दौलत की करेंगे॥
फलक पर अपना परचम रोपना है।
सुनहरी पंचवर्षीय ०

जो सत्ता थी कभी केन्द्रित हमारी।
हमारे पास है वह आज सारी॥
हरएक हस्ती के सर पर ताजदारी।
विकेन्द्री करण ने करदी है भारी॥
हमें दायित्व अपना सोचना है।
सुनहरी पंचवर्षी ०

रहें भारत के पहरेदार शादाँ।
हमारे देश के ग्राम स्वार शादाँ॥
"क़मर,, राजेन्द्र से मुख्तार शादाँ।
जवाहर शम्स से अनवार शादाँ॥
सितारे हिन्द के जिनपर हैं नाज़ाँ।
उन्हें बख़्शे बहक़ उम्रे दराज़ाँ॥
सुधाकर से यही कहते बना है।
सुनहरी पंचवर्षी योजना है॥

पं० गिरधरदास वोहरा "सुधाकर,, (क़मर)

प्रो० भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राजस्थान) की ओर से
सार्व जनिक सम्पर्क कार्यालय टोंक को समर्पण

❁ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❁

लोक गीत

* रचयिता *

श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सुधाकर"

[क्रमद] टोंक (राजस्थान)

तीसरी पंचवर्षीय योजना के उपलक्ष में एक देहाती भाई का स्वागत गान

ए-माँ प्यारो प्यारो म्हांने लागे ए राजस्थान। साँची साँची लीजे मान।
सारा‌ई देसां में भारत माँ को छे, ऊँचो स्थान। नीकाँ नीकाँ कीजे ध्यान।
गंगा जमना और हूंवाल्यो समदर छे, म्हाँको मान। सारी दुनियाँ में परधान॥ ए माँ०

पंचवर्षी योजना में घणा लाभ पाया म्हांने।
घरकी उन्नति करवाने भली बात उपजी थाने।

छाने छाने यान्ह गरीबी होसी ए अंतर्ध्यान। सगलाई बणसी धन वान॥ ए माँ०

बाँध बणाया चोखा, नहराँ निकाली आछी।
सांच्लोई पाणी अपणा खेताँ में नगने आसी।

धरती माले अन्न पैदा होजासी ए दूणो धान। गऊ चणा गोउयूँ मन मान॥ ए माँ०

धरती छे म्हाँकी म्हे छाँ, धरती का बाबावाला।
बाकी सगला छे म्हाँकी महनत ने खाबा वाला।

छाँ अनदाता! अन्न जगत ने देस्याँ ए बे परमान। खाओ चाहे सकल जहान॥ ए माँ०

नया नया ओजाराँ सूँ खेती को काम लेस्याँ!
कुली और हल ने पाछे अंजन के बाँध देस्याँ।

पहल्याँ की कठनायाँ सब होजासी ए अब आसान। ज्याँ सूँ छा अब तक हैरान॥ ए माँ०

पढ़बा लखबा ने खुलगी आपणे भी पाठसाला।
लखणा में पड़ग्या छोरा छोरी सब गाँव हाला।

विद्या ही पढ़बा सूँ तो पण आसी ए म्हांने ज्ञान। ढाँडा बणजासी इनसान॥ ए माँ०

औषध खाना में देखो बैठ्या छे वैद जोसी।
हारी बेमारी में भी अब कोई दुख ना होसी।

सब रोगां की जांच जुगत सूँ करसी ए वे गुणवान। लेसी सारो दरद पछान॥ ए माँ०

सड़कां भी बणगी म्हांके और टेलीफोन आग्या।
चिट्ठ्यां पत्र्याँ देवा ने डाक घर का डब्बा लाग्या।

बीजल्याँ भी आसी तो चमकासी ए खेत खलान। गेला ढाँढा और मकान॥ ए माँ०

करजा लेवा देवा ने सहकारी बंक बणग्या ।
जों सूँ उछले छे लोभी सेठजी के मन में तणग्या।
चूँट चूँट कर ब्याज बोहरा खावे छा बेईमान । छूटी वासूँ भी अब जान ॥ ए मां०
कोरट में अब नहीं जास्यां पंचा सूँ न्याव करास्यां।
झगड़ा सब दूर हटास्यां आपस में मेल बढ़ास्यां ।
झूँटा दावा करबा फिर कुण जासी ए बण नादान । कुण खोसी अपणो ईमान ॥ ए माँ०
पशुवां रा मेला चोखा पलसा रे बारें भरसी।
ढांडा ढोरां री आछी बिकरी बोपारी करसी ।
नाटक सीनेमा में लोग उछरसी ए सुण एलान । अलगोजां पर उड़सी तान ॥ ए माँ०
झांके छे म्हांका कानी टरकी ईरान हाला ।
गोरा छे मन का काला जरमन जापान वाला।
डरावे छे चीन घणो ललचावे ए पाकस्तान । ईसाई और तुरक पठान ॥ ए माँ०
सेवक छां म्हे जनतारा जनता छे राज म्हांको।
शासन को काज म्हांको भारत को ताज म्हांको ।
वैरी सामे आया तो जुध करस्यां ए म्हें घमसान । खोस्याँ वाँको नाँव निशान ॥ ए माँ०
सारी बातां सूँ म्हांको पूरो अधकार छे अब।
म्हे छां पहरायत घरका म्हांकी सरकार छे अब ।
जात पांत और छुवाछूत करदीनी ए म्हे बलदान । साराई छाँ एक समान ॥ ए माँ०
भारत में जो भी रहसी भारती कुहासी सारा ।
घुस कर बैठ्या छे घर में थोड़ा सा ओगणगारा ।
पण ई बरबे तन मन धन सब करस्यां ए म्हे खुरबान । गद्दाराँ का लेस्याँ प्रान ॥ ए माँ०
ऊँचा उठवाने चोखा नेताँ री ओट रहस्याँ ।
अपणी सरकार ही ने, अबके भी वोट देस्याँ।
धीरे धीरे धरमराज को करस्याँ ए म्हे उत्थान । देवराज का लोक समान ॥ ए माँ०
गीत "सुधाकर" माँड्यो जींको करस्याँ ए मंगल गान । और बधाई देस्याँ दान ॥
ए माँ प्यारो प्यारो म्हाने लागे ए०

रचियता
गिरधरलाल बोहरा कवि 'सुधाकर' (कमर)
टोंक (राजस्थान)

[भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक]

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ रचयिता तथा संग्रहता
श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

ठुमरी गान

आयो २ सांवरा, मन मोहन कुब्ज रैन।
साजन तुमरी आट में, घन घन बरसत नैन॥
[तरज] ठुमरी ! राग भैरवी।

मेरी सखी री मेरो जोबनवा बीत्यो जाये। मेरी०
ऐसो री बेदरदी बनवारी, हमरे हिगहू न आवे॥ मेरी०
पिया नहीं आये, जिया घबराये।
मेरोरीसाजन बैरनसौतन, 'सुधाकर, लियो बिलमाये॥ मे

[तरज] ठुमरी, राग पीलू, तिताला मात्रा १६
मैं तो पिया के पास कैसे जाऊं। हां मैं तो०
सखीरी आली तोरे बिन मोहि को-
एकघरी पलछिन निंदिया न आवे, मोहे बिहाल गावे॥ मैं
रैन अँधेरी कारी बिजली चमक रही,
घटा घूम रही, बुँदियां परन लागी।
भीजीजाऊं भीजीजाऊं नाजाऊं नाजाऊं॥ मैं तो०
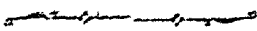
[तरज] ठुमरी, राग, मालकोश तिताला मात्रा १६।
जाओ २ मोसे करो ना लराई रे। जाओ०
कन्हाई छांडो लरकाई गहो ना मोरी कलाई-
देखी चतुराई, करो ना लराई रे॥ जाओ २ मो०
मैं व्रज वनिता नवल "सुधाकर,,।
नीर भरन जाऊं तट जमुना पर।
चपलछैल काहे मग अटकाई, होगी ना भलाई-
करोना लराई रे॥ जाओ, जाओ०
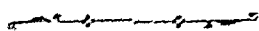
[तरज] ठुमरी, राग मालकोश तिताला मात्रा १६,
मोहे तुम बिन कल ना परे।
पिया निशि दिन बिरहा सतावे॥ मोहे०
चैन न आवत, जिया घबरावत।
हूक "सुधाकर,, उठत हमरे॥ मोहे०

[तरज] ठुमरी' ताल, तिताला मात्रा १६।
सावन घन आयो आज॥ सावन०
चहुँ ओर घटा छाई, सावन फिर लायो आज।
उन बिन भई बिकल रैन- कासे कहूं बिरह बैन।
कोयल की कूक सुन। पपीहा की हूक सुन।
जियरा घबरायो आज॥ सावन घन०
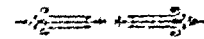
[तरज] निरबल के बलराम' सुने हम।
प्रेमकी लीला अनंत जगत में! प्रेम की लीला०
प्रेम हँसावत प्रेम रुलावत। प्रेम जगावत प्रेम सुलावत
प्रेम की छाई बसंत जगत में॥ प्रेमकी ली०
प्रेम के नैना प्रेम के बैना। प्रेम "सुधाकर,, प्रेम करैना।
प्रेम के वश भगवंत जगत में॥ प्रेमकी ली०
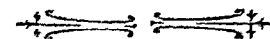
[तरज] श्याम सलोने नैना। (प्रेम गीत)
प्रेम का पंथ अजब है।
प्रेम की जानि न पानी जगत में ना कोई मजहब है।
प्रेम लगन जब लागगई तो नैनन चोट गजब है॥ प्रेम०
प्रेमी जन तनमन अरु धन को अपनावत ही कब है।
चातक चाहत स्वांति 'सुधाकर, और से क्या मतलब॥
प्रेम का पंथ०

[तरज] नाटक- ठुमरी'
सजनी छाई बहार री।
अमन चमन जोबन फबन, सबन लतन डार डार।
कलिन २ सुमन २ अलिगन रहे हो निसार॥ छाई०
आओरी आओ रँगीली रसीली प्यारी सजीली सुनार।
गाओ बजाओ रिझाओ छबीली, जाओ सभी बलिहार।
देख सखीरी गुल गेंदा को चम्पा नरगिस करती प्यार।
जुही चमेली मुधर मोतया जाय 'सुधाकर, पर बलिहार,
छाई बहार री॥ सजनी छाई०
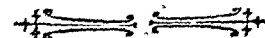
[तरज] राग मालकोश ताल तिताला मात्रा १६।

पिया बिन कहूं अब कैसी। मैंतो पिया०
त घर नाहीं कंथ, नित निरखूं पंथ ठग जैसी॥
जिया घबरावत चैन न आवत।
बिरहा सतावत कछु नहीं भावत।
अकुलावत प्राण "सुधाकर,,-
भयोरी परदेसी॥ मैंतो पिया०

[तरज] ठुमरी, राग भैरवी तिताला मात्रा १६

बाट चलत नई चुनर रँग डारी रे। बाट०
ऐसोरीबेदर्दी बनवारी,ऐसोरी निडर डरतना काहूसेलँगर
अपनी जोरा जोरी करत-
वासे मैं हारी वासे मैं हारी वासे मैं हारी रे॥ बाट०
डगर चलत मोहे रोको ना कन्हाई-
लँगराई चतुराई मोसे ना करो श्याम, बिन्ती करत-
मैं तोसूं पचहारी' मैं तोसूं पचहारी रे॥ बाट चलत०

[तरज] ठुमरी, राग भैरवी तिताला मात्रा १६।

ना मारो भर पिचकारी' जाऊं तूमपर वारी॥ ना मारो०
मैंनेअजहूं रँगाई, देखेगी ननँदिया बैरन देगी गारी॥ जा
बीच डगर मोरी लाज बिगारी सारी।
चरचा करेगी दे दे तारी मानो ब्रज नारी।
'कँवर श्याम, ब्रज नाम धरेगी-
चर्चा करेगी यों कहेंगी याकी यासूं यारी॥ ना०

[तरज] ठुमरी, झारत कर पकरत नागर नट।

ऐसो कियोरी कपट मोसे नागर नट। ऐसो०
ठाड़ो जमुना के तट, करे मुरली की रट-
बंसी वट के निकट घट लियो री हवट॥ ऐसो०
गट गट गट पियो मही इन हट हट।
कहत रही मैं तो हट हट हट हट।
चुनर "सुधाकर,, गई री सारी फट॥ ऐसो०

[तरज] ठुमरी, राग जोनपुरी तिताला मात्रा १६।

काहे कँवर कान मोसे करत रार। काहे०
नित झगर २ जावे सोतन के घर-
ऐसो ढीट लँगर यशोदा कुमार॥ काहे०
खिल रही कलियां योवन रसकी।
पनियां भरत मोरी कंचुकी मसकी।
मैं तो हूं "सुधाकर,, सी नवल नार॥ काहे०

[तरज] ठुमरी, राग जोनपुरी ताल तिताला मात्रा १६।

कब मिलि हैं सजन मोरे प्रेम सदन॥ कब०
मेरो तन मन धन है जिन के अर्पन।
तिन के चरणन के विमल दरशन॥ कब०
बरसत नैना पल पल छिन छिन।
तुम बिन श्याम "सुधाकर,, निशि दिन।
जरत जिया में है लगन की अगन॥ कब०

[तरज] ध्रुवपद, राग मालकोश तिताला मात्रा १६।

प्रभु आज लाज रखले। शिरताज विनयसुन मोरी॥ प्र०
ढ्यरत भरम है नाथ मरम को।
सुखद "सुधाकर,, राज ढक ले॥ प्रभु०

[तरज] ठुमरी, राग, भूपाली एक ताला मात्रा १२।

तू है करुणा निधान। सत चित प्रभु प्रमुद खान।
जगमग ज्योती महान। कमलापती श्रुति विधान॥ तू है
तू रहीम तू करीम तू हकीम शाह जहान।
तू अलीम तू नईम तू अज़ीम महर बान॥ तू है०

[तरज] ठुमरी भूपाली ताल एकताला मात्रा १२।

तू ही है ॐ कार। अर्थ धर्म कर्म तू ही॥ तू ही है ॐ
दाता बल बुद्धि तू ही। धाता जन सिद्धि तू ही।
त्राता सुख वृद्धि तू ही, तू ही है निरंकार॥ तूही है ॐ

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

मुरली मोहन आपकी बाजत है गम्भीर । भक्तन को सुखदेत है, कालंद्री के तीर ।

[तरज] क्या ! चैन से रहेंगे हमको सताने वाले ।

हम को भुला के मोहन, सौतन के हो चुके हैं ।
दीपक सदन में घी के वैरन के जो चुके हैं ॥ हम०
अब रैन रात निशिदिन देखेगी पंथ तेरी ।
ब्रज जन तो याद तेरी कर २ के रो चुके हैं ॥ हम०
सुख पाइयो तू कुब्जा इन दुख विनाशियों से ।
हम सुख को आंसुओं से मल २ के धो चुके हैं ॥ हम०
खोवेंगे प्राण भी अब इनके वियोग में हम ।
बल धीर शक्ति साहस यह सब तो खो चुके हैं ॥ हम.
दासी से लौ लगा कर भूले हमें "सुधाकर,, ।
मथुरा नगर बसा कर गोकुल डुबो चुके हैं ॥ हम०

[तरज] दिन की आहें न गई रात के नाले न गये ।

ऊधो तुम जाओ जरा श्याम के समझाने को ।
कैसे बिन दीद रामा, चैन हो परवाने को ॥ ऊधो०
क्यों सितम हमपे किया कौनसी तकसीर है वह ।
जिसपे कर तर्क दिया दर्स भी दिखलाने को ॥ ऊधो.
पहिले क्यों प्रेम लताओं में फसाया हमको ।
आज पाती जो लिखी जोग के समझाने को ॥ ऊधो.
अब वहां आप रहें आप की प्यारी कुबजा ।
हमतो छोड़ेंगी नहीं पर कभी बरसाने को ॥ ऊधो.
है, यही बीनती गोविन्द मुरारी गिरधर ।
दिल है बेचैन 'सुधाकर, की शरण पाने को ॥ ऊधो०

[तरज] प्रेमियों के दोनों जानिब से इशारे हो चुके ।

मनहरन सुखधाम मधु सूदन सदन घनश्याम को ।
कोई पूछे तो सही क्यों तजगये ब्रज धाम को ॥ मन०
दासियों को तो सदा हित से तुम्हारा ध्यान है ।
कब भुला सकती हैं हम चित चोर लीला धाम को ॥ म.
भूलजाओ गोपियों को और राधे को भी तुम ।
हमभी फिर जपती रहेंगी कृष्ण कुबजा नाम को ॥ म.
एक दासी के लिये ब्रज छोड़ कर मथुरा ।
धन्य है लीला तुम्हारी धन्य तुमरे काम को ॥
छल कपट नट खट तुम्हारे जो छुपे थे अब
वह 'सुधाकर, होगये विख्यात सारे ग्राम को ॥

[तरज] जाने जाँ चोट बराबर की बुरी होती है ।

बंसी अधरन पे अधर धर के बजाई तुमने ।
सारी ब्रज बाल को नँदलाल लुभाई तुमने ॥ बंसी०
तुमने बहु साज सजे गोपियों के काज प्रिये ।
प्रेम से रास रचा श्याम कन्हाई तुमने ॥ बंसी०
कूद यमुना में गये पुष्प कमल लाने को ।
नाग काली की कठिन पीर मिटाई तुमने ॥ बंसी०
पूतना कंस ने भेजी थी धमय पाने को ।
काम कुछ कर न सकी मार गिराई तुमने ॥ बंसी०
धार गिरवर को स्वयं नाम धराया "गिरधर,, ।
इन्द्र के कोप से हरि ब्रज को बचाई तुमने ॥ बंसी०

[तरज] जिंदगी जैसी हमारी है हमीं जानते हैं ।

जब तुम्हें लौट के दर्शन ही दिखाना था नहीं ।
प्रेम का बीज मेरे दिल में उगाना था नहीं ॥ जब०
भोग कुबजा के लिये जोग की शिक्षा हमको ।
ज्ञान तुम ऐसे सिखाओगे यह जाना था नहीं ॥ जब.
एक दासी ही की कुछ तुच्छ सी सेवाओं पर ।
सत्य पूछो तो तुम्हें श्याम रिझाना था नहीं ॥ जब०
छोड़ ब्रज धाम को मथुरा ही जो जाना था तुम्हें ।
श्याम फिर गोपियों से प्रेम बढ़ाना था नहीं ॥ जब०
छीन कर जोरी से माखन तुम्हें खाना था नहीं ।
बजाना बांसुरी और रास रचाना था नहीं ॥ जब०
उलहना ऊधो मेरा यह उन्हें समझा देना ।
प्रीत क्यों हम से लगाई जो निभाना था नहीं ॥ जब०
और सुनलो मेरी एक बात "सुधाकर,, चित से ।
ऐसी पाती यहां लेकर तुम्हें आना था नहीं ॥ जब०

आजा २ मेरे वंसी के बजाने वाले।
कहती हो कि गोकुल में ही आना था नहीं।
भूमि का कुछ भार हटाना था नहीं॥ तुम०
नहीं त्याग के व्रज मथुरा में जाना था मुझे।
मात पिता को क्या छुड़ाना था नहीं॥ तुम०
यदि भूले कोई प्रेम में अन्धा होकर।
[illegible] दीर उसे कैसे दिखाना था नहीं॥ तुम०
[illegible] दूध दही चोरना तुमने जो कहा।
[illegible]के तालियां फिर हम को नचाना था नहीं॥ तुम०
बांसुरी हमने बजा रास रचाया जो वहां।
तो हमारे में किसी के वह ठिकाना था नहीं॥ तुम०
ईर्षा रखती हो कुबजा से तुम ऐ गोपियो क्यों ?
मान लावण्य का तुम को भी बढ़ाना था नहीं॥ तुम०
जाओ ऊधो उन्हें फिर ध्यान से समझाओ जरा।
उलहना झूंट 'सुधाकर,, को पठाना नहीं॥ तुम०
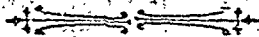
[तरज] मुज अंदलोबेजार की हसरतों को मिटा दिया।
बाँसुरी, बजादे श्याम माधुरी ललान में।
झट प्रकट निकट हो कान्ह आन कुञ्जस्थान में॥ बां०
बावरी, को अब कोई विथा, निहारे तो सही।
विन अनल जो जल रही है प्रेम की चिनगमें॥ बांस.
क्यों बहे! न, नैन नीर जब वियोग की हो पोर।
दरस बिन हुई अधीर मीन के समान— में॥ बांसरी०
हा, न, टूटी लेखनी वियोग जिन लिखा हमें।
संत जन क्या? सोगये थे, जा सभी मसान में॥ बां०
रंग राग आप के दासी कुटिल के संग हों।
और मलूं भवूति अंग खूब ध्यान ध्यान में॥ बांसरी०
टेर, यह विपत भरी तू जाके कहियो सहचरी।
देर ना पायन की है प्रेमिका के प्रान — में॥ बांसरी०
राधिका के प्रेम चंद कृष्ण, "सुधाकर,, मुकुंद।
विनती आनंद कंद लाओ नेक ध्यान में॥ बांसरी०
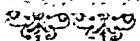
[तरज] दयामय आपके गुण गाने वाले और होते हैं।
वसी है दिल में सुन्दर मूरती माधव मुरारी की।
अनोखी सांवरी झांकी है बांकी व्रज विहारी की॥ व०
विराजत संग मनहारी है श्री वृषभानु दुलारी।
मधुर मुसक्यान सुखकारी है राधे प्राण प्यारी की॥ व.
न वर्णन होसके महिमा तो दूं किस हो भला उपमा।
निराले ढंग की सुषमा है प्रीतम छवि बिहारी की॥ व.
गजब की बांसुरी मोहन हरन करने को तन मन धन।
सघन कुञ्जन में निशिदिन टेरती है दुःख हारी की॥ व.
लगी जिस को लगन सची मिटाये से मिटेगी ना।
न भूलेगा 'सुधाकर,, भी दया आनंद कारी की॥ बसी.

[तरज] एक फिल्मी गायन।
पनघट पे कन्हैया आताहै। आताहै धूम मचाता है॥ प.
वह माखन मिसरी खाताहै, जमना पर रास रचाताहै।
सखियों को खूब खिजाता है॥ पनघट०
बन २ में गायें चराताहै। अधरन धर बैन बजाताहै।
मनमोहन तान सुनाता है॥ पनघट०
कर पर गिरराज उठाताहै, और इन्द्र का कोप मिटाताहै।
गुवालों के प्राण बचाता है॥ पनघट०
ऐसा मोहन मदमाताहै। ब्रज राज 'सुधाकर, भाताहै।
जो गीता ज्ञान सिखाता है॥ पनघट०

[तरज] जुदा गुल से रहे बुल २ भला फिर कैसे राहतहो
मिलेगा कब कहां दर्शन बता राधेरमन तेरा।
किसी ने कुछ नहीं पाया पता काली दमन तेरा॥ मिले.
जहां प्रह्लाद अरू ध्रुव सं० अनेकों गुल सुशोभित थे।
नजर आताहै वह खाली अरे माली चमन तेरा॥ मि०
खबर लेताथा दीनो की कभी अवतार लेले कर।
अब होता क्यों नहीं संसार में आवा गमन तेरा॥ मि०
भरा है नार निरमल नैन दो में गंग जमना सम।
खड़ा है चर्ण धोने को दयामय दास जन तेरा॥ मिले०
मदन माधो मुकुट धर कृष्ण दामोदर मोहन मनहर।
योंही होता रहे गिरधर 'सुधाकर, चितमन तेरा॥ मिले
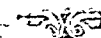
[तरज] उपरोक्तानुसार!
जुदा क्यों कर भला हो ब्रह्म से जब उस की माया है।
अगर है धूप सूरज में तो उस के संग छाया है॥ जु०
अलहदा किस तरह हो वह छुपी हो दिल में जो ऐसे।
कि जैसे लहर जल में और लहर में जल समाया है॥ जु.
जहाँ है चांद तो फिर चांदनी भी साथ ही होगी।
भला बिन चांदनी आकाश पर कब चांद आया है॥ जु.
सुधाकर में सुधा है तो सुधा में भी सुधाकर है।
सदा से ही 'सुधाकर, भी सुधा को संग लाया है॥ जु.
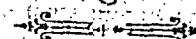
प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

✻ रचयिता ✻
श्री गिरधरदास वोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

✻ गज़ल कुञ्ज ✻

[त०] अगर कुछ मरतबा चाहे तो कर खिदमत फकीरों की,

मेरे, सांवरे बहुत बाहिर रहे अब घर में आजाओ।
हृदय मन्दिर में राजो और नैनन में समाजाओ॥
त्रिलोचन ताप मोचन आपहैं विख्यात जग भगवन्।
तो फिर अब भूत भावन भीर भक्तन की मिटाजाओ॥
मेरे अभिमान मद मोहादि अघ नाना विकारों को।
जलाकर योग अग्नि में विभूती तन रमा जाओ॥ मे.
कभी विजेरा अपने ज्ञान का डमरू बजाकर के।
तुम्हीं इस नाट्य शाला विश्व का अभिनय रचाजाओ॥
यही बस है निवेदन नत्र निर्बल, दीन प्राणी का।
सुधा शिव नाम रसना पर 'सुधाकर, के बसाजाओ॥ मे.

[त.] फिराक जानां में हमने साक़ी, लहू पिया है शराब कर के,

है धन्य जीवन उन्हीं के जग में-
जो धर्म व्रत पर अड़े हुए हैं।
मिटा वतन वह मिटे स्वयं भी-
जो होके निर्बल पड़े हुए हैं॥ है धन्य०
सदैव स्वर्णाक्षरों में चमके-
हैं, विश्व नंदन में नाम उनके।
स्वदेश सेवा को शुभ कर्मों पर-
जो तीर बनकर चढ़े हुए हैं॥ है धन्य०
मिलाया मिट्टी में जिसने तन धन-
सदैव अपना पराये कारन।
उन्हीं के बल पर यह विश्व के सब-
मुक़ाम क़ायम खड़े हुए हैं॥ है धन्य०
करी जो निष्काम शुद्ध भक्ति-
मिली उन्हीं को अमूल्य शक्तिः।
स्वरूप देवों में आसमाँ पर-
सितारे बनकर जड़े हुए हैं॥ है धन्य०
सुयश उन्हीं को मिला है उत्तम-
शरण "सुधाकर,, में जो गये जम।
प्रभो के चर्णों में जिनके हरदम-
यह नैन दोनों लड़े हुए हैं॥ है धन्य०

[तरज़] मैं लैला ही लैला पुकारा करूँ

मेरे घंश्याम, गुण धाम, प्यारे हरिः
हो कृपा भक्ति तव चित्त में धारा करूँ।
वेद विख्यात व्रत सत्य धारी तेरी,
सारी लीला लगन से निहारा करूँ॥ मेरे०
सर्व सुख छंद रस रंग धन छाँड के,
संग समता के भगवन गुजारा करूँ।
होके निर्द्वन्द जग फंद को त्याग कर,
दुष्ट तृष्णा को मन से निकारा करूँ॥ मेरे०
जय हो गोविंद माधव कमल नाभ की,
ओम् नित्येश्वरं ब्रह्म प्रभु आपकी।
खेद संकट निवारन तिहूँ ताप की,
प्यारी झांकी मैं तन में सँवारा करूँ॥ मेरे०
मैं हूं शरणागतं देव यज्ञात्मकं,
सर्व लोकः प्रतिष्ठं, अजं व्यापकम्।
पुरुष अव्यक्त वरदं वरिष्ठं विभु,
शान्ती सुख सदन मैं सुधारा करूँ॥ मेरे०
बस यही कामना है करो पालना,
नाथ संकट विपत दुःख अघ टालना।
दीन पर यह दया की नज़र डालना,
जो सुधाकर "सुधाकर,, उचारा करूँ॥ मेरे०

[तरज़] चैन लेने नहीं देते यह सताने वाले।

भक्ति में तेरे कोई लीन प्रभो होता है।
धर्म धारा में अशुभ कर्म का मल धोता है॥ भक्ति०
जिस ने दुनियाँ में कभी नाम न हरि का लीना।
जाके यमराज के द्वारे पे खड़ा रोता है॥ भक्ति०
जन्म जग बीच लिया देह मनुज की पाई।
ऐसे बहुमूल्य समय को क्यों वृथा खोता है॥ भक्ति०
स्वार्थ वश पाप किये हमने अनेकों लेकिन,।
फिर भी अफसोस नतीजे में सिफ़र होता है॥ भक्ति.
चौंक कर जाग रे मन! ध्यान लगा ईश्वर से।
मोह निद्रा में तू आराम से क्या सोता है॥ भक्ति०
ऐसे विषयों में फंसे, अय "सुधाकर" जग में।
जिन से दिल एक निमिष को न जुदा होता है॥ भक्ति०

"...श्रीकृष्ण नीच अनो कि अब तक दौर फिरतो है,

आत्मा मेरी तुम्हीं परमात्मा मेरे।
सर्व सृष्टि में प्रकट जीवात्मा मेरे॥ तुम्हीं०
भवसिन्धु तारन अघ उधारन जग उबारनहो।
...ार हारन हो तुम्हीं जीवात्मा मेरे॥ तुम्हीं०
...त भक्त दुख हारी हो करुणा सिंधु सुख कारी।
कृष्ण वनवारी हो तुम परमात्मा मेरे॥ तुम्ही.
हूँ शर्ण में भगवन् किया अर्पन है तन मन धन।
अपराध आनँद घन करो परमात्मा मेरे॥ तुम्हीं·
कृपा कर नाथ विश्वंभर 'सुधाकर, विश्व सुख सागर।
चरण रज में रहूँ चाकर तेरे परमात्मा मेरे॥ तुम्ही०

[तर्ज] तेरे कूचे में अरमानों की दुनियाँ लेके आयाहूँ।

बतादो प्यारे भगवन्, भक्तों का उद्धार कब होगा।
निहारेंगे दर्शन वह दिन मेरे सरकार कब होगा॥ बता०
मुकुट माथे अधर मुरली कमलिया कंधे कर लकुटी।
मनोहर माधुरी उस झांकी का दीदार कब होगा॥ बता०
गयेथे तुम विदुर घर प्रेम के बश शाक खाने को।
सुदामा सम मुठ्ठी चाँवल मेरा स्वीकार कब होगा॥ ब-
बिठाऊँ तुमको आँखों में पिलाऊँ दूध निज करसे।
लिपट जाऊँ चरणों में मुझको यह अधिकार कबहोगा॥ ब.
सुधाकर हैं अनाथों की तरह क्यों? नाथ के होते।
सुदर्शन चक्र से दारिद्र के शिर पर वार कब होगा॥ ब
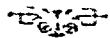
[तर्ज] उपरोक्तानुसार।

किसी के दिलमें आए अरु किसी के नैन में आये।
प्रभो तुम चैन बनकर इस दिले बेचैन में आये॥ किसी०
हृदय जिन के लगे हों प्रेम शर मनहर को चितवन के।
उन्हें फिर चैन कब सुख चैन दिन अरु रैन में आये॥ कि.
मुकुट माथे अधर मुरली लकुट कर में निगाहों में।
दयामय रूप में भी हृदय वह नित स्वपनमें आये॥ कि०
मेरे जीवन के प्राणाधार वह प्यारे तुम्हीं तुम हो।
इसीलिये बन तुम्हीं तो प्रेमा जनके नैन में आये॥ कि०
किसी प्रभावी के भवितव्य नभ पर चंद्रमा बनकर।
झुकाने को उजार सुखकर अँधेरी रैन में आये॥ कि०
प्रभाकर दूर हों सब दुंद अरु आनंद रहजायें।
'सुधाकर, जब परम छवि चितहरन चित चैनमें आये॥ कि०

[तर्ज] सब ठाट पड़ा रहजायेगा जब लाद चलेगा बनजारा।
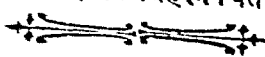
मन मोहन मोरमुकुट धारी—
मुरलीधर ब्रज मोहन प्यारे।
रघुनंदन त्रिभुवन सुखकारी—
घनश्याम बदन धनुवर धारे॥ मन मोहन०
पितु मात सहायक बंधु सखा—
हरि नैनन के हो तुम तारे।
घट घट व्यापक भगवान प्रभो—
तुम भू मण्डल के रखवारे॥ मन मोहन०
तन मन धन तुमपर बलिहारी—
हम जीवन धन करते सारे।
हम शर्णागत हैं जगदीश्वर—
भक्त वत्सल नाथ विपद हारे॥ मन मोहन०
तुम, एरे "सुधाकर,, धरणी धर—
गिरधर मनहर आनँद कारे।
भज, रघुवर रघुपति रामेश्वर—
मन आनँद घन के गुण गा रे॥ मन मोहन०

[तर्ज] उपरोक्तानुसार।

सर्वेश तुम्हारे चरण युगल में—
मन मेरा निश्चल करदो।
करुणेश कृपा कर जन्म मरण की—
जटिल समस्या हल करदो॥ सर्वेश०
संसारी सुख प्रभु ना चहिये—
दर्शन की आशा प्रबल करदो।
चंचल मन की चिन्ताओं को—
हरि दुर्बल और निष्फल करदो॥ सर्वेश०
ममता मल हर कर गिरधर धर—
मन बुद्धि विमल निर्मल करदो।
निज प्रेम सुधा से लालाइत—
प्रभु पूरण हृदय पटल करदो॥ सर्वेश०
फिर तान सुनाकर वंसी की—
जमुना पर मन पुलकित करदो।
यही कामना श्याम "सुधाकर,, है—
उनकी यही आशा सुफल करदो॥ सर्वेश०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

…और क्रोध ने जोरों से मुझे घेर लिया।
…और मोह ने मुहँ तुमसे मेरा फेरदिया॥
…चोरी व दगा बाजी में रहता है जिया।
…द्वेशों ने सदा चारों से भी दूर किया॥
…खंड ने फेरी है मती मेरी घनी।
…रक्खोगे तुम्हीं०

…ज और शर्म का क्या काम जहां य; सब हों।
…त्य और शील कहां जब के करम वेढव हों।
…नेम और धर्म भला कैसे बने और कब हों।
क्यों न डूबूँगा मेरे साथी ही घाती जब हों॥
मैं कुसंगत में फँसा होगया पूरा व्यसनी।
लाज रक्खोगे तुम्हीं०

अब तो बस आँसरा तेराही लिया है मैंने।
साथ इन पापियों का छोड़ दिया है मैंने॥
हाँ! परन तेरी ही सेवा का किया है मैंने।
खोजकर सार सुधा रसको पिया है मैंने॥
ओ· "सुधाकर" मेरी सुन लीजिये अरजी इतनी।
लाज रक्खोगे तुम्हीं०

चारबैत

जब तक के सदाकत पे वफ़ीं ला न सकेंगे।
हम उनकी मोहब्बत का पता पा न सकेंगे॥
नाकाम दिलेजार की हस्ती को मिटादे।
अरमानों की दुनियां को कुचल! आग लगादे।
कोनेन से मा बैन के पर्दे को उठादे।
वर! नफ्स तमन्ना से अगर आ न सकेंगे॥
हम उनकी मोहब्बत का०

बरबाद अगर होते हैं हो जाँय बलासे।
सोते हैं अगर भाग तो सो जाँय बलासे।
खोते हैं अगर होश तो खो जाँय बलासे।
दिल खोलके गर तीरे सितम खा न सकेंगे॥
हम उनकी मोहब्बत का०

गर इब जो वक़्त शर्मो हया जाय तो जाये।
सर रंजो अलम ग़म की घटा छाय तो छाये।
कल आती है गर मौत तो वह आज ही आये।
सीने को अगर चीर के दिखला न सकेंगे॥
हम उनकी मोहब्बत का०

दीदार की ख्वाहिश है वह दीदार भी होगा।
जो प्यार "क़मर" चाहिये वह प्यार भी होगा॥
अग़ियार जिसे समझे हो वह यार भी होगा।
फ़रमान पे कुर्बान अगर जा न सकेंगे॥
हम उनकी मोहब्बत का०

* ग़ज़ल *

किसी के हुस्न पर क्यों ऐ दिले नादां मचलता है।
भला ऐसी भी बातों से कहीं कुछ काम चलता है॥
हसीनों की नुमाइश में है सौदा सर फ़रोशी का।
जो इस बाजार में चलता, नहीं फिर वह सँभलता है॥
शबाब की शोख़ियाँ हैं इन बुतों की चश्मे जाबिर में।
तबस्सुम क़हर का शोरीं जहर मारीं उगलता है॥
अजब अंदाज का नक़्शा है इनकी बे हिजाबी का।
किसी की जान जलती है तो इनका दिल बहलता है॥
जो उलझा जुल्फ पेचां में सुलझने ही नहीं पाया।
मुक़द्दर को बुरा कहकर, कफ़े अफ़सोस मलता है॥
मुहाल जिंदगी है आशिक़ों का मुत्वक़िल होना।
जो सूरज आज ढलता है वही कल फिर निकलता है॥
"क़मर" जेबा नहीं तुमको ख्याले मुन्तशिर होना।
अबस ना आक़ेबत अंदेश क्यों हस्ती बदलता है॥

* ग़ज़ल *

सुबह उगता है सूरज शाम को जिसतौर ढलता है।
युहीं नाकाम अपनी जिंदगी का दौर चलता है॥
मजाज़े हुस्न में रोशन फ़ना है जिसतरह देखो।
वफ़ा जिसकी नहीं इस शमऑ पर क्यों यार जलता है।
मेरी दानिस में तो बहतर है वह सारे जमाने में।
जो इन जालिम हसीनों की हवा से दूर टलता है॥
शिकार इन नाज नीनों का जो बनजाता है बदक़िस्मत।
तो वह फिर बनके मजनूं दश्तेहैरां में टलता है॥
दरीदा पेरहन में वहशियाना हाल है उसका।
जो ऐसे जाहिलाना शौक़ के साँचे में ढलता है॥
वह काबिल है जो ईमाँ पर रखे साबित क़दम अपना।
वह काहिल है कि जो रुखसार चिकनों पर फिसलता है॥
'क़मर, तू जिसको समझा है क़मर, जुगनू से है बदतर।
तो! इनको प्यार करने से नतीजा क्या निकलता है॥

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

मजाज़ी मुहब्बत

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)
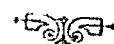
मुज़्तर क़दमें सद्दक़ चो बरपा गरदद ।
मद उक़दये मुश्किल मदमें वा गरदद ॥
मतलूब शवद तालिबो तालिब मतलूब ।
मजनूँ सिफ़ते हस्तिये लैला गरदद ॥

[तर्ज़] चार चेत ।

दिल लगी से दिल मेरा, ए जानेमन जलजायगा ।
दिल की बेताबी से यह सारा चमन जलजायगा ॥
आह तेरे इश्क़ने मस्ताना मुझको करदिया ।
मिस्ल शमआं तूने ही परवाना मुझको करदिया ।
मेरे तसव्वुर ने ही दीवाना मुझको करदिया ।
उफ़ भी तो करता नहीं यों के दहन जलजायगा ॥
दिलकी बेताबी०

रहने दे माह लक़ा ज्यों का त्यों अपना नक़ाब ।
वरना ग़ज़ब होयेगा एक नया इनक़लाब ।
लाखों को तड़पायगा गुञ्चा दहन यह हिजाब ।
पर तेरे दीदार से रंजो मोहन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी०

सुनने दे जाने जहां कुछ मेरी फ़रियाद को ।
कर न खतम बे गुनाह आशिक़े नाशाद को ।
मत मुझे बिस्मिल बना छोड़दे बेदाद को ।
वरना सितम साज़ यह चर्खे कोहन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी०

चाहता है जी मेरा चूमलूं तेरे क़दम ।
और लिपट जाऊं मैं सीने से तेरी क़सम ।
जान "सुधाकर,, तुझे पूजा करूं रे सनम ।
पर मेरे इस काम से बिरहमन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी०

[तर्ज़] आशुफ़्ता बरंगेगुल व फ़िज़ां बर मज़ा

फिरती है चश्मे नाज़ अदा से किसी के साथ ।
सीने में दिल तड़पता है किस बे बसी के साथ ॥
तुम जान को लेकर क्या मेरी जान करोगे ।
ए जान लेलो जान जो चाहो हँसी के साथ ॥
परवाह न करो हालपे ग़मगीन है सिकन्दर ।
दिन चाहे गुज़रते हैं मेरे बे कसी के साथ ॥
क्या तीर उतरते हैं जिगर सोज़ में शोरीं ।
है नर की बारिश नज़रे नरगिसी के साथ ॥
जलना ही रहेगा सदा परवाना शमआं पर ।
या चैन भी पायेगा कभी मुफ़लिसी के साथ ॥
है लुत्फ़ ज़िन्दगी का इसी में तो "सुधाकर,, ।
रहती है बेक़रार तबीयत खुशी के साथ ॥
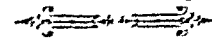
[तर्ज़] कह रहा है आसमां सारा समां कुछ भी नहीं ।

छेड़ अच्छी है नहीं सरकार रहने दीजिये ।
किसको दिखलाते हो झूठा प्यार रहने दीजिये ॥
पूछते हो हाले बिस्मिल किसलिये मोहसिन मेरे ।
अपनी उलफ़त का मुझे बीमार रहने दीजिये ॥
उनपे करना महरबानी उनपे ही नज़रे करम ।
मेरे दिल में तो खटकना खार रहने दीजिये ॥
ग़म अलम रंजो मोहन गर्दिश सितम महमां मेरे ।
जिसक़दर दुनियां के हैं आज़ार रहने दीजिये ॥
इश्क़ की चौसर में बाज़ी खो के गर रूठे हैं आप ।
तो जीत तुम लेलो हमारी हार रहने दीजिये ॥
अब रुख़े रोशन से परदा दूर कर छोड़ो हया ।
वस्ल का वादा करो इनकार रहने दीजिये ॥
मत निगाहे नाज़ से टुकड़े "सुधाकर,, तुम करो ।
मैं तो खुद मरने को हूं तैयार रहने दीजिये ॥
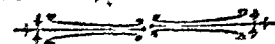
[तर्ज] एक फिल्मी गीत-

ओ, दिलवर प्यारे ने।
हिड़किये किसजोरसे, इस दिलके दिलवर प्यारे ने॥
नैना थे या खञ्जर। जो कारी हुए जिगर पर।
अररर रर बस घायल करदिया -
जालिम तीर करारे ने॥ ओ०
उल्फत में हम रोते हैं। आंसुओं से मुँह धोते हैं।
अररर रर बेचैन किया फिर-
इनके नैन नज़ारे ने॥ ओ०
मत भूल के आंख लड़ाना। उलफत में मत पड़जाना।
अररर रर फिर खून बहाया-
दिल पर ज़ख्म करारे ने॥ ओ०
उम्मीद न थी यह हमको। यों देंगे 'सुधाकर, ग़म को।
अररर रर अंजाम मोहब्बत-
देखलिया जग सारे ने॥ ओ०

[तर्ज] ए दर्देदिल बतादे कबतक तू कम न होगा।

दिलमें है याद तेरी आँखों में नूर तेरा।
जो कुछ भी देखताहूं, सब है ज़हूर तेरा॥
क़दमों में सिर झुकाये दामन बिछाये दर पर।
रहना है लौ लगाये बन्दा हुज़ूर तेरा॥
एक हूक सी जिगरमें उठ उठ के कह रही है।
जलवा विसाले जाना होगा ज़रूर तेरा॥
जामे पियूष दिलवर हम छक के पीचुके हैं।
हरदम ही अब रहेगा क़ायम सुरूर तेरा॥
मिल लूंगा मैं "सुधाकर,, दिलसे लगी हुई है।
आली मुक़ाम प्यारे लेकिन है दूर तेरा॥

[तर्ज] क्या खबर थी इनक़िलाबे आसमां हो जायगा।

चैन कैसे हो तुम्हीं कहदो मेरे दिल के लिये।
तेग़ रहतीहै तनी हरवक्त बिसमिल के लिये॥
याद मुर्दन माहरू चश्मों में अश्के नाज़ भर।
आया दूर करने को मदफ़न में मेरी गिल के लिये॥
क़त्ल होने पर भी अरमां कुछ तो निकलेंगे ज़ुरूर।
ए मसीहा हो अगर कुछ चीस्त साइल के लिये॥
पूछताहूं सच बतादो इश्क़ के क़ानून दां।
क्यों नहीं रक्खी सज़ा अबरूए क़ातिल के लिये॥
इनकी फर्माइश में खोया जानो माल ईमान भी।
था यही मुमकिन भी मुझ नादान जाहिल के लिये॥
ओ सुधाकर आज हो खामोश अरु ग़मगीन क्यों।
कुछ न कुछ तो चाहिये तर्ज,ईन महफ़िल के लिये॥

[तर्ज] दिलकी लगी बुझाजा ओ दूर जाने वाले।

देखा जो गौर करके संसार बे वफ़ा है।
कोई नहीं किसीका आज़ार है शिफ़ा है॥
मदहोश क्यों हुआ है दिन चार की बक़ा में।
ए दिल बतादे आखिर यहां तुमको क्या नफ़ा है॥
बेख़ौफ़ घूम होकर आज़ाद इस चमन में।
कर प्यार गुल से बुल बुल मिलकर दफ़ा २ है॥
लाये तो कुछ नहीं पर लेजाने को संग अपने।
जोरो सितम अलम ग़म रंजो मोहन जफ़ा है॥
बेकार है वतन में फिर अपना आना जाना।
जब चाह दिल की पूरी होती नहीं रफ़ा है॥
क्यों बार बार प्यारे करताहै जुदा हम को।
सच तो बता 'सुधाकर, तू मुझ से क्यों खफ़ा है॥

[तर्ज] दिल में है याद तेरी आंखों नूर तेरा।

बदनाम न होजाना ओ प्रेम के दीवाने।
दिल थाम ज़रा अपना गर बात मेरी माने॥
जलजाओगे जाओ भी, यह आतिशी शीशे हैं।
जो आग में गिरते हैं, जल जाते हैं परवाने॥
इस राह में ख़तरा है जी जान से जाने का।
भूले न क़दम रखना हम आये हैं समझाने॥
है नाज़ो अदा शोख़ी बेदाद जफ़ा इन में।
बस आंख के मिलने ही लगते हैं सितम ढाने॥
कुछ ढंग नहीं अच्छे कहना है "सुधाकर,, यह।
पढते हैं जाने क्या क्या इस राह ग़म खाने॥

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

※ रचियता
श्री गिरधरदास बोहरा
टोंक (राजस्थान)

※ नग़मा ※

होचुका दौरे ख़िज़ाँ अब है फ़िज़ाँ आने को।
न याद कीजिये गुज़रे हुये ज़माने को॥

चुटकियों ही में पहाड़ों को मसल दूँगा अब।
चाल सूरज की इशारों से बदल दूँगा अब॥
झोंपड़ी माँगेगा उसको भी महल दूँगा अब।
कारेकुदरत में भी एकबार दख़ल दूँगा अब॥
कौन दुनियाँ में मुक़ाबिल है मेरे आने को॥ न याद०

मिसाल ही नहीं जिसकी वह ला मिसाल हूँ मैं।
ज़वाल ही नहीं जिसको वह तो निहाल हूँ मैं॥
न जिसको डर है क़यामत का वह इक़बाल हूँ मैं।
अजब कमाल सिफ़त इस जहाँ का लाल हूँ मैं॥
अज़ल से बादे सबा आई है जतलाने को॥ न याद०

फिर नये ढंग से दुनियाँ को बसाना है मुझे।
फिर नया रंग ज़माने पे जमाना है मुझे॥
फिर नया जंग ख़िलाफ़त से मचाना है मुझे।
आग पानी में लगा कर के दिखाना है मुझे।
याम खाने लगी चक्कर मेरे समझाने को॥ न याद०

पाँव से रूँधा हुआ फूल भी खिल जायेगा।
मिलगया धूल में वह रंग नया लायेगा॥
एक मिट कर के अनेकों को जिला पायगा।
शान से फिर वह गुलिस्तान में लहराये गया॥
बुल बुलें शौक़ से बेताब हैं चहचाने को॥ न याद०

ज़र्रे ज़र्रे पे ज़मीं के मैं फ़तह पाऊंगा।
अर्श पर जाके हवाओं पे किले छाऊंगा॥
अब्र बाराँ को भी सीमाब सा तड़पाऊंगा।
कोहे आतिश को मुनक्क आब बना ऊंगा॥
ध्यान से सुनिये "सुधाकर„ के इस अफ़साने को।
न याद कीजिये गुज़रे०

※ नग़मा ※

लैला मजनूं से लगी इस तरह समझे
न याद कीजिये गुज़रे हुए अफ़साने

इश्क़ में हाल यही होना है मुश्ताक़ों का।
ख़ाक उड़ाते हुवे लेते हैं मज़ा फ़ाक़ों का।
ख़ून पीने के जिगर खाने, सियाह दाग़ों का।
हस्ती मिट जाने से ही नाम है अश्शाक़ों का॥
ज़िंदगी कहते हैं बस इश्क़ में मरजाने को॥ न याद०

किसी ने मुझको जला कर के जलाया तुम को।
फिर भी मैंने तो गले ही से लगाया तुम को॥
गोद अपनी में इसी जान खिलाया तुम को।
जाम उल्फ़त ही का हर बार पिलाया तुम को॥
शमआँ भी कहने लगी आज यों परवाने को॥ नयाद०

ज़ुल्फ़ पेचाँ में तुम्हीं ने तो फँसाया दिल को।
दश्ते हैराँ में तुम्हीं ने तो गुमाया दिल को॥
इश्क़ ने, जान की बाज़ी में, लगाया दिल को।
ग़म अलम रंजो मोहन ही में मिटाया दिल को॥
अब नहीं मानेंगे शैतान के बहकाने को॥ न याद०

जाम पर जाम दिये जा अरे साक़ी भर भर।
ज़िंदगी पायेंगे दुनियाँ में नई मर मर कर॥
आज फिर जोशे जुनूं इश्क़ का छाया सर पर।
आ पड़े यार कफ़न बांध के तेरे दर पर॥
अब कहां जायेंगे हम छोड़ के मैख़ाने को॥ न याद०

आओ दिलबर तुम्हें आँखों में बिठालूं अपने।
चीर कर सीना कलेजे में छुपालूं अपने॥
दिल ही में दिल के सब अरमान मिटालूं अपने।
बज़्मे फ़ानी से सर अंजाम उठालूं अपने॥
फिर "सुधाकर„ क्यों सुधा लाया है बरसाने को।
न याद कीजिये गुज़रे०

* ग़ज़ल *

कभी दिल का अरमान होगा।
और फिर भी बंदा तो क़ुरबान होगा॥
जिने आलम से मुझको उजाड़ा।
वो आबाद मदफ़न का मैदान होगा॥
अदा से बताया जो मुझको।
तो बोले यह कोई बेईमान होगा॥
मिटादो मिटादो चढ़ादो उड़ादो।
समझता हूं! यह उनका फ़रमान होगा॥
मेरा हाल पूछें तो क़ासिद यह कहना।
के कुछ देर का और महमान होगा॥
जिसे चाह तेरी न होवेगी दिलबर।
भला कौन ऐसा भी इनसान होगा॥
नतीजा यही आख़री है "सुधाकर,,।
न कोई तेरा हाल पुरसान होगा॥

तुम्हीं राम हो और तुम्हीं हो रहीम।
दयालू तुम्हीं हो तुम्हीं हो करीम।
प्यारे अलीम प्यारे अलीम॥ तुम्हीं०
तुम्हीं सर्व ज्ञाता तुम्हीं हो फ़हीम।
तुम्हीं भोग दाता तुम्हीं हो नईम।
है कदमों पे ख़ादिम दुज़ानू मुक़ीम।' प्यारे अज़ीम २ तु
तुम्हीं दो जहाँ के हो मालिक अज़ीम।
तुम्हीं लामकाँ के हो ख़ालिक़ मुनीम।
मुदाम रहे हमपे लुत्फ़े अमीम॥ प्यारे अज़ीम २ तु.
तुम्हीं हो मसीहा तुम्हीं हो हकीम।
तुम्हीं हो "सुधाकर,, की प्यारी नसीम।
अदब दस्त बस्ता करे यों यतीम॥ प्यारे अज़ीम २ तु.
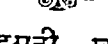
मिटाने को मेरी हसती खड़े वह तेग़ ताने हैं।
मिटाने के लिये मुझको उन्हें लाखों बहाने हैं॥
ज़मीनो आसमाँ आबो हवा शमशो क़मर तारे।
मिटेंगे यह भी सारे, हम बिचारे कौन मानने हैं॥
क़यामत होगी तो हमदम बिसाले यार भी होगा।
शहीदे नाज़ हैं मिटने की तो हम ख़ुद ही ठाने हैं॥
यह नज़रें नाज़री बेज़ार हैं नज़रों से मिलने को।
नज़र उनकी हुई नज़रों पे तो अपने ज़माने हैं॥
मिटाना और बनाना यह तो अदना खेल हैं उनके।
बसाने हैं ज़माने और कभी उनको मिटाने हैं॥
भरे अरमान हैं मुरदा सिफ़त लाखों ही इस दिल में।
यह मुरझाये हुए गुल कुछ "सुधाकर,, के तराने हैं॥
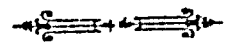
करूँगा सामना कबतक मैं उन के तीरों का।
कलेजा बनगया घर यार की शमशीरों का॥
जियेगा किस तरह नाचार आबो दाने बिन।
असीर दामे क़फ़स इश्क़ की ज़ंजीरों का॥
है लब पे आहो फ़ुग़ाँ चश्म से दरिया जारी।
नतीजा है यह मेरी वस्ल की तदबीरों का॥
मिटा दिये गये साइल सवाल से पहिले।
महज़ यह हाल हुआ हुस्न के फ़क़ीरों का॥
किसी को क्या कहें रंज और ग़म अलम अपना।
ख़ुदा ही जानता है हाल हम असीरों का॥
पकड़ के सीना "सुधाकर, सँभालिये दिल को।
इलाज कीजिये ज़ख़मी जिगर के चीरों का।

मुसलमां और हिन्दु ध्यान में लायें तो अच्छा है।
हैं भाई भाई जो आपस में मिल जायें तो अच्छा है॥
रहें दोनों ही मिल कर गुलिसताने हिन्द के गुलचीं।
मिसाले गुल व बुल बुल दिलको बहलायें तो अच्छा है॥
करें परवाज़ दोनों इस चमन की डाली २ पर।
नशेमन एक में दोनों ही रह पायें तो अच्छा है॥
नहीं सैयाद का खटका है, है अब दौरे आज़ादी।
तिरंगे ध्वज को मिल दोनों ही लहरायें तो अच्छा है॥
बढ़ायें दिल में सादिक़ इत्तफ़ाक़ और इत्तहाद अपना।
गले से राग दोनों एक ही गायें तो अच्छा है॥
'सुधाकर, की गुज़ारिश, भाइयों से दस्त बस्ता है।
करम ख़ादिम पर नसबुलऐन फ़र्मायें तो अच्छा है॥

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुंज ❀

श्री राम जन्म बधाई

❀ रचयिता ❀
श्री गिधर दास बोहरा कवि "सुधाकर"
टोंक (राजस्थान)

दोहा

सुनो रँगीला राजवी, ढाढनियां रा कंथ ।
राम जनम की धूम में सुनकर आई पंथ ॥
का मुख सूं वर्णन करूं महिमां अमित अनंत ।
द्रव्य लुटावत कोष ते नृप दशरथ श्रीमंत ॥

[तरज] म्हारो जोबन बीत्यो जावे छ ! छैला बेईमान ।

म्हांने केसरया लेचालो ना नृप दशरथ रे द्वार ।
बांके राज भवन में लीनो सा त्रिभुवन पति अवतार ॥
कौशल्या कैकेई सुमित्रा महिषि मृदुल सुधार ।
चन्द्र चन्द्र सा चार सुवन जिन जाया रसिक कुमार ॥
फूले फिरें नगर नर नारी हर्षित विविध प्रकार ।
जय जय ध्वनि कर मंगल गावें सुघर सुहासनि नार ॥
विप्र विशारद वेद बखाने कर षोडश उपचार ।
देश २ ते गुणि जन आवे, महिमां अमित अपार ॥
मैं गुलनार अजब अलबेली, रँग भीनी रँगदार ।
तेरातालन बनकर नाचूं मोतियन मांग सँवार ॥
ढाढनियां री सुनो "सुधाकर,, अरजी बारम्बार ।
मणि मुक्ता धन अनंत लास्यां आज बधाई वार ॥ म्हां०

[त.] म्हारो मही मत लूटो जी मैं छूं गोलक की कान्हा गूजरी ।

सखी आनँद छायो ए ! दशरथ घर धायो ए —
रघवर लाडलो ॥ सखी आनँद छायो ए० टेर
जन्म भयोहै राम को सरस बाजे रँग बधाय ।
फूली कौशल्या फिरे अधिक आनँद उर न समाय ॥
अति मन भायोए । सुख उप जायोए । जगत सराहयोए ।
नैनन उर म्हायोए रघवर लाडलो ॥ सखी०
पीत झँगुलिया तन लसे सुभग पग नूपुर रहे बाज ।
गोद खिलावत राम को ! मदन कोटिन छवि रही लाज ॥
जिय ललचायो ए, पलना झुलायो ए, दिवस बढ़ायो ए,
राजन सुत पायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०
चरण कमल सम कोमल सोहे नील जलद तनु श्याम ।
मृगमद तिलक मुनिन मनमोहे मृदुल हास्य अभिराम ।
ललना लडायो ए । रूप दिखायो ए । काज बनायो ए ।
सुन्दर सुखदायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०
घर २ मंगल होरह्या सुरस सुजस न बरण्यो जाय ।
दास "सुधाकर,, कहत बधाई प्रभु पद सीस नवाय ॥
वेदन गायो ए । परं अघायो ए । हँस मुस्कायो ए ।
मधु रस बरसायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०

[तरज] लेल्यो २ जी खरबूजो मजादार—
साजन म्हारी बाड़ीको ।

लीनो लीनो जग में त्रिभुवन पति अवतार—
बधाई रघुवर राम घरां ।
कीनो कीनो प्रभुजी निज जन रो उद्धार—
बधाई रघुवर राम घरां ॥
पूर्व जनम में मनु सतरूपा कीनो तप भर पूर ।
तेहि के कारण राजसुवन बन आया आप हुजूर ।
राणी कौशल्या रा महलां रा सिणगार ॥ बधाई०
जब ते जनम लियो जग मांही आनँद मंगल छाया ।
धन्य घड़ी धन भाग नवल झांकी रा दरसण पाया ।
थाने गोद्यां ले ले करस्यां सुख से प्यार ॥ बधाई०
श्यामल २ चंद्रवदन घन सुन्दर भाई चार ।
राम लछमण भरत शत्रुहन रूपां रा भण्डार ।
ज्यांकी महिमां मुख से गावे सब संसार ॥ बधाई०
मधुर २ छवि प्यारी लागे मनहर कामण गारी ।
जाय 'सुधाकर, तन मन से उन चरणन पर बलिहारी ।
म्हांने पाया भूमि भार उतारणहार ॥ बधाई०
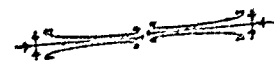
[तर्ज] जागो जी जागो भागो वापखाणो मोल्यो आगो,

की तिहारी, बनी आज, कैसी प्यारी प्यारी।
सज कर आई हूँ सिणगार सखियां न्यारी न्यारी ॥
मोतियन चौक पुराओ, सखी आओ आओ।
राग बधाओ सुख पाओ प्यारी, गाओ गाओ।
द्विज, पृथ्वी रे काज लाज्ञा नर तनुधारी ॥ झां०
शिव ब्रह्मादि सुर आय सारे नभ पर छाये।
पुष्पन झरियां लगाय, आनँद मंगल गाये।
सुख निधि, त्रिभुवन राज तुमपर तन मन, वारी ॥ झा०
घर घर में बांधी, वंदन वार मारग हाट सजायो।
अवधपुरी सों मानो देवतां रो लोक —सजायो।
नीकी बधाई रही बाज मुनि मन मोहन हारी ॥ झांकी०
रघुवर रघुनंदन राघराज लीन्यो सुख सुखकारी।
भक्ति, 'सुधाकर, जग शिर ताज अनुपं महिमा भारी।
उपमा कहा बरणूँ आवे लाज, लाला ललन बिहारी ॥ झां०

[तरज] थांने गेले मिलेली गणगोर म्हारा-

मैं सुण आई सखीरी नई बात राणी कौशल्यारे ढोटा जायो री।
अरी पण जायो लाला री काई बात।
थांके त्रिभुवन पति महलां में आयो री ॥ मैं सुण०
चन्द्र बदन मुख मंद हसन छवि।
अरी लल चायो! इन श्याम बरणपर मन लल चायो री ॥ मैं०
कंचन थार सजाओरी सजनो।
अरी पण पायो! मंगल गावण रो शुभ दिन पायो री ॥ मैं०
मोतियन चौक पुराओ री आली।
अरी सुख छायो! सब सखियां आज बधाओ गायो री ॥ मैं०
राम लछमण भरत शत्रुहन।
अरी ओ धरायो! राजाने थांका नाम धरायो री ॥ मैं०
ऋषि मुनी जन दरशन ने आया।
अरी मन भायो! सब अवध पुरी में आनँद छायो री ॥ मैं०
कहत बणत नहीं सुजस "सुधाकर,,।
अरी मैं भुलायो! छविलख रघुवरकी ध्यान भुलायो री ॥ मैं०
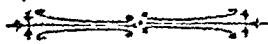
[तरज] लेहरदार वीछूड़ो मायारो लोभी वीछूड़ो।

सुन राम जनम को आई मन हर्षाई जी कामनियां —
नाचे नार ढाडनियां।
म्हारा लालनरा पगल्यां में झुन झुन बाजे जी पाजनियां —
नाचे नार०
म्हारा साँवल सा बँदड़ा रा नख पर लाजे जी दामनियां —
नाचे नार०
थांकी चन्द्र छटापर तन मन धन बलिहारी जी साजनियां —
नाचे नार०
म्हांकी गोदयां मांही मुळक २ किलकारो जी लालनियां —
नाचे नार०
मैं फूली नांये समाऊं सुध विसराऊं जी राजनियां —
नाचे नार०
थांको मोहनसुन्दर रूप "सुधाकर,, भावे जी भावनियां —
नाचे नार०
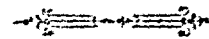
[तरज] राधेश्याम मुरारी रे साँवरो घनश्याम कन्हैयो०

म्हारा रघुनंदनजी रे थेतो घणा दना में आया।
प्यारा राज कुँवरजी रे थांका दरसण मनमें भाया ॥ म्हा०
राजा दसरथ जी रा बेटा कोसल्या जी जाया।
राम लच्छमण भरत सत्रुघण थांका नांव पड़ाया ॥ म्हा०
हरया २ गोबर पीलो सूं आँगण चोक लपाया।
गांव २ सूं भाँड भाँडणी आकर मंगल गाया ॥ म्हारा०
सजा २ कर ब्याण देवता आकासां पर छाया।
देख २ कर लीला थांकी फूल घणा बरसाया ॥ म्हारा०
वसवामंतरजी की लारां जाकर होम कराया।
राकस लड़्या आया तो थे तीर कुबाण चलाया ॥ म्हा०
आगे त्रेता जुग में म्हांने रावण घणा सताया।
थे न आया जो पहल्यां तो राजघणा दुख पाया ॥ म्हा०
अवध पुरी के मांय "सुधाकर,, सरजू जी पर धाया।
महमां थांकी असी सुणी जो सूरजचांद थकाया ॥ म्हा०
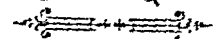
प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

वर्षाऋतु

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास वोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

[तरज] रासोला म्हारी, थेही दया निधि लाज ।

मनाऊं देवा ! गणपति परम रसाल ॥ मनाऊं०
पूज्य प्रथम तुमरो यश गाऊं । गीत सुनाऊं स्वर ताल ॥
षोड़स विधि से सेवा रचाऊं । पुष्प चढ़ाऊं शुभ माल ॥
नाना भांति के भोग लगाऊं । भर भर लड्डुवन थाल ॥
वर्षा ऋतु में हित से ध्याऊं ।
सुखद "सुधाकर,, लाल ॥ मनाऊं०

[तरज] नाटक ।

श्याम, श्याम, श्याम भँवरा मधुर २ गूँजत मधु वनमें ।
थान, वान, तान मुरली कूकत सजनी सुमनन वनमें ॥
बहार आई सुमन फूले, घटा छाई सुआनन में ।
प्रकाश एकदम हुआ अद्भुत सुवर कुञ्जनमें काननमें
पधारे सांवरे राधे रमन, ज्यों चन्द्र तारन में ।
दृगन में माधुरी झांकी बसी अरु प्रेम प्राणन में ॥
फूल फूल फूल, कलियां चटकन लागीं सुवर चमन में ।
आन मान ध्यान बिसरत–
बसत 'सुधाकर,' जिन चितवनमें ॥ श्याम०

[तरज] मेरो किधर गयो घनश्याम–

सांवरिया पार लगाय ! नैया बहीजाय है जीवन की ॥ सां.
काम क्रोध की छई बदरिया, मान मोह की भई अँधरिया ।
नाँय डगरिया लखाय ॥ नैया०
भवसागर मायाजल भरिया, बिन पतवार न कोऊ तरिया ।
करिया तुमही सहाय ॥ नैया०
लोभपवन रह्योभवँर रचैया, जेहिबिच तरनी डोलत रहैया
आओजी कन्हैया धाय ॥ नैया०
कोउ न 'सुधाकर, धीर बँधैया टेरतहूं जिमि बच्छ बिन गैया
मैया लेहु बचाय ॥ नैया०

[तरज] लहर चढ आई रे बीछूड़ा री सारी

बदरिया कारी जी बरसत रिम झिम प्यारी ।
घनन २ घन गर्जन लागे, नभ मण्डल पर भारी ।
सावन में घनश्याम घटा को बिजली करत हजारी ॥ ब.
दादुर मोर पपैया बोले, डोले त्रिविध बयारी ।
कली २ फूलन पातन पर, भँवर करें गुञ्जारी ॥ बद०
उमग २ कर ताल तलैयां करी दधि मिलन तयारी ।
सज सिणगार रही पृथ्वी भी ओढ़ हरी रँग सारी ॥ ब०
सरयू पर सियाराम सुहावत, यमुना कृष्णमुरारी ।
कुञ्ज सघन में सखियन के सँग श्रीवृषभानु दुलारी ॥ ब०
निकसत ढुरत हँसत मुसकावत, चन्द्र छटा सुखकारी ।
पट घूंगट में भाव दिखावत, जेहि बिध चञ्चल नारी ॥ ब.
ललित लाल लावण्य लता लख, चकित भई व्रज नारी ।
नवल लली ललना लालन पर जाय 'सुधाकर, वारी ॥ ब.

[तरज] नाटक ! भर भर जाम साक़िया दे ।

बदरा घूम घूम छाये ।
मोरे कान्ह मान ग्रान ! अजहुं न आये ॥ बदरा०
छाई बदरिया काली । गरजे घटा निराली ।
आये नहीं वनमाली,
मैंतो जाऊंगी पिया के ढिग आली ।
जियरा ने यही, लगन लगाली ।
मोहे खान पान गान कछु न सुहाये ॥ बदरा०
छांड गये वर्षा ऋतु में व्रजराज मोहे सुन ऐरी सखी ।
दासीसे नेह रचाय, गये व्रजवासी बिसारके कुञ्जगली ।
जीवन की कुमलायरही मुरझाय गई सखी कुन्द कली ।
मोहनश्याम 'सुधाकर,के बिन यहऋतु लागत नांयभली ।
ऐरी आन वान तान बिजली डराये ॥ बदरा०

[तरज] आओ हमारे प्यारे मुरारी सँवरिया।

बदरिया कारी, घटारी उजारी में।
हार प्यारी, फुलवारी हमारी में ॥ आओ०
घन गरजे चम २ चमके रिमझिम २ बरसे री।
औ खेलें कूदें नाचें गावें जियरा हर्षे री।
आओ री आओ, लगाओ री तान।
गाओ "सुधाकर,, सुघर गान।
सुजान, करोरी ध्यान। रती समान, पाओरी मान ॥
छाई बदरिया कारी०

[तरज] लहर दार बिछुड़ो। मायारो लोभी बीछुड़ो।

कारे २ बदरा ब्रजपर छाये रे कान्हूड़ा, बरसनको–
होय रहे आरूढ़ा। अब का होयगो ब्रजरमूड़ा ॥ कारे०
गर्जत घन बिजली चमक भमक डरपाये रे कान्हूड़ा।
कम्पे धरती आकाश भुवन थर्राये रे कान्हूड़ा।
रजनीसम दिनभयो श्याम प्रलय होजाये रे कान्हूड़ा।
कियोकोप सुधाकर, इन्द्र कुशल न दिखाये रे कान्हूड़ा।
बरसनको होयरहे आरूढ़ा, अबकाहोयगो ब्रजसमंड़ा, का.

[तरज] नाटक। दिन हैं बहार के।

कैसी बहार है। हां…कैसी०
उमड घुमड कर छाये बदरवा घूम घूम बरसें। कैसी०
बिजली चमके डरलगे, गर्जत है घनघोर।
श्याम हमारे घर नहीं मोहन मन के चोर।
सघन चमन में देख सखीरी, कलियन बीच निखार है।
डार डार पर मैना बोले, कोयल रही पुकारहै। हां…कै.

[तरज] जादू भरे तोरे नैना सितमगर।

कबसे खड़ी तोरे दर्शन को प्यारे मैं ॥ टेर
चमक रही है बिजली श्याम घटा छाई है।
मुरारी देखो चमन में, जो बहार आई है ॥
चमेली मोगरा नर्गिस जुही खिलाई है।
हरेक गुल ने सँवर कर, अदा बनाई है ॥
लगी रिम झिम "सुधाकर" है। मेह कीभड़ी ॥ तोरे०

[तरज] सखी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

आज सखी मधुबन बोले मोरा [illegible] और
मुरलीवाजी श्याम सुन्दरकी, उठतरहे घन घोरा। आज०
घनी २ बूंदन बरसनलागी, पवनवहे भक भोरा।
चमकत दामनी घन २ गर्जत जियालजत नहींथोरा। आ.
बाट निहार रही साजनकी, रैन गई भयो भोरा।
हेरी 'सुधाकर, अजहूं न आयो नंदमहरजीको छोरा ॥ आ

[तरज] सखी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

सखी मोरे बूंद कपोलन लागी। टेर
सोयरही पियासँग भवनमें, घनगरज्यो तब जागी।
उमडघुमड कर छाये बादरवा श्याम बरण दुखदागी ॥ स.
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल सुखद सुहागी।
उत चातक मधुस्वांति चहे, इत नैन सजन अनुरागी ॥ स.
याऋतुमें आनँद प्रीतमसँग पावत सोही बड़भागी।
सुन्दर शोभा देख मोहनकी प्रेम "सुधाकर,, पागी ॥ स.

[तरज] सखी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

आज सखी शोभा बरनी न जाई ॥ टेर
प्रात समय निकसे मनमोहन, सोहन श्याम कन्हाई।
घन २ गरजत दामिनि के सँग सुघर घटा घनछाई ॥ आ०
पीतवसन पहिरे तनसुन्दर कुसुमल पाग झुकाई।
गल वैजन्ती माल विराजत, अधरन मुरली सुहाई ॥ आ०
नीलाम्बुज नैनन में आली, अंजन रेख लगाई।
कर लकुटी अरु कांधे कमलिया लाजत सुन्दरताई ॥ आ०
याविधि जाय सघन सुमनन बनमें सखी बंसी बजाई।
दौरपरी सब वीर 'सुधाकर, धीर न काहुमन आई ॥ आ०

[तरज] सखीरी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

सखीरी आये भीजत नंद कुमार ॥ टेर
सीस मुकुट मकरा कृत कुण्डल, गल मोतियन को हार।
मुरली मधुर बजावत मोहन, सुन २ धाई ब्रज नार ॥ स०
राग सुनावत, अति सुख पावत, गावत गीत मल्हार।
श्याम 'सुधाकर, की छवि ऊपर, तन मन धन बलिहार ॥

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

सावन के झूले

❀ रचयिता ❀
श्री गिरधर दास वोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

[तरज] चँद्रावल शिवनार अकेली म्हगई रे।

सखीरी मैं तो सावनमें, सुमरू गणपति लाल ॥ सखी०
ऋध सिध सुखसम्पती के दाता। मंगलरूप रसाल ॥ स
प्रथमपूज्य को प्रथम मनाऊं। धर महिपर निजभाल ॥ स
पंगु चढ़ें गिरी जाकी कृपासे। मूक होहिं वाचाल ॥ स०
वन्दौं चरण सरोज 'सुधाकर,। शर्णागत प्रतिपाल ॥ स०

[तरज] ओ सांवरा आज तमां म्हारे घर आवज्यो।

ओ लालजी नैन में झुलाऊं थांने लाड़ला। टेर
नैनन के डोरन सूं बांध के हिंडोरना।
पलकन थी पाटली बिछाऊं ॥ ओलाल जी०
स्वेद बीच शयम तामें मोहन श्याम माधुरी।
श्याम श्याम श्याम गीत गाऊं ॥ ओ लाल जी०
सुरतारी कुञ्ज सघन नेहरी फुलवारी में।
चुन २ गुल हारगल सजाऊं ॥ ओ लाल जी०
चावसूं उछावसूं बलिहारी वारी वारी जाऊं।
सीस युगल चरण में झुकाऊं ॥ ओ लाल जी०
मंद मंद अधर २ सुधर "सुधाकर,, दे लोरि।
अँसुवन जल प्रेम थी बहाऊं ॥ ओ लाल जी०

[तरज] वैरण मतलड़ ए म्हारा आलीजा ढोला ने-

मोहन लालजीरे थांनेनेणारे मांय झुलाऊं सुन्दर सांवरा,
रूप रसालजीरे थांने कजरारी ओट छुपाऊं सुन्दर सांवरा,
बांकी सी झांकी अनोखी छे थांकी।
सोहनी सुध बिसरावे छे म्हांकी।
श्याम घटा सी छटा थांकी देख के-
बोली में बलिहारी जाऊं ॥ मोहन०
सूरज थे मैं सरोजनी थांकी।
नैनन रे बिच घूमत झांकी।
लागी लगन, छूं मगन थांका प्रेम में-
हिवड़ा सूं अब ना भुलाऊं ॥ मोहन०

श्याम करे ज्यांकी प्यास बुझाओ।
थांकावणे त्यांका थे बणजाओ।
जो म्हारे सनमुख आओ साँवरिया-
तो भुज भर कण्ठ लगाऊं ॥ मोहन०
सुणज्यो "सुधाकर,, वीनती म्हारी।
ठाकुर थे छो तो मैं छूं पुजारी।
चरणां री शर्ण में राखो विहारी-
मैं थांका ही गुण नित गाऊं ॥ मोहन०

[तरज] वर्षा के दिन आये री सजनी।

नेह नयो अरु, मेह नयो सखी-
श्याम नवल, वृषभानु किशोरी।
नव पीताम्बर नई २ चूनर-
भीजत दोउ मिल मोहन गोरी ॥ नेह०
नव वृन्दावन नव फूलन वन फूलो री।
मल्हार राग नई गाओ, नवल झूलो री ॥
समय सुहावन सब भांति है अनुकूलो री।
रिझओश्याम "सुधाकर,, सखी न भूलो री ॥
नव भूषण नव मुकुट विराजत-
लाजत मदन, लखत छवि का री ॥ नेहनयो०

[तरज] जाओ जी जाओ झूटी बातों के बनाने वाले।

झूलो जी झूलो, श्रीवृषभानु की दुलारी प्यारी ॥ झू०
आई सावन की बारी, छाई बादरिया कारी।
बोले कोयलिया मधुर बैन, चूमे डारी डारी ॥ झू०
श्यामा के संग नये ढंग से झूलें बनवारी।
गावें मल्हारें मधुर राग से गोकुल की नारी।
कृष्ण मुरारी जग हित कारी, असुरारी पर हो—
बलि हारी ॥ झूलो जी झूलो श्री०

...करमन का गात न्यार।।
...रही है व्रज नारी ! छबीली प्यारी ॥ टेर
...रत निशङ्क नवेली । योवनमद की मारी ॥ छ०
...सखि सुमन डारत मोहन पर ।
...चितवन मन हारी ॥ छबीली०
...घन चमन में घटा छारही कारी कारी ।
...विविध सुरंग छटा श्याम पे न्यारी न्यारी ।
...न मिस आई सारी ॥ छबी०
वहे समीर त्रिविध सहचरी गावें गारी ।
झुलावें श्याम 'सुधाकर, को सुखद मनहारी ॥
श्री वृषभानु दुलारी ॥ छबीली०

[तरज] चँद्रावल शिवनार अकेली रहगई रे ।

कुञ्जन वनमें आज, हिंडोरो है आली ॥ टेर
उमड़घुमड़ कर छाये बदरवा । बिजली चमकरही गाज ॥
रतनन मणिसे जड़ियो हिंडोरो । रेशम तणियासाज ॥ हिं
झूलतहैं श्यामासँग मोहन । अरु वंसी रहोबाज ॥ हिं०
सखी ललिता चंद्रावल आदिक । ठाढ़ीं झुलावन काज ॥
श्याम 'सुधाकर, हँस २ झूलें । व्रजभूषण व्रजराज ॥ हिं०

[तरज] कैसी कहूं मोरीवीर, पिया मोसे रूठ रहे ।
आए नहीं घनश्याम ! सुहावन सावन में ॥ आए०
झम झम चमके बीजुरी रिमझिम बरसे मेह ।
घन २ गर्जे घन घनो, थम थम लर्जै देह ।
झूलें हिंडोरे व्रजधाम ! सुहावन सावन में ॥ आए०
मन मोहन मुरली वारा । मधुसूदन कामण गारा ।
अनुराधा नैनन तारा । मतवारा नंद दुलारा ।
सोहन सुखमां धाम ! सुहावन सावनमें ॥ आए०
छाय विदेश रहेरी पिया, नव नेह का नाता तोड़ दिया ।
दासी से प्रीत लगाय कुंप व्रजवासी बनाय कठोर हिया ।
चैन मोहे दिन रैन नहीं, निन नैन बहावत री नदिया ।
जायजिया दुखपायहिया सखी भर २ आवतरी छतियां ।
तनक नहीं री विश्राम ! सुहावन ॥ आए०
आओ प्राणाधार श्री राधावर कुञ्जन में ।
सखियां रहीं निहार "सुधाकर,, माधो वन में ॥
पिया मिलन की आस लगाकर धन तन मन में ।
जोवत निशिदिन बाट, खड़ीसब प्रेम लगन में ।
सूना है सब नँद ग्राम ! सुहावन ॥ आए०
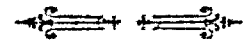
[तरज] (नाटक) बदरिया रिमझिम बरसण लागी ।
री. अलयां ! हिल मिल झूलन को चलियां । टेर
गोरी २ सखियां । भोरी २ अलियां ।
प्यारी प्यारी राधा सँग झूलें नँदलाल ।
मोहनियां ! हिलमिल झूलन को चलियां ॥ री०
यमुना रुचिर कदम तले झूलें श्याम श्याम ।
गोपी जन दें लोरियां, सुन्दर रूप ललाम ॥
पूछत लेकर हाथ में छड़ी खड़ी व्रज वाम ।
बतलाओ जी मोहन, बरसाने वाली को नाम ॥
आई ऋतु भलियां । खिले गुल कलियां ।
गावत बांसुरिया में परम रसाल ।
सजनियां ! हिल मिल झूलन को चलियां ॥ री०
राधे २ कृष्ण मुरली कोयल चातक मोर ।
वृन्दावन कुञ्जन में गोपीजन को मच रह्यो शोर ॥
भूलरही सुध बुध तन मनकी, प्रेमा रसमें बोर ।
निरखत मधुसूदन अनुराधा नागरी नवलकिशोर ।
मीठी २ बतियां ! करें गजगतियां ।
झूलत "सुधाकर,, झुलावें व्रजबाल ।
दुलहनियां ! हिल मिल झूलन को चलियां ॥ री०

[तरज] मांड, बना म्हांने प्यारा लागो जी ।
जी राधा थाईरा निरखणहार, कुञ्जनवन झूलन झूलोजी ।
जी म्हारी लाडलरा सिरदार झुलावेथाने प्यारीझूलोजी ॥
प्यारी झुलावे थाने, मोहन झूलो जी ।
ओजी राणी रुकमणिरा भरतार ॥ कुञ्जन वन० जी राधा.
कदम की डार सुहावत झूलो जी ।
ओजी प्यारा झूलोने नंदकुमार ॥ कुञ्जन० ओजी रा०
श्याम झुलावे थाने, श्यामा झूलो जी ।
ओजी लाला गोरी २ बैयां पसार ॥ कुञ्जन० ओजीरा०
लाल "सुधाकर,, सांवर झूलो जी ।
ओजी थाँपे तन मन धन बलिहार ॥ कुञ्जन०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

प्रेम कहानी

※ रचयिता ※
श्री गिरधर दास बोहरा कवि,
टोंक (राजस्थान)

(तरज) तृष्णा तू ना गई, दिन २ प्रबल भई रो ।

चन्दा तूही बता, मेरे श्याम को पता ॥ चन्दा०

सबही बन २ ढूंढ फिरी मैं वृन्दावन की बारी में ।
बंसी बट जमुना के तट पर कुञ्जन की फुलवारी में ।
चैन नहीं दिन रैन पिया बिन–
साजन अब ना सता ॥ चन्दा०

हे ! वृक्षो देखे कहीं, तुमने मेरे मीत ।
जाने प्रीत लगायके लीनो जियरो जीत ।
नरगिस चमेली अरु बेली सोहनियां–
बोल २ माधुरी लता ॥ चन्दा०

छांड गये घनश्याम हमें बेदर्दी को नेकहु पीर न आई ।
नीर बहाय रही अंखियां गयो धीर उदासी पिया बिन छाई ॥
प्रीत नहीं अनरीत करी तुमही कुछ सो यो विचारो कन्हाई ।
दासी से आय मिलो ब्रज बासी नहीं अब होगी लोग हँसाई ॥
दादुर मोर चकोर कोयलिया–
सुनी कह तेरो भी मता ॥ चन्दा०

हाय करूं तो जग जले जंगल हू जरजाय ।
पापी जियड़ा ना जरे जामें हाय समाय ॥
कागा सब तन खाइयो चुन २ खैयो मांस ।
दो नैना ना खाइयो पिया मिलन की आस ।
श्याम "सुधाकर,, बेगसिधा ओ–
नाहीं तो बनाऊंगी चिता ॥ चन्दा०
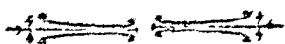
(तरज) मेरा साँवरिया गोपाल री बंसी बाजी कुञ्जनमें ।

एरी मेरो बिसर गयो घनश्याम कौन बन ढूं ढूं री आली ।
एरी सखी सुन्दर सुखमां धाम बसन मेरा मनमें बन माली ।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अधर कपोलन लाली ।
बरणी न जाय मनोहर शोभा सूरत सांचे ढाली ॥ कौन०

नीरज तनपर सुरँग पीत म्बर श्रवण निकट लट काली ।
श्याम करन में सोहत मुरली टेरत राग रसाली ॥ कौ०

काह कहूं कछु कहत बने ना प्रीत की रीत निराली ।
जाके तन लागे सोही जाने जियरा की जंजाली ॥ कौन०

आओ 'सुधाकर, प्रेम सदन में हृदय भवन
इन नैनन ने हरिचरणन में अपनी लगन लगा

(तरज) मोरी लागी लगन गिरधर से ।

ब्रजके कृष्ण कन्हैया । पार लगादो नैया ॥ ब्रजके०

बीच भँवर में नाव पड़ी है ओ जगके रखवैया ।
तुम बिन कौन उबारे प्यारे, निर्बल के बल भैया ॥ ब्र०

रैन अँधेरी सूझत नाहीं पवन बहे पुरवैया ।
डगमग २ तरणी डोले नीर अथाह भरैया ॥ ब्रजके०

सुत बिन दारा मित्र कुटुम्बी कोऊ न करत सहैया ।
भीर परे पर आवत नाहीं साजन पीर हरैया ॥ ब्रज०

जीवन की है नाव पुरानी, जग को सिंधु भरैया ।
निज पापन को भँवर भयानक कर्मन पवन झुलैया ॥ ब्र०

तुम ही आय बचाओ सुख कर गिरधर गिरके उठैया ।
मेरा दुःख निवार है भारी ध्यान 'सुधाकर, लैया ॥ ब्र०

(तरज) रे मन कर कुछ ध्यान ।

समझो फूल समान ! जवानी दो दिन की मिजमान ॥ स०

माली ने एक बाग लगाया । खूब अनोखा रंग जमाया ।
मूरख पंछी देख लुभाया ।
बिसर गया सब ज्ञान ॥ जवानी०

बीज उगा कुछ दिन सरसाया । फूला फला और कुमलाया ।
जान अकारथ दूर हटाया ।
रहा न नाम निशान ॥ जवानी०

मस्त जवानी अजब दिवानी ।
जिसमें भ्रम गये ऋषि मुनी ज्ञानी ।
ज्वर सम गति हम तेहि की जानी ।
है, एक दूध उफान ॥ जवानी०

पानी का सा बुद २ पाया । क्षण भंगुर सी जीवन छाया ।
नश्वर है तन कञ्चन काया ।
सांच "सुधाकर,, मान ॥ जवानी०
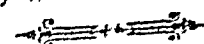
(तरज) पिया तुम बिन चैन न आवे—

डगर हमारी ! मन मोहन श्याम बिहारी ॥ च०
मैना जल भरन जाते हैं हिल मिल सखियां सारी
मग रोकत कान्हा नट नागर बनवारी ॥ च०
कोरी चुरियाँ तोरी बैयां मरोरी न्यारी।
तोरी सगरी मोरी अँगियां मसका डारी ॥ च०
अंचरन पर हाथ छुवायो दूंगी हजारन गारी।
मां से जाय कहूंगी सारी रगल तुम्हारी ॥ च०
तुम गोकुल के कँवर कन्हैया हम ग्वालन मतवारी।
तुम नंद जी के लाल 'सुधाकर,, हम ब्रषभान दुलारी ॥च०
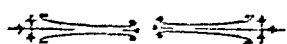
(तरज) हित से राम सुमर रे प्राणी।

अखियां दर्शन ही की प्यासी।
छांड गये सुखरासी ॥ अखियां०
कारो है तन तेरो मन भी है कारो।
का जाने पर दुख दई मारो।
डार गयो गल फांसी ॥ अखियां०
निठुर निर्दई निपट अनारी।
बात बनाकर सगरी बिगारी।
बैरण घर भई हांसी ॥ अखियां०
चैन न आवत उन बिन सजनी।
दिन काटूं तो कटे नहीं रजनी।
निसि दिन रहत उदासी ॥ अखियां०
झूट कपट की बान बनाकर।
छांड गये ब्रज राज 'सुधाकर,,।
रावे चन्द्रकला सी ॥ अखियां०
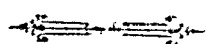
(तरज) भारत में भगवान प्रान बन आजाओ।

मोहन मोसे ना बोलो—
जाओ सोतन के संग ॥ सजन मोसे ना०
प्रीत की रीत कहां तुम जानो।
घायल की गत कैसे पिछानो।
सूख गयो सब अंग ॥ सजन मोसे ना०
ना समझी थी मैं प्रेम कहानी।
सो तुम संग कर प्रीत मैं जानी।
अब ना चढ़े कछु रंग ॥ सजन मोसे ना०
ब्रज वासी धर ध्यान निहारो।
एक दासी मन चाव हमारो।
बैरण कर दियो भंग ॥ सजन मोसे ना०
मैं ना सुनूं अब श्याम "सुधाकर,,।
कुबजा ही राखेगी कंठ लगाकर।
देख लियो सब ढंग ॥ सजन मोसे ना०

(तरज) प्रीत लगाये पड़ी उलझन में—

डोलत है कोई विरहिन तन में इन नैनन में आय २।
झूलत है मन हृदय भवन में पड़ उलझन में हाय हाय ॥
विरह सतावे कल नहीं आवे।
चातकनी कब चन्द्र को पावे।
चिन्ता निशि दिन खाय खाय ॥ डोलत है०
जब साजन को पीर न आवे।
क्यों फिर उन की याद सतावे।
मौन रहूं दुख पाय पाय ॥ डोलत है०
प्यारे अपनी आन सँभारो।
दासी को निज प्रेम निहारो।
विनय करूं सिर नाय नाय ॥ डोलत है०
आओ "सुधाकर,, प्रीतम प्यारे।
खोजत नैना विकल हमारे।
तुम बिन कछु न सुहाय हाय ॥ डोलत है०
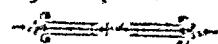
[तरज] बन जा ओ बलम मोरे मनमें उठत उछाले।
पीतमवा ओ, पीतम- मोहे, नैनन बीच छुपाले।
मद भरे नैना—मोहन बैना मोहन मन मतवाले।
सुन्दर छवि पर बलि २ जाऊं साजन कंठ लगाले ॥ पी
रूप तिहारे ने डारके जादू मोहा सब संसार।
चितवन बाणने तन मन बींधा कामरु सुकुमार ॥
प्रेम की हूक उठे दिन रतियां पीर जीया में चाले।
राज 'सुधाकर, मन मन्दिर में बसजा और बसाले ॥ पी०

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

पुरातन होली

❀ रचयिता ❀

श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सु

[कमर] टौंक (राज०)
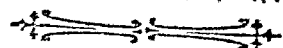
(१)

श्री गणराज कृपा करो मोपे —
मैं फागण तोय से मनाऊँजी । श्री गणराज०
  अँबुवा की डार गुलाब की कलियाँ ।
अपने हाथ चढ़ाऊँजी, चढ़ाऊँ देवा —
अपने ही हाथ चढ़ाऊँ जी ॥ श्री गणराज०
  चोवा चंदन और अरगजा ।
लड्डुवन भोग लगाऊँजी, लगाऊँ देवा —
लड्डुवन भोग लगाऊँजी ॥ श्री गणराज०
  इच्छा राम गणपति के शरणे —
निहारो दियो जस गाऊँजी, गाऊँजी देवा —
निहारो दीयो जस गाऊँजी ॥ श्री गणराज०

(२)

सदा थांके मन्दिर बरसे रंग ।
राजन के महाराज श्रीजी ॥ थाँके मन्दिर०
  मन्दिर तो थाँको खूब बण्यो छे ।
उड़त ध्वजा पचरंग ॥ सदा थाँके०
  चोवा चंदन अतर अरगजा —
केसर रंग अपंग ॥ सदा थाँके०
  उड़त गुलाल लाल भये बदरा ।
पिचकारिन के संग ॥ सदा थाँके०
  बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ ।
अरु मुरली मोचंग ॥ सदा थाँके०
  मीरां के प्रभु 'गिरधर, नागर ।
निशिदिन रहे अनंद ॥ सदा थाँके०

(३)

रंग की पिचकारी भर मारी रे, साँवरिया प्यारा ।
मोहन बनवारी, मनहारी रे, साँवरिया प्यारा ॥
  लेरंग सखिन सङ्ग करें जङ्ग मुरारी ।
  डारत अबिर गुलाल श्री वृषभानु दुलारी ॥
  है शोर चहूँ ओर श्री व्रज गूँजती सारी ।
  नाचें नचावें सङ्ग, राधेश्याम बिहारी ॥
गोकुल की नारी गावें गारी रे, साँवरिया प्यारा ।
'गिरधर, बलिहारी तुम पर वारी रे, साँवरिया
रंग की पिचकारी०

(४)

धुन— गारी ।

बरजो जसोदा जी कान्हा, गलिन में फिरत दिवाना ।
  मैं दधि बेचन जात वृंदावन, मारग निकस्यो आना ।
  छीन झपट मोरे माथे की गागर, ले अबीर मुख साना —
सखी सब देत हैं ताना ॥ बरजो जसोदा०
  भर पिचकारी मुख पर मारी, कंचुकी गटे ममकाना ।
  ढीट श्याम नवयौवन लख मेरो, परे हठ ताल बजाना —
निठुर नहीं नेक लजाना ॥ बरजो जसोदा०
  पकर बाँह मोरी फगवा खिलावत बरजत एक न माना ।
  ले कुंमकुंम तक मुखपर दीनो द्रग न नीर भर आना —
रह्यो मटकत मस्ताना ॥ बरजो जसोदा०
  कँवर कान्ह यशोदा ढिग बोलत मात यह करत बहाना ।
  झूंट ही हमरो नाम लगावत, मम हिय लागत बाना —
'सुधाकर, कह मुसकाना । बरजो जसोदाजी कान्हा ॥

(५)

धुन— मांड ।

सुनश्याम कन्हाईरे होरियां खिलाईरे, जमना तीर पे ॥
  भर केसररँग पिचकारी । मोरे गोरे बदन पर मारी ।
मोहे सुधह न आईरे, भूली चतुराईरे, जमना तीर पे ॥
  मत श्याम करे बरजोरी । काहे बइयाँ हमारी मरोरी ।
मोरी नरम कलाईरे, छाँडो मुखदाईरे, जमना तीर पे ॥
  परोहट नट नागर जारे । अचरन ढिग हाथ न लारे ।
तोय लाज न आई रे, कीनी निठुराई रे, जमना तीरपे ॥
  जब मात जसोदा आगे । गुलचे गालन पर लागे ।
तब भूलो ठकुराई रे, बन में बनआई रे, जमना तीरपे ॥
  अब मान मोहन बनवारी । 'गिरधर, गोविंद मुरारी ।
बिनती चित लाई रे, देवी प्रभुताई रे, जमना तीर पे ॥
बलदाऊजी रा भाईरे होरियाँ खिलाईरे जमना तीरपे ॥
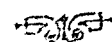
(६)

मिल चालो सभी आज लाला पे डारो री रङ्ग।
अबिर गुलाल के बादर छाये।
...ै रङ्ग सुरंग ॥ सखी मिल चालो०
गावत व्यंग विलासनी गारी।
...े ताल मृदंग ॥ सखी मिल चालो०
कुञ्जन में हरि फाग रच्यो री।
...े युवतिन के संग ॥ सखी मिल चालो०
नागरि लाल से होरी खेलन की।
छाई मन में री उमंग ॥ सखी मिल चालो०
प्रेम लसित छवी देख 'सुधाकर,।
अमर वृंद भये दङ्ग ॥ सखी मिल चालो सभी०

(७)

समझ कर दीजे मुरारी लाज भरी मोहे गारी ॥ स०
तुम अति ढीट भये मन मोहन सोहन श्यामबिहारी।
होरी में बरजोरी करत हो, खींचत हो रँग सारी।
बइयाँ जन छूओ हमारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०
काहे लाल झगरत झख झोरत तोरत कस अँगियाँरी।
ढीट लँगर तोय लाज न आवे, छूवत कुच हर बारी।
निठुर तोहे समझाय हारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०
कोमल अंग सुकुमार सुहावनी सुघर सुलोचन नारी।
तुमरे संग रमत गजगामनी कामनी तन मन हारी।
नहीं मैं वो राधा प्यारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०
मानो मोहन मोरी मानो 'सुधाकर, नातर लेहुँ निहारी।
कर दोऊ पकर चुनर से बाँधू गुलचे लगाऊँगी चारो।
छेल पन देउँगी उतारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ सम०

(८)

चालो सब, चालो सब, गोरियाँ री—
देखो कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥ चालो सब०
गई मैं नीर भरन सीस साज गागर री।
अकेली जान मोहे घेर लई नागर री।
करी जिन चोरियाँ री कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥ चा०
सुरङ्ग रंग भरी हाथ लिये पिचकारी।
बनी उमङ्ग से चट ताक कुचन पर मारी।
करी झक झोरियाँ री, कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥
अबिर गुलाल भरो झोरियन में सखियन के।
मुरारी कान रहे मार बान अखियन के।
दई रँग बोरियाँरी, कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥
मजीरा बाँसरी मृदंग चङ्ग बाज रहे।
सखिन के बीच 'सुधाकर, मुकुंद राज रहे।
मनोहर जोरियाँरी कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥
चालो सब चाल सब गोरियाँ री, देखो कुञ्जन में श्या०

(९)

सखी नंद को लाल रह्यो रंग डाल,
सब ब्रज की बाल भई लाल लाल ॥ सखी०
डारत गुलाल नाचत गोपाल।
सब गुवाल बाल प्रिये देत ताल ॥
सखी नंद को लाल रह्यो रंग०
मैं गई री भोर मधुबन की ओर।
मच रह्यो री शोर जहां चपल चोर।
मोहन किशोर रंग घोर घोर।
दई मोयको बोर जसुदा को बाल ॥
सखी नंद को लाल रह्यो रंग०
बाजत मृदङ्ग ढफ ढोल चङ्ग।
बनसी की तान कररही री दङ्ग।
सब पिवत भंग अरु करत जंग।
मैंने नये री ढङ्ग को देख्यो ख्याल ॥
सखी नंद को लाल रह्यो रंग०
बृजचंद आज सखियन के काज।
कहा सज्यो री साज तज कुल की लाज।
"गिरि धरन,, राज सुर सीस ताज।
रँग भरत आज नई चाल ढाल ॥
सखी नंद को लाल रह्यो रंग डाल, सब ब्रज की बा०

(१०)

चुनर रंग डारी बिहारी काह करूँ दइया री ॥ चुन०
जो चूनर मोरे पिया ने रँगाई, मोतियन लगी है किनारी।
सो चूनर मोरी रँग में भिजोदई, सास जो लरेगी हमारी।
लालजी कुछ ना विचारी ॥ काह करूँ दइयारी०
चूनर रँग मेरो मन भी रंगदियो गुरुजन लाज बिसारी।
रूप छकी बस तेरे सावरे श्री ब्रजराज बिहारी।
रसिक रस रीत विचारी ॥ काह करूँ दइयारी, चु०

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

अनोखी होरी

❀ रचयिता ❀

श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सु[धाकर]"

[क्रमर] टौंक (राजस्थान)

[तरज] आज ब्रज में मचैरी ऐसी होरी।

मानो मानो जी छैल गिरधारी।
मत मारो जी लाल पिचकारी।
थाँकी साँवरी सूरत पर जाऊँ वारी वारी॥ मानो २ जी०

सुरँग चुनर मोरी मतना बिगारो।
अबिर गुलाल नैनन जन डारो।
म्हारा हियड़ा रा जियड़ा मोहन बनवारी॥ मानो०

नवल जोबन मोरी बारी उमरिया।
मृगलोचन मृगनी सी कमरिया।
मोरा छाँडो जी डगरिया नातर दूँगी गारी॥ मानो०

अगिया ससक मोरी छतियाँ कसकगई।
बैयाँ सुरक मोरी चुरियाँ करक गई।
लाल बिंदिया सरक गई सिर की हमारी॥ मानो०

जो तुम मो सँग खेलोगे होरी।
मानोगे नाहीं करोगे धाराजोरी।
तो मैं जशोदा मैया से कहूँगी गत मारी॥ मानो०

स्याम 'सुधाकर, मदन मुरारी।
ब्रज भूषण ब्रजराज बिहारी।
म्हारा जिया में समाओ जी साजन मनहारी॥ मानो०

❀ रसिया ❀

उड़त है मन मन्दिर में मन मोहन सँग रंग।
विरह की जलरही होली—
ठिठोली मचरही सुखमण संग॥ उड़त है०

तन गागर में मन को सागर।
जिस में ज्ञान को रंग घुलाकर।
प्रीतम के सँग प्रेम बढ़ाकर रँग लियो सारो अंग॥ उड़०

आह की भर पिचकारी।
नैंन अपने से मारी।
राग सूँ फाग वो गावें गारी बाजे चित को चंग॥ उड़त०

प्रेम लगन भरपूर लगी है।
ब्रह्म रंध्र में ज्योति जगी है।
माया ममता दूर भगी है देख अनोखो ढंग॥ उड़त०

यही होली है अपनी।
याद पीतम की जपनी।
पहिर 'सुधाकर, तन पर कफनी कर विषयन से जंग॥
उड़त है०

[तरज] तोरी बनही में बन आई कान्हा।
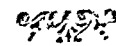
एरी सखी डारत रंग गिरधारी।
मैं तो लागत अंग आली, भई री त्रिभंग—
ऐसा ढंग सूं मारी पिचकारी॥ एरी सखी डा०

मदन मतंग मन छाई री उमंग घन।
सखी जन संग मोहे, अथंग भरत उछंग—
ता मूँ जंग रच्यो रा बनवारी॥ एरी सखी डा०

छवि उत्तमंग की सुमन पतंग सी।
लजित अनंग भयो लख दंग ललित प्रसंग मोहे—
गगन विहंग विहारी॥ एरी सखी डा०

सखा अड़बंग नाचे ख्याल हुड़दंग राचे।
बाजत मृदंग मुरली मुचंग मोर हग खंग, गावे—
व्यंग अड़ंग सी गारी॥ एरी सखी डा०

स्याम 'सुधाकर, भानु सुता पर।
करत उकंग शुचि अभिषंग मुदित अथंग, ता मुख—
लटके भुवंग लटारी॥ एरी सखी डा०
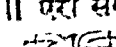
[तरज] सखी री होरी आज जलो चाहे काल जलो।

बेदर्दी ने मारदई भर पिचकारी।
एरी मोरी स्याम चूनर भीजी सारी॥ बेदर्दी०

प्रीत को रंग चूवत नैनन में।
मोह लई मोहे मधु बैनन में।
नंद नदन बनवारी॥ बेदर्दी०

छैल बनो ग्वालन सँग डोले।
ब्रज वनितन सँग ऐंडो सो बोले।
नट खट निपट अनारी॥ बेदर्दी०

आग लगो बलजाओ यह होली।
राधे चंद्र लजावन चोली।
श्री व्रषभानु दुलारी॥ बेदर्द

रसिक 'सुधाकर, बीन बजावे।
गोपी ग्वाल परं सुख पावे।
च्यो री व्रज भरी॥ बेदर्दी०

[तरज] मनो नीत।

मग रोके नटवर कान्हारी मैं नाजाउँ पनियाँ भरन।
सखी जमुना कूल मुरारी।
भर भर मारत पिचकारी।
बनवारी! गिरधारी!
दे गारी निलज मस्ताना री॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
मोरी बारी उमर रँग राती।
जिया कंपत धरकत छाती।
वह धाती! उत्पाती!
मदमाति निठुर निडराना री॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
सखी काहुकी कंचुकी खोले।
अरु काहुके अचरा टटोले।
मधु बोले! रस घोले!
तहाँ डोले निपट दिवाना री॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
अनि ढीट 'सुधाकर, आली।
घर घाली धुरत कुचाली।
वनमाली! चिरताली!
मतवाली फाग रचाना री॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०

[तरज] गाँवरिया मे लागीरो लगन नाही छूटे।

सखी री मोय को बारा सा जोवनवा सताये।
ना माने सजनी! चोली में जुलम मचाये॥ सखी०
मस्त अलस्त फिरूं मदमाती, पिया न अँग लिपटाये।
सूनो भवन देख सेजरियाँ, छाती धड़का खाये॥ स०
मैं हूँ चंचल चन्दा बदनी, देख चन्द्र शर्माये।
काली २ जुल्फें मुख पर, नागन सी लहराये॥ सखी०
कोमल कमल चपल चितवन में, चंचलता रही छाये।
भौं कमान ने नैन बान से लाखों जन तड़पाये॥ स०
गोल २ जोबन के निबुवा, तोड़न के दिन आये।
आली मेरो बाग जवानी, माली बिन मुरझाये॥ स०
आओ पीतम आओ प्यारे, दासी तुम्हें बुलाये।
राखूं हिवड़ा बीच 'सुधाकर, लूंगी कंठ लगाये॥ स०

[तरज] धरम तुम्हारो ए नार पती की सेवा करना।

हाय मैं मरगई राम, ईं सासू रे घाले।
हाय मैं पड़गई राम बेदर्दी के पाले॥
बड़े सवेरे उठ कर चाकी पीसूं रगड़ रगड़ के।
चार हेल पाणी की ल्याऊँ, दिनभर माथो भड़के॥
हाय मैं मरगई राम०
आली लकड़ी गीला छाणां धर चूल्हा में फूंकूं।
तीन जेट रोट्याँ की करके, ऊँ गजबो ने सूंपूं॥
हाय मैं मरगई राम०
आप रांडकी घी गुड़ खावे मने चबावे मक्का।
गया घराँ के पाने पड़गई मिल्या करम का धक्का॥
हाय मैं मरगई राम०
छाने छाने करे कमाई बुला गांव का खोजा।
बजा २ कर आप परख ले मने कहे जा सोजा॥
हाय मैं मरगई राम०
ईं दुख से तो आप घात कर प्रेत जूण ने पास्यूँ।
अब तो तू चाहे सोकर फिर मैं उड़ २ कर खास्यूँ॥
हाय मैं मरगई राम०
घड़ी एक नीड़े नहीं बैठ्यो कभी न हँस बतलायो।
पकड़ केस नित जूता झाड़े, सासूड़ी रो जायो॥
हाय मैं मरगई राम०

[तरज] मजा देते है क्या यार तेरे बाल घूंगर वाले।

मैं तो हारगई रे राम घर को धंदो करती करती।
बड़े सवेरे उठ कर चाकी पीसती पाणी भरती।
चार जेट रोट्याँ की कर, सुसराजी आगे धरती॥
मैं तो हारगई रे राम०
बरतन माँज बुवारा काढूँ चोका से नहीं टरती।
नाज बीणु चरखा ने कातूँ फिर भी सासू लड़ती॥
मैं तो हारगई रे राम०
दौरानी ईकस की मारी नित बेकाम झगड़ती।
नड़दल दावादार रंगीला भायेलाँ पर मरती॥
मैं तो हारगई रे राम०
छोरा छोरी रोवे ज्याँकी न्यारी पीर अखरती।
ईं दुख से मैं पीतमजी के, भेले सोताँ डरती॥
मैं तो हारगई रे राम०
दूत भिड़ाई करवा ने पाड़ोसण बोल उचरती।
साँच 'सुधाकर, मान जिठानी जोबन म्हारो हरती॥
मैं तो हारगई रे राम०

चलो जाये गुजरिया मटकनी हां।
जो साजन नीके ढंग में—
पिचकारी गोरे अंग में ॥ हां, होरी खेलो०
सब मिल कर गोरी। दिनन की थोरी थोरी।
वन सुन्दर भोरी। लगी सब खेलन होरी।
भिजोई सारी रंग में ॥ हां, होरी०
बारासा जोवनवा की खिली कलियां।
राई, फूलन सी रसीली छतियां।
नींबू नारंगी चोली तंग में ॥ हां, होरी०
न सताओ, रिझाओ लुभाओ जिया।
आओ २ लगाओ हिया से पिया।
मदमाती मदन की दसंत में ॥ हां, होरी०
प्यारे नैना से नैना मिलाओ जरा।
होवे मन का कमल जो "सुधाकर,, हरा।
मैं तो हारी जोवनवा के जंग में ॥ हां, होरी०

[तरज] होली खेलें सीता राम।
होली बजरँग बाला की। टेर
पवन तनय अतुलित बल विक्रम कठिन कराला की। हो
श्री रघुपति के प्रेम रंग को वसंत मन भायो।
असुर दलन को रुधिर रंग लंका में बरसायो ॥
जय जय अञ्जनी लाला की ॥ होली०
राम रजा सुन खेलन होली दक्षिण दिशि धाये।
रावण पुरी जला होली सम सीता सुधि लाये।
जय जय सङ्कट टाला की ॥ होली०
कंचन बरणी देह "सुधाकर,, विकट वीर पाई।
रोम २ में राम २ की मूरती दिखलाई।
जय २ भक्त विशाला की। होली०
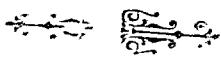
[त.] पिया नहीं आये सखी ऋतु फागन मास की आई।
सखी री काह कहूं तो से मोहन की निठुराई। टेर
मैं जमना जल भरन गई तहां ठाड़ो कँवर कन्हाई।
दोरके गागर फोरदई मोरी, बैयां पकड मुरकाई ॥ स.
कहन लगे तुम कौन की गोरी हो भोरी सी देहु बताई।
नवल जोवनवा पे कान्ह बेदरदी ने आनके बाँह चलाई ॥ स.
अँगिया मसक मोरी चुरियां करक गई बेसर लट दरकाई।
याके कपोल भये कजरा युत हमरेहु पीक लगाई ॥ स०
कर बरजोरी कंचुकी तोरी चूनर कीन्ह पहराई।
श्याम "सुधाकर,, हरि नट नागर भुज भर कंठ लगाई।

[त.] पढो मन भागवत गीता, भजन बिन रह गया रे रीता।
श्याम संग कर २ बरजोरी।
सखी सब खेल रही होरी ॥ टेर
हाथ ले कंचन पिचकारी। कृष्ण जी राधा पर मारी।
भीज गई अँगिया खुल सारी। हँसे मनमोहन बनवारी।
केसर रंग घुलायके करत सखिन सूं जंग।
ग्वाल बाल मिल ताल बजावें गावें फगवा व्यंग ॥
सुनावें गारी लज भारी ॥ श्याम सँग०
खडी तब श्री राधा प्यारी। संग ब्रज गोपन की नारी।
उठाकर केसर रँग भारी। झपट झट मोहन पर मारी।
अबिर गुलाल का थाल ले सुन्दर परम रसाल।
नंद लाल जी रा मुखडा ऊपर, सखीजन देत उछाल।
डार रही कुम २ भर झोरी ॥ श्याम०
बाज रही मुरली चंग मृदंग। ढोल डफ सारंगीके संग।
घोटकर छान रहे कोई भंग। सुहावत अजब अनोखे ढंग।
वृन्दावन रे मांय ने, कुञ्ज गलिन रे बीच।
भांति २ का रंग बरस रह्या, मच रह्या केसर कीच।
रपट कर गिर गई एक गोरी ॥ श्याम०
देव सब देखण हित धाया। गगन सज २ विमान छाया
अमित दरशण कर सुख पाया। फूल नटवर पर बरसाया।
ऋषिमुनि जन भी मोह सूं भूल गया निज ज्ञान।
छूट गयो कैलाश ऊपरे, शंकर जी को ध्यान।
"सुधाकर,, लख लीला तोरी ॥ श्याम सँग०
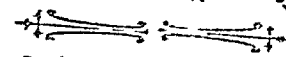
[तरज] सखी होगी आज जलो, चाहे काल।
सखी होरी खेलन के दिन आये।
मेरो पिया बिन जिया घबराये। सखी०
नव पल्लव कुसुमावली फूली जीरण पात झराये।
नूतन लता छई वृक्षन पर, नूतन कमल खिलाये ॥ स.
जोवन सघन बनी फुलवारी, त्रिभुवन पर रँग छाये।
अँबुवन डार पे कोयल बोले, चातक पिव २ गाये ॥ स.
बारो जोवन मोरी तरुण उमरिया मदन किलोर मचाये
कसुमल अंग पे सरस "सुधाकर,,—
रंग सुधा बरसाये ॥ सखी होरी०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

रसीली होली

※ रचयिता ※

श्री गिरधरलाल चौहान कवि "सुधाकर" [कमर] टोंक (राजस्थान)

❀ कवित्त ❀

ध्यान पान शान देखो नैनन के बान देखो भौंहें कमान देखो हरत प्रान आतुरी।
यौवन उफान देखो कुचन को उठान देखो अधरन पर पान देखो मुस्क्यान अति माधुरी॥
अलकन महकान देखो आलिंगन गुञ्जान देखो सुन्दर नौजवान देखो शोभाखान चातुरी।
सुधाकर,, समान देखो मायाकी खान देखो भोग को विधान देखो मस्तान सी पातुरी॥

[तरज] म्हारा म्हारी बीछुड़ो थो साहू गायो छैन।
मैं, किस सँग होरी खेलूँगी मेरो श्याम बसे परदेस।
मेरा मन रो दरपण तोड़ियो कुबजाने देकर ठेस॥ मैं०

म्हांने छाँड़ी कँवर कन्हाई।
बेदरदी ने दया न आई।
निरदई करी निठुराई।

छाई रे छाई रे जर्दी तनपर, मनमें बसो कलेस॥ मैं०

सब सखियाँ खेलें होरी।
निज निज पीतम सँग गोरी।
कर कर हितमूं बरजोरी।

मोरीरे २ धड़कत छतियाँ, चिन्ता करूँ विसेस॥ मैं०

कर कर मोहन री हाँसी।
बिलमा लियो कुटिला दासी।
या सोतन सत्या नासी।

ब्रजवासी २ तज दीनो ब्रज बसगया अब मथुरेस॥ मैं.

थे छाँड गया बन माली।
तो मैं भी 'सुधाकर, चाली।
पी प्रेम सुधा की प्याली।

आलीरी २ हास्यूँ बन बन कर जोगन को भेस॥ मैं

[तरज] ओजी जैसे कोयल करे पुकार, मीठी सी मैना बोले।
ओए सखी राधे नंद कुमार, कुंजन में खेलें होली।
ओजीइन ब्रज की सुन्दर नार उत ब्रज गोपन की टोली॥

भर केसर रँग पिचकारी।
राधेजी का अँग पर मारी।

ओजी तब श्री वृषभानु दुलार मुसका कर उनसे बोली॥

ओ, नटवर निडर मुरारी।
सब भीजगई सुख सारी।

ओजी म्हारी चूनर गोटा दार मसकागई तन की चोली॥

सखी हँस हँस फागा गावें।
मद माती शोर मचावें।

ओजी जैसे कोयल करे पुकार मैना ने बाणी बोली॥

इत सरस चाँदनी छाई।
उत श्याम घटा शरमाई।

ओजी दोऊ त्रिभुवन रा उजियार सूरतियाँ भोली भोली॥

कभी ग्वाल गुलाल उड़ावें।
कभी सखियाँ रँग बरसावें।

ओजी भँवरन के चलें कटार नैनन सूँ मारें गोली॥

छवि किस विध बरणी जावे।
जहाँ सुन्दरता सकुचावे।

ओजी त...ँ चमके चंदा चार, महिमा नहीं जाय सतोली॥

जब श्याम 'सुधाकर, हरसे।
तब सखियन में सुख बरसे।

ओजी धन प्रेम मिलन धन प्यार बोलन में मिसरी घोली॥

[तरज] जोबन यो दिन चार बुढ़ापो जल्दी आवेगो।
आयो फागन मास श्याम की सुध कछु नहीं आई।
कुबजा ठगनी नार लियो मोहन ने बिलमाई॥

सखी घनश्याम हमारे आता।
नित होरी में रोल मचाता।

बंसरी नई २ तान सुनाता—
सजन रसिया ब्रज सुख दाई॥ कुबजा०

भर २ केसर रँग की गगरी ।
ग्वालन बरसाने की सगरी ।
नवल लाल ने पकरि—
रँग देती ढर जाई ॥ कुवजा०
तब सखी लाज भरी दे गारी ।
मोहन कँवर कान्ह बनवारी ।
चूनर रँग में जारी—
प्यारी अँग लिपटाई ॥ कुवजा०
हिवड़े नेह 'सुधाकर, साले ।
पड़गई निठुर स्याम के पाले ।
तन में हूक प्रेम की चाले—
उदासी मन में घन छाई ॥ कुवजा०

[तरज] पतली कम्मर ऊपर सोहे ए सुन्दर नार बागरियो ।

देखो मारग में बरजोरी नंद कुमार की जी ।
गुजरी कहे करो मत छेड़ पराई नार की जी ॥
मोहन क्यों इतना इतराओ ।
सखियाँ देख देख मटकाओ ।
बोलत घूँगट खोल दिखाओ अदा सिंगार की जी ॥
लाला अटपट बचन न बोलो ।
पट मट मन घूँगट रा खोलो ।
मानो सुरत करो मत नाहक में तकरार की जी ॥
हँस कर चंचल छैल कन्हाई ।
ग्वालन पकर अंग लिपटाई ।
ललिता लख लीला ललचाई ललित विहार की जी ॥
भर भर केसर रँग पिचकारी ।
तक २ नवल कुचन पर मारी ।
'गिरधर, कान्ह भिजोदई सारी चुनर सुकुमार की जी ॥

[तरज] मैना ममक २ बाणी बोल गोरीरा पिया गगनरमे ।

प्यारी राधा रा राजन रिझाय होरी खेलेरी कुञ्जन में ।
गारी गावत साजन सुनाय गोरी मिल मधुवन में ॥
पिया प्यारी रे गोरे २ अंग रंग डारे री नैनन में ।
सोहे ग्वाल बाल सब संग समझावे री सैनन में ॥
ललिता झोरी में अबिर गुलाल लियाँ ठाड़ी सखियनमें ।
बजे ताल मजीरा मुरली चंग राजे आलीजा सबनमें ॥
देखो युवतिन रा हिवड़ारी उमंग झोला खावेरी जोवनमें ।
माने नाहीं कन्हाई करे गेर कछू हेरे कुंचियन में ॥
लाग्यो - सखी री नयो नेह मन मेरो री मोहन में ।
लाला आओजी म्हारे नैणाँ माँय थाने राखूँ पलकनमें ॥
थाँकी बंसी री मीठी २ तान साँवल साले म्हारा मनमें ।
बाँकी झाँकी 'सुधाकर, थाँकी देख मैंतो छाई दलमलमें ॥
प्यारी राधा रा राजन रिझाय होरी०

[तरज] मुकटधर महर का साँवरा ।

भरन रंग लागी राधा प्यारी जी ।
ले सखियन ने संग जी ॥ भरन रंग लागी०
श्याम मोहन कर सोहे पिचकारी जी ।
मारत गोरे गोरे अंग जी ॥ भरन रंग लागी०
इत ललितादि सब सोहे ब्रज नारी जी ।
उत मन मोहन उमँग जी ॥ भरन रंग लागी राधा०
अबिर गुलाल झोरिन भर सारी जी ।
डारत मुख ब्रजचंद जी ॥ भरन रंग लागी०
गावत बिहारी संग सदा सुख कारी जी ।
बाजे मजीरा मुरली चंग जी ॥ भरन रंग लागी राधा०
तीखा तीखा नैणा में कजरा री शोभा भारी जी ।
बिंदली लिलवट पर कररही दंगजी ॥ भरन रंग लागी०
अचरा न छूओ कान्हा दूँगी नातर गारी जी ।
मतना मचाओ म्हाँसूँ जंग जी ॥ भरन रंग लागी०
मानो जी मानो म्हारी मानो 'गिरधारी जी, ।
खोलो ना अँगियाँ रा बंद जी ॥ भरन रंग लागी०

[तरज] म्हारा नया नगर की मैठाणी० [रसिया]

होरी खेलण ने नँदलाल बना म्हारे महल पधारो जी ।
केसर रँग तूँ भर भर गगरी ।
ठाड़ी ग्वालन सिर धर सगरी ।
नवल नागरी उमँग भरी ॥ म्हारे महल० ॥१॥
अबिर गुलाल से भर भर झोरी ।
बाट निहार रही सब गोरी ।
मैं अरज करूँ कर बर जोरी ॥ म्हारे महल० ॥२॥
तिरछी चितवन से मत झांको ।
नवल नार को जोवन बांको ।
थे, मारग में मत चाखोजी ॥ म्हारे महल० ॥३॥
मोर मुकुट पिताम्बर धारी ।
श्याम 'सुधाकर, कृष्ण मुरारी ।
थाँकी बंसरी कानगणारी जी ॥ म्हारे महल० ॥४॥

[तरज] लेल्यो २ जी खरबजो मजादर—

जहरीली घुटवाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगड़ली ॥
जोरांसूं क्यों पाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगड़ली ॥
जमना किनारे भरवा, पाणीड़ो आई रे ।
सैनमां रे' भोले कान्हां, थांसूं बतलाई रे ।
थांरा नैणा में गरणाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगड़ली ॥
सासू लडेली म्हारी, करस्यूं अब काई रे ।
नणदल रा वीरा कहसी, कुणसूं उलभयाई रे ।
म्हाने मनवारो' र व णाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगड़ली ॥
सुण' २ मुरली री धुन में ' मोहन बिलमाई रे ।
मीठा मधुरा बोलणमें, लाजन लजचाई रे ।
म्हारी नस २ में सरणाई रे म्हारा श्याम ! भांगड़ली ॥
ओ—जी "सुधाकर,, प्यारा नटवर नँदराई रे ।
कीन्ही थे ओगणगारा म्हांनूं निठुराई रे ।
म्हारा जोबनियां पर छाइरे म्हारा श्याम, भांगड़ली ॥
आछी जहरीली०

[तरज] जोवन,यो दिन चार बुढापो जल्दी आवेगो ।

म्हाने दे दे कर विश्वास श्याम सोतन घर जाओ छो ।
कंठां हाथ लगाकर झूंटी सोगन खाओ—छो ॥
कहो सांची नंद लाला । लगी पूछन ब्रज वाला ॥
मुकट धर रूप रसाला । अधर मुरली उर माला ॥
त्रिभुवन पाला रखवाला, जग नाथ कहाओ छो ॥ कं.
हैं अरुण नैना कपोलन पर जो लाली पान की ।
रेख काजल और मिस्सी भी लगी अनुमानकी ॥
पाग लटपट चाल डगमग सी है रैन जगानकी ।
देत चितवन सूचना वैरण के सँग रति दानकी ॥
कर म्हांसे अनरीत किसीसे प्रीत लगाओ छो ॥ कंठा०
वस कर लियो पिया थाने एक दासी ।
बिलम गया थे मन हर सुख रासी ॥
कहत बनत नहीं कछु ब्रज वासी ।
इत घनो दुख मोहिं उत घनी हांसी ॥
कर कुब्जा सँग भोग जोग म्हाने समझाओ छो ॥ कंठा०
अब म्हे जाण गई जी प्यारा । थे छो पूरा कामणगारा ।
ब्रज वासिन से होकर न्यारा, नाम राधा रो लजाओ छो ॥
निठुर नटवर बनवारी, "सुधाकर,, कृष्ण मुरारी ।
मनहारी गिरधारी कपट की बान बनाओ छो ॥ कंठांहा.

[तरज] तीखा २ नेना सूं म्हाने मारो मत ना ।

काई जादू करदीनो मोहन ओल्यूं थांकी आवे ।
कामण गारी मतवारी थांकी चितवन जीव लुभावे ॥
थांका सांवलड़ा सा मुखड़ा ऊपर मुरली की शोभा ।
थांका तीखा २ नैणा सुन्दर लागे छे चोखा ॥
याही बांकी झांकी तो वैरण म्हांको जीव जलावे । का०
म्हें तो पाणीड़ो भरवाने जमना सरवर जाता ।
मारग माहीं सांवरिया म्हांके सामां थे आता ।
बांका तिरछा नैणा सूं क्यों नटवरिया सैन चलावे ॥ का.
माखन मिसरी खावाने थे कुञ्जन में आवे छा ।
धर गल बैंयां जमना पर म्हांसूं रास रचावे छा ।
भोली २ सुरतियां पर म्हांको मन लल चावे ॥काई०
आओ २ जी साजन सताओ मतना ।
छवि बांकी अनोखी ने छुपाओ मतना ।
थांकी प्यारी अनुराधा पीतम थां बिन प्राण गुमावे ॥ काई.
मानो २ "सुधाकर,, प्यारा दासी री विनती ।
ऊबी जोऊं बाटडल्यां रेखां हाथांरी गिनती ।
म्हारी बारी उमरिया जोवन बीत्यो जावे ॥ काई०

[तरज] म्हारा छैल भँवर रो कांगसियो पातरियां लेगइरे ।

थांकी वंसरी सुण कर आइजी मुरारी मैं माधो बनमें ।
थांकी मेघ वरण छवि छाइ जी विहारी म्हारा नैननमें ॥
थांकी वंसरी सुणकर० टेर
मैं ग्वालन जोवन मद मानी ।
गोकुल सूं वृन्दावन जाती ।
थाने माखन श्याम खवाती जी नित आती कुञ्जन में ॥
लागी लगन म्हारी कान्ह कँवर सूं ।
काम नहीं कछु अपणा घरसूं ।
मैं तो प्रीत करूंली गिरधर सूं याही बसगई तन मन में ॥
मन मोहन म्हारा पीतम प्यारा ।
जीवन धन छो नैनन तारा ।
पण दीख्या थे कामणगारा जी बिलमालई सैनेन में ॥
चैन नहीं पिया थांबिन आवे ।
घड़ी घड़ी बरसां ज्यों जावे ।
म्हारी अखियां नीर बहावे जी ब्रज वासी छिन २ में ॥
नट नागर गोवर धन धारी ।
श्याम "सुधाकर,, थांपर वारी ।
थांको जब सूं सुरत निहारी जी मैं पड़गई उलभनमें ॥

मस्तानी ग्वालन

※ रचयिता ※
श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सुध
टौंक (राजस्थान)

[तरज] लगी आस तुम्हारे दर्शन की-

थाँको नेह लग्यो म्हारा नैननमें, मनमोहन सुन्दर साँवरिया
थाँने ढूँढ फिरी सारा कुञ्जनमें माधो वनमें नट नागरिया ॥
थाँको नेह लग्यो०

थाँकी याद सतावे श्याम सदा ।
थाँकी चितवन रतन घणी सुखदा ।
म्हारो ध्यान लग्यो नित थाँकी अदा ।
किहूँ मस्त मगन बन, बावरिया ॥ थाँको नेह०

दधि बेचणरे मिस आऊँ पिया ।
थाँका दर्शण कर सुख पाऊँ पिया ।
म्हारा मनमें न कुछ लगाऊँ पिया ।
श्री, नंदनदन सुख सागरिया ॥ थाँको नेह०

आनँद घन मोहन बनवारी ।
जन जीवन गोवर धन धारी ।
कहूँ तन मन थाँपर बलिहारी ।
ब्रज भूषण रूप उजागरिया ॥ थाँको, नेह०

अब लागी सजन थाँसूं प्रेम लगन ।
म्हारा जिवड़ा में जल रही गहरी अगन ।
माना साँच 'सुधाकर, म्हारी कहन ।
सुख सदन मदन गुण आगरिया ॥ थाँको नेह०

[तरज] मजा देतेहैं क्या यार तेरे बाल घूँगरवाले :

राधेजी का कर सिणगार बेणी गूँथन बैठ्या माधो ।
दीनो बोकॉरा, भरतार . ज्यॉं को देख्यो प्रेम अगाधो ॥

तरह तरह का फूल मँगाया ।
बाल बाल में गूँथ सजाया ।
कॉंगसियो ले लट सुलझाया पकड़ प्रीत सूं काधो ॥ रा०

फूलन हार फूलन का गहना ।
फूलन माँग भरी सुख दैना ।
काजल रेख लगाकर नैना, श्याम करे अनुराधो ॥ रा०

चमके चँदा रूप लिलाटी ।
जिसपर सुन्दर पाड़ी पाटी ।
राधे कहे सिसक कर, गाँठो, मोहन चोरे बाँधो । राधे०

दरपण हाथ देन्द, गिरधारी ।
बोल्या सुण वृषभानु कुमारी ।
पूरण चंद्र मुखी तू प्यारी और 'सुधाकर, आधो ॥

[तरज] रंगरी सेजाँ में भूल्याई सा म्हारा-

थाँका दरसण करवा आईजी, म्हारा, साँवरिया गोपाल ।
थाँकेई माखन मिसरी ल्याईजी प्यारा भर कंचनरो थाल ॥

चंद्र मुकुट पर किलँगी सोहे कुण्डल रतन विशाल ।
हाथाँ कड़ला पग पैंजनियाँ उर वैजन्ती माल ।
मोहन मुरली अजब सजाईजी धर अधरन पर परं रसाल ॥

श्याम बदन पर सुरँग पीताम्बर नील कमल सा गाल ।
ज्यॉंपर रतनारा आभूषण, घूँगर वारा बाल ।
चंचल नैणा में अरुणाईजी, मृग मद सोहे सुन्दर भाल ॥

कुञ्ज गलिन के माँय मुरारी हिल मिल गोपी ग्वाल ।
ब्रज वासी थाने नाच नचावे, हँस र दे दे ताल ।
मैं तो देख र सुख पाईजी श्री गोविंदा थाँको ख्याल ॥

मारग जानाँ, धेनु चरानाँ, निरखूँ थाँकी चाल ।
बंसी बजानाँ, गीत सुणानाँ, होजाऊँ बेहाल ।
मोहन लीला पर ललचाईजी 'सुधाकर, फँसी प्रेम के जाल ॥
थाँका दरसण करवा०

[तरज] मैं मरीरे र राम दरद बिछू—

थे आओ म्हारा श्याम मोहन बनवारी ।
आलीजा म्हारे गाम, गोवर धन धारी ॥

थाँकी हरदम याद सतावे ।
म्हारो जीव घणो दुख पावे ।
नित नैना नीर बहावे ।
ललचावे लीलाधाम लगन थाँकी प्यारी ॥ थे०

थे प्रीत लगाकर प्यारा ।
क्यों ? होगया हमसे न्यारा ।
नट नागर नन्द दुलारा ।
ओ कामणगारा श्याम साजन सुख कारी ॥ थे०

पहल्याँ तो थे आवेला ।
कुञ्जन में मिल जावेला ।
म्हारो माखन भी खावेला ।
आवेला लेले नाम सोहनतन, गारी ॥ थे आ०

अब अरजी सुणो ,सुधाकर, ।
दासी पर करुणा लाकर ।
मैं तन मन वारूँ थाँपर ।
हूँ चरणा चाकर श्याम मदन मनहारी ॥ थे०

[तरज] मोरी बांकी नजर या साँवरिया सूँ लागी ।
मानो मानो साँवरिया सोहन बनवारी । मानो०
कैसे मानू गुजरिया योवन मतवारी ॥ कैसे०

रँग डारो ना मोपे प्यारा साँवरा सजन ।
जाडो लागे जी कांपे मेरो नाजुक बदन ।
भोली भोली सुरतिया उमर मोरी बारी ॥ मानो०

लचकावे लजावे मुसकावे सजनी ।
चित मेरो चुरावे यह पायल बजनी ।
बल खावे कमरिया नागन जैसे कारी ॥ कैसे मानू०

मेरा बारासा जोवन पे ना मारो अखियाँ ।
छोड़ो २ जी चुनर नाहीं छूओ कुचियाँ ।
हटो छाँडो डगरिया नातर दूँगी गारी ॥ मानो०

जादूगारी जवानी तोरी नाहीं बसकी ।
कारी अँगियाँ में झूमे दो नारंगी रसकी ।
गोरी गोरी बैयाँ री छवि लागे प्यारी प्यारी ॥ कैसे०

मैं तो आई भरन जल जमना के तट ।
मत छेड़ो ना खोलो मेरा मुखड़ो घूँघट ।
काहे माँडी झगरिया, ओ निपट अनारी ॥ मानो०

मेरो लागे योवन कर डस मग रो ।
दूरी धरदे ग्वालन या माथा री गगरी ।
तोरी बाँकी नजरियाँ री लागी री कटारी ॥ कैसे मानू०

म्हारी विन्ती 'सुधाकर, जो नाहीं मानोला ।
गैले जाताँ विहारी हठ झूँटी ठाणोला ।
तो मैं मैया जसोदा से कहूँगी गति सारी ॥ मानो०

[तरज] मारा माधोसिंह के नजर लगी—
आओ २ प्यारी लाड कुँवरि रा चाव—
पण हाँजी उमराव म्हारी राधा बाइ रा नवल पिया ॥

आई आई थांके सब मिल द्वार—
पण हाँजी सिरदार खेलण होरी रँग रसिया ॥

चालो २ प्यारा कुञ्जन रे माँय सघन वन माँय—
गागर रँग भर रखिया ॥

डारूँ डारूँ थाँपर अबीर गुलाल—
पण हाँजी नंदलाल सोहन तन मधु हँसिया ॥

थाँकी बंसरियाँ री मीठी मीठी तान—
पण हाँजी प्यारा कान्ह सोहन म्हारे मन बसिया ॥

लेस्यूँ लेस्यूँ थाँका मुरली पट छीन रहोला आधीन—
मग्गिन बिच आय फँसिया ॥

मानू २ नाहीं थाँकी कान्हा एक तजूँली नहीं टेक—
कहोजी अब कैसे बचिया ॥

थाँकी साँवरी सूरत वारो भेस—
पण कारा कारा केस चुरावे चित 'गिरधरिया, ॥

[तरज] मेवाड़ा राणा गिरधर सँग लागी म्हाँकी प्रीत ।
नखराली राधा थारा नैणा में ऐसो कांई ए ।
सुण प्यारी थारा कहणा में मोहन कुँवर कन्हांई ए ॥

निकली घर से गुजरी सिर धर गगरी रंग भर सगरीए
प्यारी, लालन पर अबीर गुलाल उड़ाई ए ॥ न०

चंचल चंदा बरणी जादूगरणी तन मन हरणी ए—
प्यारी, ब्रज धन पर चितवन अजब चलाई ए ॥ न०

श्री व्रषभानु दुलारी ललिता नारी संग सिधारी ए—
प्यारी, गारी मोहन ने सुघर सुनाई ए ॥ नख०

बोले अटपट बोली खोले चोली करत ठिठोली ए—
प्यारी, भर २ तन ग्वालन अँग लिपटाई ए ॥ नख०

मानो 'सुधाकर, मानो हठ मत ठानो बोले कान्हो ए—
प्यारी, होरी खेलण में क्यों शरमाई ए ॥ नख०

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

फागण बहार

* रचयिता *
श्री गिरधर दास बोहरा कवि ,,सुधा
टोंक (राजस्थान)

दोहा:— द्वार खडी नव नागरी ले कलसन में रंग । होरी खेलो सांवरा व्रज युवतिन के संग ।

[त.] पतली कम्मर ऊपर सोहे ए सुन्दर नार घागरि ये॥
सुन्दर ओढो ए पतिव्रत धरम सती अनसुइयां सो सारो ।
रम गया जिस सारो में श्याम मनोहर मोहन बनवारो ॥

सुन्दर ओढ सती को सारी ।
पतिव्रत धर्म की लज्जा धारी ॥
शोभा करसी सब नर नारी ।

राखो परपुरुषां की शरन करो मत अशुभ करम प्यारी ॥

कुमती मन से दूर निकारो ।
सुमती से सब अंग सँवारो ।
शीतलता को सुरमो, सारो ।

समझो आपणा हित को मरम सुधारो अवगुण मत भारी ॥

झीणो ओढ न अंग दिखाओ ।
वायल मलमल ने बिसराओ ।
खादी पहिरो मत शर्माओ ।

बोलो मीठी मधुरी नरम सभी से कोमल मन हारी ॥

फाटा मत ना गाओ गीत ।
या नही थांका कुल की रीत ।
देख्यां देख न करो अनीत ।

ईमें लाग मरेछे, मरम "सुधाकर,, गावे यों गारी ॥

[तर्ज] मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले ।
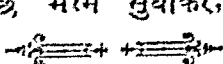
हटीली दे जोबन रो दान कान्ह यों ग्वालन सों फरमावे ।
रँगीली रँगवानी नादान छबीली क्यों मन में शरमावे ॥

थारो जोबन वारी उमरिया ।
मृग लोचन मतवारी गुजरिया ।

गोरे मुख पर श्याम चुनरिया मारे नैना बान—
अदा सों भोंह कमान चलावे ॥ हटीली०

तू नित गोरस वेचन जाती ।
लचक मचक हँसती मुसकाती ।

चञ्चल चपल उघाडी छाती मद माती मस्तान—
कमरिया नागन सी बल खावे ॥ हटीली ०

चाले चाल अजब अलबेली ।
नाजुक नखरादार नवेली ।

करे गजब छिदगारी छैली जुलमण जबर ज...
झटक पडी अचरा उछलावे ॥ हटीली०

नकबेसर में चमके मोती ।
जैसे ध्रुव तारा की ज्योती ।

पीर अधिक हिवडा में होती हरती तन मन प्रान—
माननी मोह को जाल बिछावे ॥ हटीली०

बरसे नूर सरस मूखडा पर ।
उस बिजली का सा टुकडा पर ।

देख रूप शर्माय ,,सुधाकर,, भूले अपनो ज्ञान—
ध्यान एक पलभर में बिसरावे ॥ हटीली०

[तरज] जोबन यो दिन चार बुढ़ापो जलदी आवेगो ।

म्हारा प्यारा पीतम नवल लाल मन मोहन सुखरासी ।
थाने निरदई नन्द कुमार मोहलियो वैरण एक दासी ॥

प्यारा किसविध आँख लगाई—
व्रज गोपियन से कर चतुराई ।

राखे किस विध श्याम सुलाई—
चन्द्र मुख चञ्चल चपला सी ॥ थाने निरदई०

ओल्यूं जिस दम थाँकी आवे,—
छाती भर भर जिव घबरावे ।

अखियाँ हरदम नीर बहावे—
प्रेम रस दरसण की प्यासी ॥ थाने निरदई०

पहल्यां प्रीत लगाकर प्यारा,—
अब क्यों होगया हमसे न्यारा ।

म्हारा नैणा बिचला तारा—
कामणगारा व्रज वासी ॥ थाने निरदई०

वा एक निरलज ठगनी नारी—
कुबजा कुटिल कुरूप गँवारी ।

ठग लियो मोहन श्याम बिहारी—
बुरी सोतन सत्यानाशी ॥ थाने निरदई०

कहतां आय "सुधाकर,, लाज,–
समझो मन का मन में काज।
छोड़ गया जी व्रजराज–
की डाल गले फांसी॥ थाने निरदई०
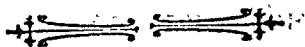
[तर्ज] सगीजी जान मानजो कह्यो नैणा मारी।
गिरधारीलाल आवजो हठीला राज म्हांके॥ टेर
आवो मोहन वनवारी। निरखत हम वाट तिहारी।
तन मन धन सखि जन वारी। कर कर सब तुमपर हारी।
आवो २ नँदलाल। ठाडी सब व्रज बाल।
होरी खेलन थांके॥ १॥
आई मिल व्रज की गोरी। कोमल अंग भोरी भोरी।
केसर रंग गागर घोरी। खेलण ने तुम सँग होरी।
चतुर चलत चाल। गज गमनी विशाल।
चंचल नैना बांके॥ २॥
खेलत सब सखियां नीकी। लिलवट पर धर शुभ टींकी।
लागत चंदा छवि फीकी। सुध बुध विसरत है जीकी।
रही उर मणि माल। मधु मुरली रसाल।
चितवन तिर्छी झांके॥ ३॥
बाजत मुरली मधु वन में। नाचत नटवर कुञ्जन में।
बरसत रंग सघन चमन में। हर्षित मन सदन सदन में।
कहत न बने हाल। ऐसो प्रिये भयो ख्याल।
सुमन "सुधाकर,, टांके॥ ४॥ गिरधारी लाल०
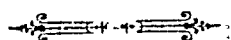
[तरज] लहरदार वीछूडो।

हां नटवर नागरिया!
या थाँ विन होरी आइरे आग लगाई ओ साँवरिया।
क्यों श्याम हमें विसराइरे नवल कन्हाई ओ साँवरिया
आप तो जाय हरि मथुरा में छाये।
लियो वा वैरण विलमाई रे सांवरिया–
लियो वा वैरण विलमाई लाज गँवाई ओ साँवरिया॥
म्हांने जोग भोग कुब्जाने।
लिख २ पतियां पहुंचाई ओ सांवरिया–
लिख २ पतियां पहुंचाई दया न आई ओ साँवरिया–
विरह गुलाल उडत जियरा में॥
नैनन से रंग वरसाई रे सांवरिया–
नैनन से रंग वरसाई नीर वहाई ओ साँवरिया॥
जो थांने विछुरन छे लाला–
फिर नाहक प्रीत लगाई रे साँवरिया–
फिर नाहक प्रीत लगाई जान जराई ओ साँवरिया॥
मोहन नाम लजा राधा को–
कुब्जा रा कृष्ण कहाई रे साँवरिया–
कुब्जा रा कृष्ण कहाई कहा मन भाई ओ सांवरिया॥
जिव घवरात "सुधाकर,, मेरो–
पर थाने दया न आई रे सांवरिया–
पर थाने दया न आई सुध विसराई ओ सांवरिया॥
हाँ मोहन नागरिया०
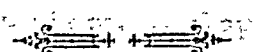
[तरज] भरन रंग लागी राधा प्यारीजी।
मुकुट धर महर का रे साँवरा॥
नन्द को कहूं कि वसुदेव को रे साँवरा।
दोय वापन को जाम रे॥ मुकुट०
एक माय थारी देवकी रे सांवरा। दूजी जसोदा माय रे॥
गोरा ई वसुदेवजी रे सांवरा। गोरा ई बलराम रे॥
श्याम वरण कैसे भयो रे सां०। जाको ठीक न ठाम रे॥
जमना तट वसी वजी रे सांवरा। मोया छे तीनो धाम रे॥
हिल मिल गारी देगयो रे सांवरा। ऐवी गेवी नाम रे॥
परमैया की वीनती रे सांवरा सुणज्यो "सुधाकर,, श्याम रे
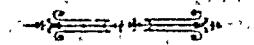
[तरज] केसरिया थांका नैणा में लाली जी।
सांवरिया प्यारा क्योंकर आऊं रे। पणहारे थारी–
चितवन ने तन मन मांय वसाऊं रे॥ सां०
थांरी वाटड़ल्यां लालजी, म्हालूं रातडल्यां सारी।
नेणा री नींदड़ली विसराऊं रे॥ सांवरि०
सासू लडे छे म्हारी—थासूं वोलण ने वरजे।
सखियन से किस विध प्रीत छिपाऊं रे॥ सांवरि०
नणदल रा वीरा मारे छडियां हर घडियां म्हांने।
कुण २ ने किण २ विध समझाऊं रे॥ सांवरि०
नेहा लग्योछे थासूं गिरधर नटवर नँद लाला।
चर्णां री शरण "सुधाकर,, पाऊं रे॥ सांवरि०

प्रकाशक— भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राज०)

मैं उतार म्हारो बीछूड़ो ओ जादूगारा छैल ।
या थाँकी बंसरिया में भूली म्हारो ज्ञान ।
पर नेवर पहर'याई मैं पग को नेवर जान ॥ सां०

बंसी की धुन प्यारी । तन मन की सुरत बिसारी ।
मोहन श्याम बिहारी । नट नागर कृष्ण मुरारी ।
हारीरे कर गिरधारी थाँसूं गरभ गुमान ॥ सां०

उलट पुलट करलीन्हो । तनको सिंणगार नवी नो ।
अंजल में हिंगलू दीनो । हिंगलू में काजल कीनो ।
छीन्योरे २ साजन म्हारो । मनड़ो थे नादान ॥ सां०

मैं कुन्जन वनकी ओड़ी । झट पट घबराकर दोड़ी ।
म्हाने श्याम मिल्या बरजोड़ी । अब आस जगत की छोड़ी ।
तोड़ीरे २ प्रीत सगासूं, लाग्यो थांसूं ध्यान ॥ सां०

अब छूं चरणां की दासी । मैं प्रेम लगन की प्यासी ।
निरखूं छवि नित चंदासी । कहुं सांच करूं, नहीं हांसी ।
ब्रज वासी २ सुघर 'सुधाकर, वारूँ थांपर प्रान ॥ सां०

[तरज] कब आओला कन्हैया म्हारे द्वार में ठाडी न्हालूं०

म्हारा नैणा में रमजाओ रे सुन्दर श्याम—
निहारूँ थाँकी बाल छवी ।
म्हारा वैना में बसजाओ रे लीला धाम ॥ निहारूं०

मोर मुकुट पीताम्बर किलँगी कुण्डल सोहे कान ।
गले माल वैजन्ती सोहे, मोहे तन मन प्रान ।
म्हारा हिवड़ा माँयँ समाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहारूं०

लख सूरज ज्यों मुखड़ो थाँको चमके सुन्दर भाल ।
चन्द्र बदन हीरॉ सो दमके लोचन रतन विशाल ।
म्हारा जिवड़ा में बस जाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहा०

हाथाँ कड़ला कमर कणकती पग में नूपुर बाजे ।
हँस २ रमक गडोल्याँ चालो कोटि काम छवी लाजे ।
म्हारी सुरता में जम जाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहा०

गोद खिलाऊँ लाड लडाऊँ चूम चरण चुचकारूँ ।
काजल की दे रेख जुगत सूँ अद्भुत रूप सँवारूँ ।
म्हारो मनड़ा में सुख पाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहा०

आँगण क.ग देख किलकारो ठुमक २ कर डोलो ।
मीठा मधुरा वचन 'सुधाकर, लट पट मुख से बोलो ।
म्हारा स्वप्ना में नित आओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहा०

[तरज] म्हाने आछी आछी लागे सा या कान्हा की बंसी ।

म्हाने प्यारी प्यारी लागे सा छोटी सी गणगोर । म्हा०

चंद्र लजावन मुखड़ो जाणे बिजली को सो टुकड़ो ।
कोमल अंग घणो नाजुकड़ो मनड़ो लेनी चितवन चोर ॥

चमके लिलवट टीकी, दाँताँ बिच रेखाँ मिस्सी की ।
मारे हिवड़ा पर बरछी सी, नैणा काजलियारी कोर ॥

लहँगा ऊपर सारी, जींपर सजरही अँगियाँ कारी ।
छटा बताय चंद्रिका प्यारी, सोहे नथड़ी ऊपर मोर ॥

साँची प्रीत लगाकर, गोपीजन सूँ नेह रचाकर ।
ब्रज वनितन सूँ कहे 'सुधाकर, —
मधु मुसका कर नवल किशोर ॥ म्हाने प्यारी०

[तरज] म्हारा छैल भँवररी काँगसियो पानरियाँ नेगई सा ।

म्हारी ईंडोणी पर घड़लो साजन धरता जाज्यो सा ॥ म्हा

छैला थाँसूं मिलवा कारण पाणीड़ारो मिस कर आई ।
थे नहीं दीख्या मनका हारण जदतो जान घणी घबराई
प्रीत लगाई थांसू पछताई ।
सारी रेन नींद नहीं आई ॥
म्हारी दूखे नरम कलाई कलस्यो भरता जाज्यो सा ॥

हरदम थाँकी ओल्यूँ आवे राजकियाँ मनने समझाऊँ ।
घड़ी २ अखियाँ भरल्यावे नीर सो घूंगट माँय छुपाऊँ ।
कद थाँने पीतम कंठ लगाऊँ ।
मनकी गत कहता सकुचाऊँ ।
म्हाँपै कॉई कामण कर दीनो सो हरता जाज्यो सा ॥

थे छो म्हारा मनका वासी, दासो छूं मैं थाँकी प्यारा ।
साँच कहूँ समझो मत हाँसी, करस्यूँ ना हिवड़ा सूं न्यारा
झकमारो दुनियाँ का सारा ।
लोग लुगाई औगण गारा ॥
म्हारा नैणा बिचला तारा नेज सँवरता जाज्यो सा ॥

प्यारा पीतम अबतो पूरी साँचा मनसूँ प्रीत निभाज्यो ।
मनकीमनमें राख अधूरी मतना जगका लोग हँसाज्यो
नाहक जिवड़ा मत तरसाज्यो ।
कँवल बीच भँवरा बण आज्यो ॥
मैं बणू चाँदणी चाँद 'सुधाकर, थे बणजाज्यो सा ॥

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

धर्म सिन्धु पृष्ठ १९७ निर्णय होलिका दहन के

आधार पर

रचयिता

श्री गिरधर दास बोहरा कवि 'सुधाकर'

❀ टोंक (राजस्थान)

डमरू बोला। मेरी जान कि डमरू बोला —— शंकर भोला...पिये भांग का गोला ॥
स्वर्ग लोक में शीश पुजे अरु मृत्युलोक में लिंग। चरण पुजे पाताललोक में शिव शिव रटत फणिंग ॥ डमरू०

[तरज] लेना नाज्यो जी सिरदार कटारो हाथ में।

अजी हो गणपति ने अत्र सिध ने संग पधारो झूमता।
अजी हो वनपति पीकर प्याला भंग रंग में झूमता ॥
सुमर सरस्वती अम्बिका प्रथम गजानंद ने ध्यावां।
महावीर रणधीर को र दिलचित से ध्यान लगावां ॥
होय कृपा गुरु देवकी र म्हे अटल छत्र ने पावां।
महा देव को लिंग होलिका की यौनी ने गावां ॥
कोई यौनी लिंग ने गावां रंग में झूमता।
कोई याला किलँगी निशान चंग पर झूमता। अजी हो०

(तरज) गुलाबी नैणां वरसे नूर।

सजन मेला में चालो जी।
म्हारी बराबरी रा दोसतिया देखण ने चालो जी ॥
पहर ओढ कर घरसे निकसूं –
जल र मरे लुगायां सा नैणा रो मेलो जी ॥ म्हा०
जोवन नदियां पूर उमग रही।
कोमल छतियां रस सूं भरगई।
भँवर चमर गई मदछकिया नैणा रो मेलो जी, म्हा०
सजधज सुन्दर सेज बिछाई।
साजन सा म्हे थांके ताई।
थे आया नाहीं ललपतिया नैणा रो मेलो जी, म्हा.
मैं मद मस्त फिरूं अलबेली।
कर सोला सिणगार अकेली।
थांके कारण अलपतिया नैणा रो मेलो जी ॥ म्हा.
प्यारा थांसूं अरज करूं छूं।
चौडे कहतां लाज मरूं छूं।
समझो मन में साँवरिया नैणा रो मेलो जी ॥म्हा०

[तरज] हिवडा पर ले ले माणी रे रोल्या थारी नार।

मद जोवन में गरणाई रे कामण गारी नार।
नागन सी बन भरणाई रे कर सोला सिणगार ॥
गोरी रूप सरूप की रे मुख पर बरसे नूर।
भरी जवानी दिलज्यानी की छक रही चकना चूर
चपला सी चञ्चलताई रे होय हिया के पार ॥ मद०
चन्दा की सी चाँदणी रे लाल कमल सो फूल।
मस्तानी की अँगियां में दो नारंगी रही झूल –
रँग भीनी रँग पर छाई रे नाचण नखरा दार ॥ मद०
आभा की सी बीजली रे होली की सी झाल।
काटो क्यों न भायला म्हारा गोरा गोरा गाल –
छैलां सूं यां बतलाई रे हिंवडे हाथ लगार ॥ मद०
तीखा तीखा नैणा जा में लाली रही समाय।
काजलिया रा डूंगरदा में लागी जाणे लाय –
लचकाती कम्मर आई रे ज्यों चम्पा की डार ॥ मद०
रँग ढोल्या पर सोगई रे सूधी पाँव पसार।
आलीजा सूं मोजां माणी अँग सूं अँग लिपटार-
जाँगांसूं जाँग मिलाई रे नीकां आसण मार ॥ मद०

[त.] मने लाडूडो दिलादे मोरी जान बालम छोटो सो।
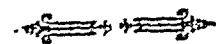
नखराली सुन्दर नार चंचल छिदगारी।
मत मारे नैन कटार हिवडा पर प्यारी ॥
चित चौरण चन्दा वरणी।
ओ जुलमण जादू गरणी ॥
नाथू राम जी की सेज सिंगार जोबन मत वारी ॥ नख.

खड़ा री शोभा नीकी।
चन्दा छवि कर रही फीकी।
चितवन अंजन सार, बनरही सुकुमारी॥ न०
जोबन धन पर कस चोली।
सजन संग खेलो होली।
घगरो बूंटीदार कसुमल गुलसारी॥
जा में सजनी आयो।
सुखसे पिव अंग लिपटायो।
म्हाने हागइ कितनी वार करनो मनुहारी॥ न०

[तरज] प्यारी प्यारी सूरत थांकी चन्दा जैसी लागे।
नखराली भायजी सेजां आओली के ना।
म्हांका नैणा सूं नैणया मिलाओली के ना॥
आओ आओ जी साहणी आपां चौसर खेलां।
थांका जोबन सूं बाजी म्है लगावां छां पहलां।
प्यारा छैलां सूं हँस बतलाओली के ना॥ नखरा०
थांके नाई खाओ तो मीठा घेवर ल्याया छां।
थांके नाई पहिरो तो बिछिया नेवर ल्याया छां।
थांने राखां गोदयां में सुख पाओली के ना॥ नखरा०
प्यारी आओ जी आपां दोन्यूं भेले सोवांलां।
थांका नाका सूई में तागा म्हांका पोवांलां।
जानी सांची बताओ शरमाओली के ना॥ नखरा०
थांकी गोरी २ छतियां पे कसी अंगियां।
म्हांने मन ना छुवाओ प्यारी देखो तो भलां।
रंग भीनां ने अंग लिपटाओली के ना॥ नखराली०
प्यारा २ दांतां में थांके मिस्सी की रेखां।
थांका मीठा बोलां ने फेरूं बोलो तो देखां।
तीखा २ नैणां सूं म्हाने मारो मर्द ना॥ नखरा०

[तरज] म्हारा लाडला देवरिया।
म्हांने रखडी घडादयो जो छैला।
थांने कद की कहूं छूं भलां गैला जी। म्हांने०
कद जुटणा रा जोड बणेला जी—
थांने राखूं गी मैं सेजों में अकेला॥ म्हांने०
थांने रखड़ी घडादयूं प्यारी चौखो।
ल्याऊं जुटणा री जोड अनोखो।
थांने हीरां का पहराऊँ प्यारी मेला जी—
पण सेजां री थे सुख कद देला॥ म्हांने०
पिया सोनारी कणकती ल्याओ।
म्हारी नथड़ी में मोर जड़ाओ।
म्हारा बिछिया भी होगया मैला जी—
थांने कदकी कहूं छूं मैं तो हे छैला॥ म्हांने०
थांके सोना री कणकती ल्यास्यूं।
थांकी नथड़ी में मोर जड़ास्यूं।
थांका बिछिया भी अब उजलेला जी—
थे तो काई हठ लिया छो हठेला॥ म्हांने०
म्हाने नवल जवानी पिया छाई।
म्हांकी छतियां अजब गरणाई।
म्हारा जोबन रो रस कद लेला जी—
कद अंगिया पे हाथ फिरेला॥ म्हांने०
आओ २ प्यारी अंग लिपटाऊं।
थांने हिवड़ा रे मांय छुपाऊं।
थांका अब रसभोला बजेला जी—
रंग रसिया सूं रंग मचेला॥ म्हांने०

[त०] सैयां नहीं आवे सेजां मांय सजनी अब का कीजे।
जोबन में लग रही गहरी आग चन्दा तू छुप जारे।
पोढ़ण ने ग्लती माँ कल रात साजन आसी म्हारे॥
सुन्दर छूं नार रसीली। नखराली घणी शर्मीली।
चपलासी चतुर रंगीली।
चञ्चल चटकीली गोरो गात नैणा अंजन सारे॥ जो०
छक रही छिदगारी तन में। सोहे सजनी लालन में।
मोहे मीठी बातनमें।
चूंपां धर दांतन में चमकात मोतियन मांग सँवारे॥ जो०
प्यासी छूं पीव दरसकी। छतियां दो भरगई रसकी।
होगई पिया सोला बरसकी।
छैला अब बसकी छे नहीं बात सोजन अंग लिपटारे॥ जो०
कोमल अँग कसुमल छतियां, मसकेण की आगई रतियां।
बोलूं छूं सांची बतियां।
भेजूं लिख पतियां किसके हाथ थांपर रंग रसिये रे॥ जो०
भारी भयो तुमं बिन जीना। धरकन तन फरकन सीना।
तड़पूं ज्यों जल बिन मीना।
कर कर रंग भीनां थांकी याद नैना सितम गुजारे॥ जो०

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

मतवाली मालन

* रचयिता *
श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

जलने वाले जलगये दो प्रेमियों के प्यार से । मरने वाले मरगये सिर फोड़ कर दीवार से ।
पर नहीं बुलबुल ने छोड़ा इश्क गुल गुलजार से । बाल भी उखड़ा नहीं सैयादकी तलवार से ।

* एक ख्याल *

अदा दार नाजुक नवीन माह जबीन सी एक नारी ।
चली जात चितवन चलात मुसकात घात कर मनवारी ॥टेर

छीनकर दिल लेगई एक आन ही की आन में ।
बींध ही डाला कलेजा नैन के एक बान में ॥
रात दिन तड़पा किये उस माहरू के ध्यान में ।
कुछ कसर बाकी रही ना मौत के सामान में ॥

मदन मस्त हस्तनी कामनी गज गामनी सुन्दर बाला ।
सरोज नयनी पिक बैनी सुख देनी मन्द अम्बर आला ॥
चटकीली चपलासी चञ्चल मुखचन्द्र सुलोचन गुल लाला ।
नैन बान को तान जान ने घायल तन मन कर डाला ॥
छिम छिम करती पग धरती तन मन हरती वह पनिहारी ।
चली जात० ॥१॥

टुकड़े जिगर के करदिये कातिल ने चश्मे तीर से ।
पर दम तलक निकला न आशिक के बदन दिलगीर से ॥
आया नजी को बलबला युक्त मा नसों की पीर
जब जोर से जाना ने जकड़ा जुल्फ की जनजीर से ॥

चम्पा बरणी चतुर रँगीली जोबन धनकी मस्तानी ।
चमक रही चहरे पर जिसके चतुरा चंद्र सी नूरानी ॥
खड़ी सरोवर पर धर गागर खेंच खेंच भरती पानी ।
गजब ढा रही दिखाके अब्रवा रम्भी की गेंचा तानी ॥
सैल मार रही सीनेपर छतियन की छटा न्यारी न्यारी ।
चली जात० ॥२॥

ए नजूमी फलसका कुछतो बता तकदीर का ।
क्यों दिवाना मैं बना उस हुस्न की तसवीर का ॥
ओ ! हकीमाने जमा कुछ फिक्र कर तदबीर का ।
जल रहाहै दिल लगा मरहम कोई अकसीर का ॥

कर चाहे बरबाद मगर फरियाद मैं यही सुनाऊंगा ।
हटाके पर्दा दिखा रुखे रोशन को तेरे गुण गाऊंगा ॥
मरके अगर महशर भी गया तो याद न तेरी भुलाऊंगा ।
टूट सितारे की सी तरह मैं पास तेरे फिर आऊंगा ॥
क्यों करतीहै खून किसीका ओ गुलमन जादूगारी ।
चली जात०

बतादे यार तेरे हुस्न का दीदार कब होगा ।
बहम सीने से सीना लब से लब का प्यार कब होगा ॥
कसमहै तुमको कहदे वस्ल का इकरार कब होगा ।
जिगर से जल चुकाहै जो चमन गुलजार कब होगा ॥

भूल के कोई कदम न रखना इश्क सनम की बाजी में ।
बड़े बड़ों ने जान गँवादी है माशूक नवाजी में ॥
करो दुम्न मल २ कर लाखों गुजरे झंझट साजी में ।
मगर नख्ले गुल खिला नहीं हसरत का उम्र दराजी में ॥
मान 'सुधाकर, मान न हो कुर्बान, यह है नागन कारी ।
चली जात चितवन चलात०

[तर्ज] सब ठाट पड़ा रहजायेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।

इस भारत की मालनियां बन चौलाई बेचन आई हूं ।
सोया और चूका पोदीना हरियाली पालक लाई हूं ॥ इस भारत०
मेरी खेलोजी फुलवारी । खिलरहीगुल गेंद हजारी । सरसारही सुन्दर प्यारी । मेरी नवल उमरिया बारी ।
मैं चंचल चपला चंद्र बदन बन जोबन में गदराई हूं ॥ इस भारत०
चलूं चाल अजब मतवाली । मेरे मुखपर बरसे लाली । सूरत है भोली भाली । सुन्दर साँचे में ढाली ।
मैं चम्पा की सी डार चमेली नरगिस बनकर छाई हूं ॥ इस भारत०

...र्म मिस्सी नीकी। लिलवट पर लग रही टींकी। मेरी सारी असल जरीकी। हरे शोभा सरस परी की।
...मद माती मन हरन सुहागन, नागन सी लहराई हूं॥ इस भारत०
...गाँय जवानी वसकी। खिलरहीं कलियां नस२की। भरगई दोउ कुचियां रसकी। कसरही अँगिया अतलसकी
...नें सुघर "सुधाकर,, सी सजनी गज गमनी चन्दा वाई हूं॥ इस भारत०

[तर्ज] म्हारे घर आओ जी मोहन बनवारी।

...ई म्हारे, टप२ चूवे छे पसीनो।
...दुखदाई गरमी रो महीनो॥
ओ जी म्हांने खस २ रा बंगला बणवाय द्यो।
ओ जी जीमें बिजली रा पंखा लगवाय द्यो॥
ओ जी झोला खावे, जोवन रँग बीनो॥ हाय०
ओ जी चोखा फूलां सूं डोल्यो सजवाय द्यो।
ओ जी जी में अन्तर की सीस्यां छिड़काय द्यो॥
ओ जी थाने जाणूं अँगूठी रो नगीनो॥ हाय०
ओ जी म्हांने सोना री रखड़ी घड़ाय द्यो।
ओ जी जीने हीरां ईं हीरां सूं जड़ाय द्यो।
ओ जी पीलो पेच रँगा द्यो झीणो झीणो॥ हाय०
ओ जी चूवे रंग गुलाबी गोरा अंग सूं।
ओ जी म्हांने छाई जवानी नया ढंग सूं।
ओ जी तड़पावे मदन छे नवीनो॥ हाय०
ओ जी म्हांने बागां में झूला घल वाय द्यो।
ओ जी जी में रेशम डोरी लगवाय द्यो।
ओ जी थांसूं नेह "सुधाकर" कीनो॥ हाय०

ओ जी थांके टप टप चूवे छे पसीनो।
हाय नहीं भावे गरमी रो महीनो॥
ओ जी थांका मुखड़ा रा मीठा २ बोल यह।
ओ जी म्हारा जिवड़ाने कीनो डांवां डोल यह॥
ओ जी जाणे जादू सो काँई कर दीनो। हाय०
ओ जी थांका रतना सा, तीखा २ नैन यह।
ओ जी म्हांने भावे रंगीला सुखदैन यह।
ओ जी म्हारा हिवड़ा में घर कर लीनो॥ हाय०
ओ जी थांकी पतली कमर चम्पा डार ज्यों।
ओ जी शोभा पावे छे चोली रा अनार सों।
ओ जी म्हारो तन मन धन वस कीनो॥ हाय०
ओ जी थांने कजरा ज्यों राखूं म्हारी आंख में।
ओ जी आओ घुसजाओ पंछीड़ारी पाँख में।
ओ जी म्हारो मन थे "सुधाकर,, छीनो॥ हाय०

[तर्ज] फिलमी गायन।

ओ दिलवर प्यारेने!
टुकड़े किये किस जोर से इस दिल के दिलवर प्यारेने॥
वह नैना थे या खंजर। जो कारी ए जिगर पर।
अररर रर वस घायल करदिया- जालिम तीर करारे ने॥
उलफत में हम रोते हैं। अशकों से मुँह धोते हैं।
अररररर बेचैन किया बस- उनके नैन नजारे ने॥ ओ०
मत भूल के आंख लड़ाना। उलझन में मत पड़ जाना।
अररर रर फिर खून बहाया- दिल पर जख्म हमारेने॥
उम्मीद न थी यह हमको। यों देंगे 'सुधाकर, गमको।
अररर रर अंजाम मोहब्बत- देख लिया जग सारेने॥ ओ०

[त] कद आओला कन्हैया म्हारे द्वार मैं ठाड़ी म्हालूं०

लेल्यो २ जी खरबूजो मजादार-
साजन म्हारी वाड़ी को।
मीठा लागे तो देदीज्यो पैसा चार-
ल्याऊंली गोटो साड़ी को॥ लेल्यो २ जी०
जोबन नदियां बीच अनोखी बाड़ी अजब लगाई।
हरिया २ पान फूल अलबेली बेलां छाई।
देखो २ जी फुलवारी री वहार दरवाजो खोल किंवाड़ो को॥
तनकी सुन्दर गुल क्यारी में मनको बीज उगायो।
रस चाखण री आस लगा नैणा सूं पाणी पायो।
रात्यों जागी जी हिवड़ा रे हाथ लगार-
मतपूछो हाल अगाड़ी को॥ लेल्यो २ जी०
भरी जवानी बीच अकेली मैं मालण की जाई।
माथा ऊपर मेल पटो खरबूजा वेचण आई।
चाखो २ जी आलीजा एक बार,-
यो फल म्हारी आड़ी को॥ लेल्यो २ जी०
चन्दा जी री चांदणियां में आप 'सुधाकर, आज्यो।
चोखा २ खरबूजा हाथां सूं म्हारे खाज्यो॥
ल्याज्यो २ थांका भायेलां ने लार-
गेलो छे साफ पिछाड़ी को॥ लेल्यो २ जी०

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

...जी लगन लगार मने छिटकाय मती तरसाय मती
...
पूछां थाने व्यायणजी बतलाओ होली कांई छे।
फागण सुद पूनम की या भारत में रीत चलाईछे॥
पूछां थाने व्यायणजी०
हरिण्याक्ष ई पृथ्वी पर एक राजा छो।
अभिमानी अन्याई निपट निलाजा छो।
या राम भक्त प्रहलाद जिण के पुत्र जगत सुखदाईछे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
वह नीच नृपति खुद ने भगवान बतावे छो।
साधू सन्तां सूं अपणो नाम जपावे छो।
वह कर २ अत्याचार जगत की सब मर्याद मिटाईछे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
ज्ञान भक्त ने लाग्यो एक कुम्हारी को।
जीवित आगन में बालक देख मँजारी को।
जब लागी सांची लगन रामकी महिमा मनमें भाईछे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
खबर पाय प्रहलाद ने पिता पकड लीनो।
त्रास दिखा बहु भांति घणों संकट दीनो।
हरवाने ऊंका प्राण अनेकां विध कीनी कठिनाई छे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
पण मरयो नहीं वह भक्त राम रक्षा कीन्हीं।
तब बहन होलिका ने राजा बुलवा लीनी।
या अगनी में नहीं जलबा को वर ब्रह्माजी सूं पाई छे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
वरदान अमर होवां को तो देदीनो छो।
पर ऊं चेल्यां ब्रह्मा बाभी कहदीनो छो।
तने कामदेव उत्पन हुयो तो थारी नहीं भलाई छे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
सुण भाई को हुकम होलिका उठ धाई।
ले बालक ने गोद चिता पट बणवाई।
फिर बैठगई ऊं में जद दुनियां वाला जुगत रचाई छे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
फाटा २ बोल सभी बोलण लाग्या।
लिंग योनि आदिक सूं मुख खोलण लाग्या।
सब उपज्यो भारी काम नीच राक्षसणी का मन मांहींछे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
जलगई दुष्टणी और भक्त खेलत पाया।
यह हँसता २ अगनी में सूं निकल्याया।
सब सुखी हुयो संसार जभी सूं बस या प्रथा बणाईछे॥
म्हे पूछां थाने व्यायणजी०
यों बाल के होली वचन अटपटा बोलांछां।
ऊं भक्तराज की याद कराता डोलांछां।
लिख गाली मांय 'सुधाकर, यो प्रहलाद कथाने गाईछे॥
म्हें पूछां थाने व्यायणजी०

[त.] जिवड़ो घबरावे बालम तोहे मालुम ना पर पीड़ की
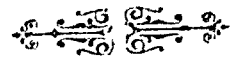
म्हे सुण्या करेडा खोटा जमाना कलियुग आगया। टेर
अब कलजुग की या बारबार थे सुणजो चित्त लगार।
नर छोटा नारी बड़ीभ जी लेख लिख्या करतार॥
कोई लेख लिख्या करतार के टार्या ना टरे।
कोई नित उठ देखूँ पीव के जिवड़ो यूं जरे॥ म्हे०
खाविंद छोटा दिन घणा सजी किस विध आवे नींद।
सेज चढंता कामणी रयो तोरण आवो बींद॥
कोई तोरण आयो बींद के फेरा होगया।
कोई रात्यों म्हारूँ बाट के जोऊं दीवला॥ म्हे०
गोरी रूप सरूप की सजो निरखत चाले चाल।
कम्मर लोका खावती स कोई ज्यों चम्पा की डाल।
कोई ज्यों चम्पा की डाल घणो दुख जीवने।
कोई सुण सासूजी बात बड़ो कर पोवने॥ म्हे०
घूँगटड़ा की ओट में सजो निरख्यो पूरण भान।
जो कोउ भिक्षा मांगतोर मैं जोबन देती दान॥
कोई जोबन देती दान सुणो सब साथियां।
कोई वेग बुलाकर पीव कराओ बातियां॥ म्हे०
बर जोड़ी का ना मिल्यास कोई पछतायां कांई होय
बेमाता अक्षर लिख्या स कोई मेट सके ना कोय
कोई मेट सके ना कोय करम गत जाणिया।
कोई कभी न रमिया सेज रंग नहीं माणिया॥ म्हे०
चंद्रकला छुपने लगी सजी समभयो नहीं गंवार।
मैं मुख से कैसे कहूं सजी यो म्हारो भरतार॥
कोई यो म्हारो भरतार के गोदी गालिया।
कोई सासूजी शाबास भला सुत पालिया॥ म्हे०
छतियां तो ऐसी पकी सजी जैसे सुरख अनार।
मसकण वाला घर नहीं स वह छो। ... भरतार
कोई छोटा सा भरतार बजावे तालिया।
कोई किस विध कहूं 'सुधाकर, आवे लाजिया॥ म्हे०
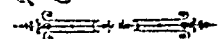
प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

* दोनों का गान, रस भरी तान *

* रचयिता *

श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सुधाकर"

टोंक (राजस्थान)

[तर्ज] नाचे नैणा में नन्दकिशोर।

ओए थारी प्रीत पुराणी गोरड़।
कठे चाली मने तू छोड़ ॥ प्यारी०
थारो जोबन भोली बनियां।
गोरीवदन गुलाबी छनियां।
ओए मुख मीठी रसीली हसोड़ ॥ कठे चाली०
थारी म्हारी लगन मोटी।
जैसे धोती और लँगोटी ॥
ओए थापाँ दोन्याँ का दिल रख्या जोड़ ॥ कठे०
पहल्यां तो तू नित आवेछी।
दोन्यां ऊपर बतलादे छी।
ओए अब लेछे घूंगटड़ा ने मोड़ ॥ कठे०
क्यों म्हाँने अब छिटकावे छे।
पेला के घर क्यों जावे छे।
ओए थारा मनकी बतादे मरोड़ ॥ कठे०
जब थारो जोबन ढल जासी।
काम नहीं कोई थारे आसी।
ओए यह नामी करे मन मोड़ ॥ कठे०
ओए चाहे करले 'सुधाकर,, से होड़ ॥ कठे०
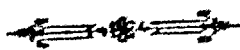
[तर्ज] नाचे नैणा में नन्दकिशोर।

ओजो थाँका नैणा में घुल गया प्राण—
ओजी थाँकी बोल्याँ में फँस गया प्राण।
थाँने काँई बताऊँ म्हारी ज्याण ॥ ओजी०
थाँका नैणा घणा रसीला।
रंग रँगीला छाव छबीला।
ओजी थाँका लागे हिया पर बाण ॥ थाँने०
थाँको जोबन उमग्यो ऐसो।
चंद्र छटा पूनम की जैसो।
ओजी जैसे दूध में आयो उफाण ॥ थाँने काँई०
थाँको घूँगट थाँको मोगो।
जीमें लागे सूरज उगेगो।
ओजी भोला मुखड़ा री मुस्काण ॥ थाँने०
रात्यों जागाँ थाँके साटे।
मायो दूखे छाती फाटे।
ओजी म्हारा उड़ गया सब ओसाण ॥ थाँने०
म्हाने यों ही तड़पाओला।
पैलांसू हँस बतलाओला।
ओजी लई मांची "सुधाकर,, जाण ॥ थाँने
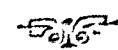
[तर्ज] सीताराम कहो राधेश्याम, हरे हरे राम—

आजा आजा म्हारी प्यारी दिल जान—
दिल को कलोलें मान, कर न गुमान।
जानी जिगर लड़ाजा। आजा०
नवल जवानी तन पर छाई।
जोबन में अँखियाँ गरणाई।
चंचलता चितवन में छाई,
तू बन रही मस्तान—कर न गुमान। जानी जिगर०
गोरा गोरा गाल छे थारा।
नैण गुलाबी कामण गारा।
घूंगटड़ा रे माँय नजारा।
मत मारे नादान—कर न गुमान। जानी जिगर०
रससूं भर गई कोमल छतियाँ।
सँग पोढण की आगई रतियाँ।
मीठी मीठी करके बतियाँ।
हरलियो तन मन प्राण—कर न गुमान जानी०
आजा रे ओ मन का राजा।
हँस बतला जा प्रेम बढाजा।
आज "सुधाकर,, से लगवाजा—
मँहदी का दो पान।
कर न गुमान ॥ जानी जिगर० आजा रे म्हारी०

म्हांने प्यारी लागेरी मा या कान्हा री वंसी ।
न वीत्यो जावे छे छेला बेईमान ।
ओलगूँ आवे छे साँची लीजे जान ॥
तासू रे माले । मैं नित निरखूँ दिया उजाले ।
नरदी रे पाले कैयाँ करूँ वखान ॥ म्हारो०
मी जोर मचावे । चोली तन पर मसकी जावे ।
नींद नहीं आवे, तने नहीं कुछ ध्यान ॥ म्हा०
न मस्त जोवन की । कली र खिलरही बदन की ।
परण कदी नहीं मनकी जींसे छूँ हैरान ॥ म्हा०
पाकी दो नारंगी रसकी । कुण चाखे पण देकर मसकी ।
सुन्दर गोरी सोला बरस की छोरी छूँ नादान ॥ म्हारो०
जो मैं जोड़ी रो वर पाती । कोड रसिया सँग मौज उड़ाती ।
लिपट 'सुधाकर, सँग सोजाती निरभे खूँटी तान ॥ म्हा०

सुन्दर मतना करे गुमान जवानी दो दिन में ढल जासी ।
करले जोवन रतन रो दान, सगी फिर काम यो काँई आसी ॥
गोरो बदन गुलाबी छतियाँ ।
चंचल मृगनी की सी अखियाँ ।
मोहनि मीठी मीठी बतियाँ, सोहनि सूरत चंद्र कलासी ॥
करती गरभ घणो नखराली ।
दारी नाथुरामजी की घरवाली ।
घूँगट माँय वणा कर जाली, मारे नैण नजर चलासी ॥
कोइ ने छुप छुप सेज चढावे ।
कोइ ने रूप दिखा ललचावे ।
कहतां लाज घनेरी आवे, हाय र एक दुख और एक हाँसी ॥
सजनी सुनले वचन हमारा ।
मतना समझे मनसूँ न्यारा ।
विन्ती करे 'सुधाकर, प्यारा, समदण सेजाँ में कब आसी ॥
नखरो अजब तरह को करती ।
तन मन धन लोगाँ को हरती ।
चाले उछल अधर पग धरती, कबतक जुलमण जुलम चलासी ॥

पाणीड़ो भरल्याई सा चंदा बरणी नार ।
लचकाती कम्मर आई सा जादूगरणी नार ।
धर ईंढोणी पर गागर । जल भरयाँ जाती सागर ।
जोबन से बन गरणाई सा कामणगारी नार ॥ पाणी०
घूँगट पट खोल दिखाताँ । नैणाँ सूँ नैण मिलाताँ ।
नखराली ना शरमाई सा, तन मन हरणी नार ॥ पा०
सेजा में अँग लिपटाकर । जाँगा सूँ जाँग मिलाकर ।
छैला सूँ मोज उड़ाई सा, जैसे परणी नार ॥ पाणीड़ो०
नणदल री भर भर बाथाँ । सासू ने मारे लाताँ ।
परण्या सूँ करे लड़ाई सा, वा अनडरणी नार ॥ प०

पटेलण बाग्याँ ए अबके साँठाँ रो बाड़ ।
करे मत सोच रँगीली ।
अररर••• आयो मास असाड़ ॥ पटेलण०
बयारा धोरा खूब बणास्याँ । काँटा भाटा दूर हटास्याँ ।
गहरो गहरो माँय चलास्याँ, हलने कराँ खराड़ ॥ पटेलण०
आछ्यो आछ्यो बीज उगास्याँ । चोखी चोखी दाव लगास्याँ ।
चड़स्याँ चड़स्याँ पाणी पास्याँ नीकाँ धरती फाड़ ॥ पटेल०
बगत ननाणी की जद पास्याँ । जेलीसूँ हरणी कर आस्याँ ।
एराँ मेराँ माँय जमास्याँ ऊँचा ऊँचा झाड़ ॥ पटेलण०
हरी भरी खेती सरसास्याँ । जद पाणत करवाने जास्याँ ।
मोटो पौंडो तने बतास्याँ लीजे पकड़ उखाड़ ॥ पटेलण०
आगँ रसकी खीर बणास्याँ । लोग लुगाई दोन्यू खास्याँ ।
ओड गूदड़ी ने सोजास्याँ करस्याँ थारो लाड़ ॥ पटेलण०
हाँसल पोसल राज चुकास्याँ बोहरा ने पाछे नमटास्याँ ।
मालमतो सगलो खाजास्याँ लेसी काँई हाड़ ॥ पटेलण०
खूँगाली और कड़ा घड़ास्याँ । नथड़ी ऊपर मोर जड़ास्याँ ।
फेर 'सुधाकर, ने समझास्याँ कर लाख्याँ सूँ राड़ ॥ पटे०

आगी बलवादे ! आगी बलवादे भायला—
ऐसी झाबर झोटी ने । परी उदलवादे ॥
बीध्या छाणा को सो मूँडो कम्मर मोटी मोटी ।
भूँडी भूँडी सूरत जैसे बल्या तवा की रोटी ॥ आगी ब०
लम्बा लम्बा बाल कमर पर आँख्याँ छोटी छोटी ।
पेट ओदसा को देखो तो सामर की सी कोठी ॥ आगी ब०
चपटो चपटो नाक पछवाड़ी डाकण की सी चोटी ।
काला पीला दाँत जणाकी चूँचा भौंटी भौंटी ॥ आगी ब०
जसी तरह सूँ देखो सगली बाताँ खोटी खोटी ।
ऐसी ओदसा पर तो तू मत खोले यार लँगोटी ॥ आगी ब०
मदबी गहरी भाँग 'सुधाकर, आज मँजासूँ घोटी ।
पीले और पिलाले रसिया फेर बजाले सोटी ॥ आगी ब०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

कविप्राण

सुधाकर शब्द सागर

अंत्याक्षरी
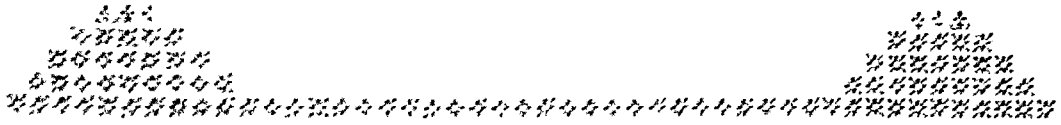
दिग्दर्शन
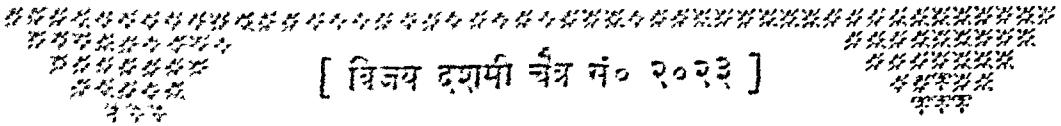
[विजय दशमी चैत्र सं० २०२३]

निर्माता

गिरधर दास वोहरा

सुधाकर 'क़मर'

टोंक (राजस्थान)

भारत

वस्तु मात्र है । वह प्राचीन संस्कृत कोशों की भांति पाठ्य पुस्तक तो नहीं कि जिन्हें कोई बार-बार पढ़कर मनन कर सकेगा । 'सुधाकर शब्द सागर' के अलंकृत और अंत्यानुप्रासित शब्द अधिकाधिक संख्या में कवियों, शाइरों, विद्यार्थियों की लेखनी द्वारा छंदोवद्ध होकर उनकी मधुर वाणी से उच्च स्वर में विशाल जन समूह के बड़े-बड़े अधिवेशनों में प्रभावित होंगे, जिनकी भ्रमरवत् गुंजन के श्रवण मात्र से रसिक साहित्य प्रेमीजन अनन्त सुखानुभव करेंगे, अत्यन्त प्रभासित होंगे, एवं रसोमय ध्वनित शब्दों का भाषा भाव, चिन्तन, मनन करते हुए स्वमेव वाणी द्वारा ऐसे उच्चार करने लगेंगे, जैसे सिनेमा की धुनों को वहुधा वालगण तथा जन साधारण अपने घरों, गलियों बाजारों में गुनगुनाते रहते हैं, इस प्रकार से हिंदी नागरी संसार में एक नव कुसुम पल्लवित होकर अपनी गंध वायु द्वारा निरक्षरता का उन्मूलन करेगा । महान कोशों की जिल्दों में ढके हुए साहित्य शब्द रत्नागार का अधिकाधिक इस तरह प्रचार होगा जिस तरह मेघों में आच्छादित जल कणों का वृष्टि द्वारा प्रसार होता है, मेरा लक्ष्य उदाहरणानुसार लुप्त शब्द रत्नों को विश्व स्थल पर बिखेर कर उन्हें मुखरित करना है, ताकि देवनागरी के रूप सौन्दर्य का मूल्यांकन करके उसे सुगमता के साथ सर्व साधारण अपनी अमूल्य निधि मानकर अपना सकें, यह भी एक अपनी भाषा प्रसार का उत्तमोत्तम सुन्दर प्रकार है ।

शब्द कोष एक अमर ग्रन्थ है जो किसी भी काल में वृद्ध अथवा जीर्ण नहीं होता, यह सदा सर्वदा तरुण और नवीन रहता हैं इसकी आवश्यकता प्रत्येक काल में बनी रहती है । शब्दार्थ सम्बन्धी बड़े बड़े विवादों के निर्णय बड़े बड़े न्यायालयो में बहुधा शब्द कोशों के आधार पर होते रहते हैं । यह कल्प वृक्ष से भी अधिक पदार्थो का प्रदाता 'शब्द वृक्ष' है ।

शब्द वृक्ष सुर तरु की छाया । सुख निधि विशद् विवेक प्रदाया ।। सु०

शब्द में स्वर है, स्वर में रस है, रस में आनन्द है, आनन्द में प्रकाशरूप ब्रह्म है, वेद इसका साक्षी है । 'स्वरो ब्रह्म न संशयेत् ।' स्वर और प्रकाश ही सर्व शक्तिमान का स्वरूप हैं, इसीलिए अपना मुख्य कर्तव्य लोक कल्याण का पथ प्रदर्शन ही जानकर जीवन की दीर्घ कालीन दिनचर्या में उक्त कोश के निर्माणार्थ अन्तरराष्ट्रीय प्रयास कर रहा हूं, मेरी शक्ति 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' [सदाक़त फ़ना और नूर] है, आराम तलव नहीं, जफ़ाकश और कर्तव्यशील हूँ ।

इस कोश से संगीतज्ञों को भी महान लाभ होगा । वह इससे द्वारा, दोहा, चौपाई, छंद, सोरठा ग़ज़ल, ठुमरी, दादरा, इत्यादि अनेक राग, रागनियों के पद बहुधा धुनों में सुन्दरातिसुन्दर निर्माण कर सकेंगे । काव्य का भूषण स्थल के अनुसार रसात्मक तथा कलात्मक अलंकृत शब्दों, वाक्यों का अंत्यानुप्रासित उपमा, उपमेय, रूपक आदि युक्त चयन व गठन ही साहित्य एवं संगीत के विशेषज्ञों ने माना है, रसात्मक कविता को ही काव्य कहा जाता है ।

यों तो आजकल (विषयक कोश के अभाव में) अनेक प्रकार की अतुकान्त कविताएं बहुधा पत्र पत्रिकाओं में मुद्रित, देखी जाती हैं, किन्तु उन्हें एक बार दृष्टिपात करके ही रद्दी की टोकरियों में डाल दिया जाता है । पुनः उनके दर्शन नमक मिर्च की पुड़ियों में होते हैं, वह श्रेष्ठ कवियों की प्रबन्धित रचनाओं के समान किसी उच्च पुस्तकालय की ग्रन्थ मालाओं में आदृत नहीं हो पातीं ।

प्रणेता के कोश की मुख्य विशेषता यह है कि इसके आधार पर उत्तमोत्तम तुकांत एवं रसोमय अलंकृत कविताएं रचीं जा सकें । अन्यथा कोश तो अपने स्थान पर शब्दार्थ का प्रदाता है ही सही, म० तुलसी, सूर, कबीर, नानक इत्यादिकों की रचनाएं इसीलिए लोकमान्य, लोकप्रिय हैं कि वह अतिभाव गम्य हैं और पूर्ण तया प्रबन्ध अथवा मुक्तक निबन्ध प्रणाली के नियमानुसार हैं ।

कवि संसार का उपसूर्य है, विश्व द्रष्टा और पथ प्रदर्शक है, अपने देश और राष्ट्र के प्रति ब... बहुत बड़ा दायित्व है, कवि की वाणी अमर है, कवि अपनी शक्ति को बाहरी चर्म चक्षुओं को बंद करके ... नेत्रों से देखने जानने और समझने का प्रयत्न करे, यह अति प्रबल और महान है। तुलसीदास जी कालिदा... आदि महाकवियों ने देश का अनेकों प्रकार से अपने रुचिर काव्य द्वारा महान उपकार एवं उद्धार किया है, ...लिए देश ही क्या विश्व उनका आभारी रहेगा।

आज देश को उत्तमोत्तम, मार्मिक, उत्तेजक, उपदेशक, आकर्षक, प्रभावशाली उन रचनाओं ... आवश्यकता है जो देश के विभिन्न भागों, मतों, विचारों को साकाकार रूप से भावात्मक एकता के रंगों में रं... करदें। डोम, ढाढियों, नटों, भंडैतों तुल्य, चुटका-चटकियों, लड्डू-रसगुल्लों या गालों-बालों की चर्चा में विदूषकों स... हंसने हंसाने वाली कविताओं से देश का कल्याण नहीं होगा, बहुधा सम्मेलनों में अधिकतर ऐसी ही ऊट-पटांग रचनाओं का वातावरण देखा जा रहा है, इस प्रकार की रचनाओं से श्रोताओं को खुश करने का समय दूर पहुंच चुका है, कवि जन समाज ही यदि विषयक रचनाएं कथन करने लगेगा तो फिर उनके अधिकारी जनों की जीविका क्या होगी। वर्णित कविताओं के उदाहरण भी दिये जा सकते हैं, किन्तु सत्य कटु होता है, यद्यपि कड़ुवी औषधि ज्वर को शीघ्र भगाती है, तथापि इतने कथन के लिये भी क्षमा प्रार्थना ही उचित समझता हूं।

स्वर्गीय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी तथा स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू की विमल वाणी द्वारा प्रसारित 'राष्ट्रीय भावात्मक एकता' मंत्र मय वाक्य को पुनः पुनः स्मरण करते हुए, देशी और विदेशी अनेक भाषाओं को शकर शीर बनाकर इस कोश द्वारा सर्वत्र प्रसार करने का प्रयत्न किया गया है, उन लोक दिग्गज महामहिम मूर्धन्य दिवंगत महान आत्माओं के उपरोक्त वाक्य में अत्यंत भावुकता, अविरल शान्ति, अनंत गाम्भीर्य एवं अक्षय प्रेमोल्लास तथा सर्व भू कल्याण का पथ प्रदर्शन शशि प्रभा सम ज्वलंत है। जल पय सरिस विकात, देखत प्रीति की रीति भल। तु०।

प्रत्येक दृष्टिकोण से यह भी बड़ी शब्द कोश है, जो अनेक नामों से देश में प्रचलित हैं। बड़ी बड़ी सभाओं संस्थाओं से निर्मित सर्वोच्च कोटि के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित, संशोधित तथा प्रमाणित शब्द एवं शब्दार्थ ही प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों से प्राप्त करके विशेष लाभप्रद प्रणाली में रसात्मकतायुक्त अलंकृत किये गये हैं, ऐसा नहीं है कि यह कोश केवल कवियों या शाइरों के लिए ही उपयोगी हो, यह सर्व साधारण प्रज्ञ तथा अप्रज्ञ सभी के लिए समान उपादेय है, अपितु विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभप्रद है. इसको अनेक खण्डों में विभक्त करने की योजना इसीलिए बनाई गई है कि विद्यार्थी गण तथा जन साधारण इसे अल्प शुल्क (सहायतार्थ) प्रदान करके प्राप्त कर सकें, और धीरे-धीरे सम्पूर्ण कोश के धनी बन सकें।

अतः जो कुछ अपना कर्तव्य मैंने महानुभावों की सेवा में समर्पण किया है, उसके आदरण पर ही मेरे परिश्रम की सफलता निर्भर है। जनता जनार्दन और कोविद बुधजनों के आदरण, सहयोग तथा सहायता के अभाव में इसकी निर्माण व्यवस्था में शिथिलता भी आसकती है। जन्म तो इस कोश ने पा लिया है परन्तु द्रव्य रूपी पय इस शिशु को पान कराकर, बल, बृद्धि एवं तरुणाई प्रदान करना, धन कुबेरों, द्रव्य पतियों तथा राष्ट्र शक्तियों का ही काम है। जयहिन्द।

विनीत

गिरधरदास बोहरा

'सुधाकर' 'क़मर'

राम नवमी, २०२३

धन्यवाद !

उन महामहिम महानुभावों के पुण्य नाम भी उल्लेखनीय हैं जो कोष के ४२ वर्षीय दीर्घ रचना काल में समय समय पर प्रणेता के कार्यक्रम एवं परिश्रम को आलोचन करते हुए अपने अनुभवी परामर्श, शुभाशीर्वाद और शुभकामनाओं से उत्साह वर्द्धन करते रहे थे और करते रहे हैं। मैं विशुद्ध और निर्मल हृदय से उन सब सज्जनों को अचल श्रद्धा एवं अपूर्व शिष्ठता पूर्वक सादर स्वागत सम्मान और अभिवादन सहित यथायोग्य धन्यवाद प्रस्तुत करता हूं उनकी कृपा विशेष का भार मुझ पर आजन्म रहेगा।

वंदनीय श्री मोहम्मद इसमाईल अली खां साहब हिज़ हाई नेस टोंक

,, श्री रणधीरसिंह जी चौधरी, जिलाधीश टोंक

,, सेठ सौभागमल जी लोढा, अजमेर

,, श्री बाबू शमशुद्दीन साहब, भूतपूर्व-ट्रेज़री ऑफीसर, टोंक

,, श्री हबीबुर्रहमान खां साहब एडवोकेट एम. ए. एल- एल. बी.

,, श्री प्रेमी खेमराज जी शर्मा, एडवोकेट एम ए. एल- एल. बी.

,, श्री डा० नाथूलाल जी पाठक, एम. ए. पी- एच. डी. कोटा

,, श्री महेन्द्रकुमार जी जैन, एडवोकेट

,, श्री डा. ब्रह्मदत्त जी एम. ए. पी- एच. डी.

,, श्री राधाकृष्ण जी गोयल, एम. ए. बी. कॉम. एल- एल. बी., विशारद

,, श्री लक्ष्मीनारायण जी टैगोर, एम. ए.

,, श्री महेन्द्रकुमार जी दीक्षित बी. ए. बी.एड.

,, श्री गोपीकृष्ण जी शर्मा, एम. ए. बी. एड. साहित्यालंकार

,, श्री पं० अंबिकाप्रसाद जी शर्मा भूतपूर्व जन सम्पर्क अधिकारी टोंक

,, श्री मु० मोहम्मद सिद्दीक साहब

,, श्री पं० दामोदरदास जी, साहित्योपाध्याय

,, श्री सीताराम जी गुप्ता टे. एडवाइज़र

माननीय श्री दामोदरलाल जी व्यास स्वास्थ्य मन्त्री, राजस्थान

,, श्री गणपतराय जी एस. डी. एम. टोंक

,, श्री सेठ बुधसिंह जी बाफना, कोटा

,, श्री बाबू फतेमल जी जिनाणी भूतपूर्व ट्रेज़री ऑफीसर

,, श्री हबीबुद्दीन साहब, एम. ए. एल-एल. बी. एडवोकेट

,, श्री सुजानमल जी लोढा, एम ए. एल- एल. बी., साहित्यरत्न

,, श्री द्वारिकाप्रसाद जी विजयवर्गी, एम. ए. बी. एड., साहित्यरत्न

,, श्री पं० रामनारायण जी शर्मा, एडवोकेट

,, श्री केसरसिंह जी रावत, एम. ए. बी. एड.

,, श्री श्यामबिहारीलाल जी सक्सेना, एडवोकेट

,, श्री घनश्यामजी लाडला, सम्पादक 'दुकाल'

,, श्री लक्ष्मी नारायण जी श्रीवास्तव

,, श्री रामकरण जी मिश्रा, एम. ए. बी एड.

,, श्री अब्दुल कादिर साहब खन्दा, सम्पादक वक्त साप्ताहिक

,, श्री सेठ उत्तमचन्द जी 'चंदन'

,, श्री वैद्य रामकृष्ण जी मंडोरिया, एम. ए.

,, श्री मौलाना फाइज़ साहब

,, श्री शाइर सौलत साहब,

,, श्री बांसीलाल जी पंचोली एस. डी. आई.

दिवंगत

स्वर्गीय श्री पं० गंगासहाय जी शर्मा

,, श्री रघुनन्दन जी शर्मा राज ज्योतिषी

,, श्री जगन्नाथप्रसाद जी (शाद)

,, श्री पं० बदरीनारायण ज्योतिषी ग्वालियर

स्वर्गीय श्री पं० रामनिवास जी शर्मा, हेड पंडित साहित्योपाध्याय

,, श्री पं० हरगोपाल जी शर्मा ज्योतिषी

,, श्री मनसुखदास जी मास्टर

❀ लघु संकेत शब्द सूची ❀

अँ०	अँग्रेजी	त०	तमिल	मु०	मुहावरा
अ०	अरबी	ता०	तातारी	यू०	यूनानी
अप०	अपभ्रंश	तु०	तुर्की	यौ०	यौगिक
अव०	अवधी	दे०	देशज	रा०	राजस्थानी
अ०	अव्यय	(दे०)	देखो	लै०	लैटिन
इ०	इबरानी	ध०	धर्म शास्त्र	लो०	लोक गीत
उ०	उर्दू	ने०	नेपाली	वा०	वाक्य
उप०	उपसर्ग	न्या०	न्याय या तर्क शास्त्र	वि०	विशेषण
उदा०	उदाहरण	प०	पहलवी	वै०	वैदिक
उड़ि०	उड़िया	पा०	पाली	व्या०	व्याकरण
क०	कहावत	पं०	पंजाबी	शब्द०	शब्द सागर
का०	काव्य शास्त्र	(पु०)	पुर्तगाली	सं०	संस्कृत
कौ०	कौटिल्य	पु०	पुलिंग	सर्व०	सर्वनाम
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	प्र०	प्रत्यय	स्पे०	स्पेनी
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	प्रा०	प्राकृत	स्त्री०	स्त्रीलिंग
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	फ़ा०	फ़ारसी	हिं०	हिंदी
ग्रा०	ग्राम्य	फ्रं०	फ्रेंच	❀	पद्य (कविता) में प्रयुक्त शब्दों के लिए।
गु०	गुजराती	ब०	बरमी	×	स्थानीय शब्दों के लिए
ची०	चीनी	(ब०)	बहुवचन		
छं०	छंद	बँ०	बँगला		
ज०	जर्मनी	बं०	बंगाली		
जा०	जापानी	म०	मराठी		
ज्यो०	ज्योतिष	मल०	मलयाली		
डि०	डिङ्गल				

—अक्षर क्रम—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः, (अ़=अ़ैन) क (क़=क़ाफ़) ख (ख़=ख़े) ग (ग़=ग़ैन) घ ङ च छ ज (ज़ा=ज़ाल) (ज़=ज़े) (ज़=बड़ीज़े) (ज़ु=ज़ुवाद) (ज़ो=ज़ोय) झ ञ ट ठ ड ड़ ढ ढ़ ण त (तो=तोय) थ द ध न प फ (फ़=फ़े) ब भ म य (य़=बड़ीय़े) र ल व श ष स (स़=से) (सु=सुवाद) ह (ह़=बड़ाह) क्ष त्र ज्ञ।

यह एक पवित्र पद है जो वेदाध्ययन एवं मंत्रोच्चार के आदि और अंत में बोला जाता है, ईश्वर वाचक त्रिगुणात्मक शब्द, अध्यात्म रूप में इसका अर्थ है—गंभीर समर्थन, स्वीकृति, हाँ, बहुत अच्छा, प्रणव-मंत्र, परं ब्रह्म, मंगल, ओंकार, ॐकार।

ऑं-

[हि॰ अ॰] विस्मय सूचक शब्द, बालक के रुदन का अनुकरण।

उआँ

उआँ—[हि॰ अ॰] छोटे बच्चे के रोने की आवाज़, सियार (गीदड़) की बोली।

कुआँ—[हि॰ पु॰] कुआ, कूप, कुवाँ, पानी निकालने के लिए खोदा गया अधिक गहरा गड्ढा।

अंधा कुआँ—[हि॰ वि॰] सूखा कुआँ, जिसमें अंधेरा हो, जो घास पात से ढका हो, लड़कों का एक खेल, अंधकूप।

भीतर का कुआँ—[हि॰ पु॰] उपयोगी मगर किसी के काम न आने वाला।

कुआँ—[हि॰ पु॰] कूकने की क्रिया या भाव, एकरोग वि॰।

जुआँ—[हि॰ स्त्री॰] पसीने से पैदा होने वाला एक नन्हा कीड़ा, डीला, जुवाँ।

धुआँ—[हि॰ पु॰] जलते हुए कोयले या लकड़ी आदि से निकलने वाला पदार्थ, धूम्र, धुवाँ।

देता है धुआँ—[हि॰ वि॰] धुआँ देने वाला आगार, निरर्थक पदार्थ, बेकार वस्तु।

मुआँ—[हि॰ वि॰] जौ, भ्रू, फ़ा॰ अबरू।

मुआँ—[हि॰ पु॰] मृत, मरा हुआ, निगोड़ा, नाकारा।

रुआँ—[हि॰ पु॰] शरीर के छोटे-छोटे नरम तथा बारीक बाल, रोआँ, रुंआली।

हुआँ—[हि॰ पु॰] गीदड़ों की बोली, वि॰-वहाँ।

अ

हिंदी और संस्कृत परिवार के स्वर वर्णों का यह पहला अक्षर है, इसका उच्चारण कंठ द्वारा होता है, व्यंजन वर्णों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना नहीं हो सकता, सभी वर्ण (अक्षर) अकार युक्त लिखे और बोले जाते हैं, प्रत्येक वर्ण के अंत में अकार-इकार-उकार आदि स्वर प्रधान रहते हैं, अक्षर 'अ' को किसी भी शब्द के आदि में लगाने से उसका अर्थ विपरीत (उल्टा) हो जाता है, जैसे—'बन' से—अनबन, अनरीति, अनमेल इत्यादि, यह एक निषेध सूचक उपसर्ग है, इसके अर्थ कई प्रकार से होते हैं जैसे—पार=अपार, क्षय=अक्षय, भाव=अभाव, ब्राह्मण=अब्राह्मण, धर्म=अधर्म इत्यादि।

[सं॰ पु॰] विष्णु, शिव, को॰—ब्रह्मा, विराट, इन्द्र, वायु, कुबेर, अग्नि, विश्व, सरस्वती, कीर्ति, कंठ, ललाट, अमृत, प्रणव, यम, प्राण।

इअ

इअ—*[हि॰ वि॰] यह, इधर, इस ओर।

किअ—*[हि॰ वि॰] क्या-किधर-कौन ?

गिअ—*[हि॰ वि॰] ग्रीवा, गला, गर्दन।

घिअ—*[हि॰ पु॰] दूध को जमाकर निकाला हुआ सार, घी, घृत, फ़ा॰-रोगन ज़र्द।

छिअ—*[हि॰ वि॰] घृणा और तिरस्कार सूचक शब्द, अ॰—घिन, नफ़रत।

जिअ—*[हि॰ पु॰] जीव, चित्त, मन फ़ा॰—दिल।

तिअ—*[हि॰ स्त्री॰] त्रिया, तिया, स्त्री, पत्नी, भार्या, तीन की संख्या, जोड़, औरत, उ॰-बीवी।

धेअ–*[हिं०स्त्री०] कन्या, बेटी, बालिका, पुत्री ।
नेअ–*[हिं०स्त्री०] निकट, पास, अ.-क़रीब, नज़दीक ।
पेअ–*[हिं०पु०] प्यारा, सुन्दर, पति, प्रेमी, प्रिय लगने वाला, ईश्वर.अ्.-आशिक़, ख़ाविंद ।
बिअ–*[हिं०वि०] दो, जोड़ा, दूसरा ।
भिअ–*[हिं०पु०] भाई, भैया,सहोदर,फ़ा.-बिरादर ।
सिअ–*[हिं०स्त्री०] जनक सुता, सीता, सरदी,शीत, सिलाई ।
हिअ–*[हिं०पु०] हृदय, मन, छाती वक्षःस्थल ।

अ

यह उर्दू का पहला अक्षर है इसे अलिफ़ कहते हैं उर्दू, अरबी, फ़ारसी भाषाओं में अक्षर को 'हर्फ़' कहा जाता है इन भाषाओं में इसकी परिभाषा कई रूप में की गई है यह पुलिङ्ग माना जाता है।

अ़

यह अरबी भाषा का अठारहवां अक्षर है इसे ऐन कहते हैं इसका उच्चारण स्थान कंठ्य है इसके अर्थ हैं [अ़०वि०] आँख, पानी का चश्मा, होश, सरदार, सोना, जौहर, हक़ीक़त, असल, हूबहू, सगा भाई।

अअ़

राकअ़-[अ़०पु०] झुकने वाला,ईश्वर के सामने घुटनों पर हाथ रखकर माथा झुकाने वाला, 'रुकूअ़' करने वाला ।
वाक़अ़-[अ़०पु०] होने वाला, गुज़रने वाला ।
मवाक़अ़-[अ़०पु०] मौक़ा का बहुवचन, मौक़े ।
ग़ैर वाक़अ़-[अ़०पु०] झूंठ, मिथ्या, असत्य, ग़लत ।
नसिर वाक़अ़-(सी०) [अ़०पु०] एक प्रकाशमान सितारा जो दक्षिण आकाश में उदय होता है ।
राजअ़-[अ़०पु०] रुजूअ़ करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, वापस होने वाला ।
साजअ़- अ़०पु० | वाक़ाफ़िया या अलंकार युक्त बातें करने वाला ।
मुनाज़अ़- 'ज़.'[अ़०पु०] झगड़ा करने वाला, फ़साद फैलाने वाला ।
वाज़अ़- 'ज़.' [अ़०पु०] किसी चीज़ को उसकी जगह रखने वाला, पैदा करने वाला ।
रातअ़ - [अ़०पु०] चरने वाला । जगह ।
मरातअ़- [अ़०अ०] चरागाह, पशुओं के चरने की
सातअ़- 'तो'[अ़०पु०] ऊंचा, बुलन्द, चमकता हुआ ।
मुख़ादअ़-[अ़०पु०] मकर और फ़रेब करने वाला ।
रादअ़-[अ़०पु०] हटा देने वाला, रोकने वाला ।
क़ानअ़-[अ़०पु०] थोड़ी वस्तु पर सब्र करने वाला, साबिर, दुर्दवार, हिं०- संतोषी ।
मवानअ़-[अ़०स्त्री०] मानअ़ा की जमाअ़, अर्थ का बहुवचन, मना करने या रोके जाने वाली वस्तुएँ, जो मना की गई हों, रोकी गई हों ।
मदाफ़अ़-[अ़०पु०] दफ़ा करने वाला, खोने वाला, मिटाने वाला । [वचन ।
मनाफ़अ़-[अ़०पु०] नफ़ा, लाभ, फ़ायदा का बहु-
मुनाफ़अ़-[अ़०पु०] लाभ, नफ़ा देने वाला ।
नाफ़अ़-[अ़०पु०] नफ़ा देने वाला, लाभदायक ।
राफ़अ़-[अ़०पु] ऊंचा करने वाला, दाद (इन्साफ़, माफ़ी, बख़शिश) चाहने वाला, फ़रियादी ।
शाफ़अ़-[अ़०पु०] शिफ़ारिश करने वाला, बचाने वाला, हिमायत करने वाला, रक्षा करने वाला ।
राबअ़-[अ़०पु०] चौथा ।
मराबअ़-[अ़०पु०] मंज़िलें, बहुत से मकान ।
सामअ़-[अ़०पु०] सुनने वाला ।
लवामअ़-[अ़०अ०] रोशन, (प्रकाशित) चमकने वाली वस्तुएँ ।
मतामअ़-[अ़०अ०] लालच की जमाअ़, लोभ का बहुवचन ।
क़ारअ़-[अ़०पु०] रमल फेंककर भविष्य बताने वाला, रम्माल, वह व्यक्ति जिसके सिर के बाल किसी रोग के कारण खिर गये हों, मंत्रणा मानने वाला, दरवाज़ा खटखटाने या कुंडी बजाने वाला ।

शारअ्-[अ०पु०] लम्बा चौड़ा खुला रास्ता, शुरू करने वाला, मौलवी, पंडित, धार्मिक शिक्षा देने वाला।

क़वारेअ्-[अ० पु०] 'क़ारअ्' का बहुवचन, सख्तियां, ज्यादतियां, समय की प्रतिकूलता, गर्दिश, बलाएं, चक्कर, विपरीतता।

रावअ्-[अ०पु०] हटा देने वाला, रोकने वाला।

मुतावअ्-'मे' [अ०पु०] फ़र्मांबरदार, आज्ञापालक, हुक्म उठाने वाला।

[उपरोक्त क्रम के शब्द 'ए' की मात्रा को ह्रस्व करके भी बोले जा सकते हैं जैसे- राके, वाके इत्यादि।]

क

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का प्रथम कंठ्य व्यञ्जन, इसको स्पर्श वर्ण भी कहते हैं, ख, ग, घ, ङ, इसके सवर्ण हैं। इसे उर्दू, अरबी, फ़ारसी में 'काफ़' कहते हैं।

अक

अक-[सं०पु०] विष्णु, विराट, अग्नि, विश्व, ब्रह्मा इन्द्र, ललाट, वायु, कुबेर, अमृत, कांति, सरस्वती वि० रक्षक, उत्पन्न करने वाला।

अक-[सं०पु०] कष्ट, दुःख, पाप।

कक-× [हि०स्त्री०] जुलाहे का एक औजार, कंघी, एक पौधा विशेष।

एकक-[सं०वि०] एक से सम्बन्ध रखने वाला, जिसमें एक ही हो, असहाय, अकेला, अं०- सोल।

अंकक- [हि०पु०] हिसाब लिखने वाला, गिनती करने वाला, चिन्ह लगाने वाला।

अकल्कक-[सं०वि०] विनम्र, दम्भ रहित, मत्सर-रहित, निरहंकार, ईमानदार।

खक-[हि०स्त्री०] खाक, धूल, गर्द, गुबार, मिट्टी।

अस्य शाखक-[सं०पु०] अपने धर्म का त्याग करने करने वाला ब्राह्मण।

ककक-×[हि०स्त्री०] बाटी विशेष।

अंगक- [सं०पु०] अंग, शरीर, उ०- बदन।

अनंगक-[सं०पु०] चित्त, मन, अगहीन, कामदेव।

आङ्गक-[सं०पु०] अंग में बसने वाला, अंगराज, वि०- अंग देश में उत्पन्न।

अपांगक-[सं०पु०] अंग हीन, पंगु, अशरीरी, कामदेव, आँख की कोर, अपामार्ग।

चक-[हि०पु०] चकवा पक्षी, चकई नामक खिलौना, पहिया, ज़मीन का एक खंड, एक अस्त्र, चक्र, छोटा गांव, गेड़ा, एक गहना, अधिकार, दखल, वि०- अधिक भरपूर, ज्यादा, (सं०पु०)- साधु, रास, वि० भ्रान्त, भौचक्का।

अचक-[हि०वि०] भरपूर, न चूकने वाला, अत्यधिक, परिपूर्ण, ० स्त्री० भौचक्कापन, घबराहट, अचकचाने का भाव, अ०- अचानक, यकायक, अकस्मात्।

अजाचक-[हि०पु०] अयाचक, जिसे कुछ मांगने की आवश्यकता न हो, धन-धान्य से भरा पूरा, वि०- जो मांगे नहीं, सम्पन्न, संतुष्ट।

अयाचक-[सं०वि०] (दे०) अजाचक।

छक-×[हि०स्त्री०] नशा, तृप्ति, लालसा, छकना, अघाना, मस्त होना।

अछक-[हि०वि०] जो छका न हो, अतृप्त, भूखा, जिसका मन पूरा भरा न हो।

इच्छक-[सं०वि०] इच्छा करने वाला, चाहने वाला, अभिलाषी, पु०- एक वृक्ष, नारङ्गी।

अनिच्छक-[सं०वि०] इच्छा, कामना, अभिलाषा, न करने वाला, उ०- बेग़रज़।

जक-[हि०स्त्री०] हठ, अड़, धुन, रटन, (सं०पु०)- भूत, प्रेत, यक्ष, वि० जिद्दी, सनकी, कंजूस आदमी।

अजक-[सं०पु०] पुरूरवा का एक वंशज।

झक- [हि०स्त्री०] सनक, धुन, खब्त, बड़बड़ाहट, आँच, ताव, वि० चमक, झकाझक।

औंझक-×[हि०अ०] अचानक, सहसा, यकायक।

टक- [हि०स्त्री०] स्थिर दृष्टि, गड़ी हुई नज़र, लकड़ी आदि तौलने का चौरस पलड़ा, तराज़ू ।

टक-[सं०वि०] भ्रमण करने वाला, भ्रमणशील, स्त्री० रोक, अड़चन, उलझन, हिचक, गड़बड़, सिन्ध नदी (पाकिस्तान के अन्तर्गत) पर स्थित एक छोटा नगर जहाँ तक्षशिला नगरी थी, सिन्धु नदी की पश्चिम धारा, अत्यधिक आवश्यकता ।

ठक-[हि०पु०] काठ पर काठ बजाने या ठोकने की आवाज़, वि० स्तब्ध, भौचक्का, वह सलाई जिसमें अफीम का क़िवाम लगाकर सेंकते हैं, (चंडूबाज) ।

डक-[हि०पु०] एक प्रकार का पतला सफ़ेद टाट, (जिससे जहाजों के पाल बनते हैं), सूत या सन आदि से बना दबीज़ कपड़ा, एक अन्य कपड़ा, समुद्र या नदी का वह घाट जहाँ माल लादने और उतारने के लिए जहाज़ ठहरते हैं, अदालतों में लगा वह कठहरा जहाँ अभियुक्त खड़े किए जाते हैं ।

अंडक-[सं०पु०] छोटा अंडा, अंडकोश ।

आँख की ठंडक- [मु०] प्रिय व्यक्ति या वस्तु ।

आँखों चैन कलेजे ठंडक- [मु०] पूरी प्रसन्नता, बहुत बड़ी खुशी ।

एडक-[सं०पु०] भेड़ा, मेंढ़ा, जंगली बकरा ।

ढक-[हि०पु०] छिपाना, किसी को कोई वस्तु छिपाने को कहना ।

आढक- [सं०पु०] आढ़, चार सेर का वज़न या माप, अन्न नापने का एक माप या पात्र, पाइली ।

अषाढक-[सं०पु०] आषाढ मास ।

आषाढ़क-[सं०पु०] आषाढ़ का महीना ।

अणक-*[सं०वि०] अधम, नीच, बकवादी, बहुत छोटा, तुच्छ, कुत्सित, तिरस्करणीय, असाधा, पु०- एक तरह का पक्षी । [बहरा ।

अकर्णक-[सं०वि०] कर्णहीन, जिसके कान न हों,

तक-[हि०पु०] एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यवहार अथवा व्यापार की सीमा व अवधि सूचित करती है, पर्यन्त, पास, नज़दीक, यहाँ तक-वहाँ तक, स्त्री० तराज़ू, टक, (सं०वि०) निन्दित, दूषित, सहनशील ।

अंतक-[सं०पु०] नष्ट करने वाला, काल, यमराज, सन्निपात, ज्वर का एक भेद, ईश्वर, शिव ।

अनंतक-[सं०वि०] असीम, नित्य, पु० अनन्तदेव (जैन) ।

उदंतक-[सं०पु०] वार्ता, वृत्तांत, समाचार ।

अश्मंतक-[सं०पु०] चूल्हा, दीपाधार, मूंज जैसी एक घास, लिसोढ़ा, कचनार, छाजन, आच्छादन ।

थक-[हि०पु०] थाक, समूह, थोक, ढेर, सीमा, सरहद, थकने या हारने का भाव (किसी श्रम से) ।

अथक-[हि०वि०] न थकने वाला, अश्रांत, परिश्रमी, मेहनती ।

अनर्थक-[सं०वि०] निरर्थक, अर्थशून्य, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बेमतलब, बेफ़ायदा ।

दक-[सं०पु०] उदक, जल, पानी, रस, दक्ष, निपुण, प्रवीण, कुशल ।

अनिकंदक-[सं०पु०] हस्तिकंद नामक पौधा ।

आनंदक-[सं०वि०] आनन्द मनाने वाला, आनन्द देने वाला, आराम पहुंचाने वाला ।

उत्कंदक-[सं०पु०] एक प्रकार का रोग ।

धक-[हि०स्त्री०] भय या अधिक श्रम के कारण हृदय गति (दिल की धड़कन) तीव्र होना, धकधकी, * उमंग-उल्लास से हृदय का स्पन्दन ।

ऋधक-[सं०वि०] देना, मारना लड़ना ।

अकधक-*[हि०पु०] आगा-पीछा, आशंका, सोच-विचार, भयातुर ।

नक-[हि०स्त्री०] नाक, नासिका, नासा, नाक का संक्षिप्त रूप, (प्रायः समास में व्यवहृत) ।

अनक-[सं०पु०] एक तरह का पक्षी, वि० आनक, डंका, भेरी, नगाड़ा, बड़ा ढाल, मृदंग, दे० 'अणक'

अजनक-[सं०वि०] अनुत्पादक, अकारक ।

पक-[हि०वि०] पक्व, किसी वस्तु या फल के पकने का भाव । [पका हुआ ।

अपक-[हि०पु०] पानी, जल, वि० कच्चा, बिना

अल्पक-[सं०वि०] थोड़ा, छोटा, कम, ज़रा सा ।

फक–[हि०वि०] स्वच्छ, सफेद, बदरंग, अं० दो मिली हुई वस्तुओं का अलग अलग होना।

बक–[सं०पु०] बगला, वंचक, ठग, कुबेर, भीम के हाथों मारा गया एक राक्षस, एक ऋषि, एक पुष्प वृक्ष, एक असुर जिसे श्री कृष्ण ने मारा था, हि० स्त्री० बड़बड़ाहट, प्रलाप, बकवाद।

अकबक–[हि०पु०] प्रलाप-सलाप, बकबक, असंबद्ध प्रलाप, वि० अवाक्, चकित, भौचक्का।

भक–[हि०स्त्री०] एकाएक या रह-रह कर किसी वस्तु के जल उठने अथवा वेग से धुएं के निकलने का शब्द, (इसका प्रयोग प्राय: 'से' विभक्ति के साथ होता है), खून करने या वध करने का सम्बोधन।

अरभक–[हि०पु०] बच्चा, छौना, लड़का, बालक, नेत्र वाला, कुत्ता, वि० थोड़ा, दुबला, मूर्ख, निर्बुद्धि, बच्चों जैसा।

असंक–[सं०वि०] संकीर्ण, तंग, पतला।

अश्मक–[सं०पु०] भारत के एक दक्षिण प्रदेश का नाम, जिसे आजकल, 'ट्रावन कोर' कहते हैं, उक्त देश का निवासी।

आटे में नमक–[मु०] थोड़ा सा, जरा सा,।

यक–[सं०पु०] वृक्ष विशेष, फ़ा०वि० एक, अकेला।

अरक–[सं०पु०] आरग्वध, सं बाल, सेवार, वित्तपापड़ा, पहिये का अरा, सूर्य, अकवन, (हि०) भभके से खींचा हुआ 'अर्क' रस।

अदरक–[हि०पु०] एक पौधा, (जमीं कन्द) जिसकी गांठ दवा, चटनी और आचार के रूप में खाई जाती है, अदरख, सं० आर्द्रक।

अबरक–[हि०पु०] खानों से निकले जाने वाला तह-दार एक धातु, भोडल।

लक–[सं०पु०] ललाट, जंगली धान के बाल, (धातु उभय, लाकयति- लाकयते), चखना, पाना, प्राप्त करना, हासिल करना, वसूल करना, अं० क़िस्मत, नसीब, भाग्य, अ० तेरे वास्ते, फ़ा० बेवक़ूफ़, नादान, सौ हजार वा एक लाख की संख्या, वह लाख जो एक प्रकार का गोंद है।

अलक–[सं०पु०] मस्तक के इधर-उधर लटकते हु घुंघराले बाल, जुल्फें, लटा, लच्छेदार बाल शरीर पर केसर का उबटन, हरताल, सफ़ेद मदार ० महावर।

अपलक–[हि०अ०] एक टक, निर्निमेष।

वक–[सं०पु०] क्रौंच पक्षी, (दे०) बक।

अश्वक–[सं०पु०] घोड़ा, छोटा घोड़ा, घोड़े की तरह, नाबालिग घोड़ा।

शक–[सं०पु०] प्राचीन काल में शक द्वीप (मध्य एशिया) में रहने वाली एक समृद्ध जाति जो म्लेच्छों में गिनी जाती थी, (इस जाति की उत्पत्ति पुराणों में वर्णित सूर्य वंशी राजा 'नरिष्यंत' से मानी जाती है, इस जाति वाले अपने को देव पुत्र कहते थे, ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व भारत के मथुरा और महाराष्ट्र प्रदेशों पर इस जाति का शासन १६० वर्षों तक रहा, प्रसिद्ध सम्राट 'कनिष्क' इसी जाति के थे), तातार देश के निवासी तातारी, वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत चले, राजा शालवाहन का चलाया हुआ सवत जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरम्भ हुआ था, योग्य होना, सहनशील होना, शक्तिमान होना, दृढ़ होना, [अ०पु०] शंका, संदेह।

अंशक–[सं०पु०] भाग, खण्ड, दिन, हिस्सेदार, दायाद, साझीदार, पुत्र, (वि०) हिस्सा पाने वाला, बांटने वाला, अंशधारण करने वाला।

अश्वशक–[सं०पु०] घोड़े की लीद।

अपकर्षक–[सं०वि०] निरादर या अपमान करने वाला, नीचे खींचने या गिराने वाला।

अभिमर्षक–[सं०वि०] छूने या स्पर्श करने वाला, बलात्कार करने या नीचा दिखाने वाला।

उत्कर्षक–[सं०वि०] उन्नति करने वाला, ऊपर को खिंचने वाला, उखाड़ने वाला।

सक–*[हि०स्त्री०] शक्ति, बल, सामर्थ, वैभव, संपत्ति, × पु० धाक, साका, संदेह (दे०) 'शक'।

हक–×[हि०पु०] साहस घबरा जाने से हृदय में उठने वाली धड़कन या लगने वाला धक्का।

क़

उर्दू भाषा का छब्बीसवां अक्षर, इसे 'क़ाफ़' कहते हैं, इसका उच्चारण स्थान गले का उग्र भाग है।

अक़

क़क़-[अ०पु०] मुरझाया हुआ, भय या हैरत के कारण चहरे का बदला हुआ रंग, हक्का-बक्का, हैरान, परेशान।

उफ़क़-[अ०पु०] क्षितिज, आकाश, किनारा,

उज़बक़-[तु०पु०] तातारियों की एक जाति, वि० मूर्ख, निर्बुद्धि, अनाड़ी, गँवार, उजड्ड।

अहमक़-[अ०वि०] बेवक़ूफ़, मूर्ख, जड़, नासमझ।

अबरक़-[अ०पु०] एक चमकदार सफ़ेद धातु जो ज़मीन से खोदकर निकाली जाती है, (भोडल)।

अबलक़-[अ०पु०] चितकबरा, सियाह रंग का घोड़ा जिसके हाथ पैरों में सफ़ेदी हो।

शक़-[अ०वि०] फटा हुआ, दरार पड़ा हुआ।

अनल हक़-[अ०पु०] मैं हक़, सं० अहं ब्रह्मास्मि।

हक़-[अ०पु०] सत्य, सच, उचित, मुनासिब, सही, वाजिब, ठीक, ईश्वर, ख़ुदा, स्वत्व, अधिकार, दावा, फर्ज, कर्तव्य, नेग, दस्तूरी, बदला, वि० ठीक, दुरुस्त, न्याय, प्राप्य।

ख

हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कंठ्य है, * [सं०पु०] गर्त, गड्ढा, खाली स्थान, निर्गम, निकास, छिद्र, बिल, इन्द्रिय, प्राण वायु आने-जाने की नाली, आकाश, शून्य, स्वर्ग, सुख, शब्द, कर्म, आखा, ब्रह्मा।

अख

अख-[दे०पु०] बग़ीचा, बाग़, * [सं०वि०] अक्षय, अविनाशी, अनश्वर, अंत तक रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो।

कख-×*[हिं०स्त्री०] कुक्षि, कांख, बगल।

खख-×*[हिं०स्त्री०] बांस की डलिया, टोकरी।

चख-*[हिं०पु०] आँख, नेत्र, चक्षु, फ़ा० चश्म।

जख-×[हिं०पु० एक प्रकार का कल्पित भूत, यक्ष।

झख-[हिं०स्त्री०] झींकने की क्रिया या भाव, *मछली, झष।

टख-*[दे०स्त्रि०] एड़ी के ऊपर की हड्डी या गांठ।

णख-×[सं०पु०] (दे०) 'नख'।

नख-[सं०पु०] नाख़ून, एक गंध द्रव्य, २० की संख्या, खंड, टुकड़ा, फ़ा० पतंग उड़ाने का बारीक रेशमी बटा हुआ डोरा।

अनख-[हिं०पु०] झुँझलाहट, क्रोध, रोष, रिस, ग्लानि, डाह, जलन, कोप, ईर्षा, द्वेष, वि० नख रहित।

पख *[हिं०पु०] पखवारा, अर्ध मास, सं० पक्ष।

अमरपख-[हि पु०] पितृ पक्ष, अमर पक्ष।

बख-*[दे०पु०] दुःख, संकट, आपत्ति।

भख-*[हिं०पु०] भक्ष, आहार, भोजन।

मख-[सं०पु०] यज्ञ, हवन विशेष।

इन्द्रमख-[सं०पु०] इन्द्र की तुष्टि के लिए किया जाने वाला एक यज्ञ।

रख-[हिं०स्त्री०] वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए सुरक्षित रखी गई हो, किसी वस्तु को कहीं रखने की क्रिया या भाव।

अबरख-[हिं०पु०](दे०) 'अबरक'।

अमरख-[हिं०पु०] क्रोध, कोप, गुस्सा, रिस, रोस, अमर्ष, रस के ३३ संचारी भावों में से एक।

अलख-[हिं०वि०] जो दिखाई न पड़े या देखा न जा सके, अगोचर, अदृश्य, अप्रकट, अप्रत्यक्ष, नज़र न आने वाला, पु० परं ब्रह्म, परमेश्वर।

अवलक्ष–[सं०वि०] (दे०) अवलक्ष ।
अनिलसख–[सं०पु०] अग्नि, आग ।
ईशानसख–[सं०पु०] कुबेर ।
ईश्वरसख–[सं०क्रि०स०] शिवजी के सखा कुबेर ।

ख़

उर्दू; फ़ारसी भाषा का दसवां अक्षर, उच्चारण स्थान कंठ का भीतरी अग्र भाग है ।

अख़

अख़– [फ़ा०पु०] भ्राता, भाई. उ०वि०- वह आवाज़ जो घृणा के लिए या थूंकने से पहले निकलती है ।
चख़–[फ़ा०स्त्री०] झगड़ा, तकरार, बैर, छेड़छाड़ ।
नख़–[फ़ा०स्त्री०] रेशम का बटा हुआ तागा, पतंग की डोर जो प्रायः लखनऊ की ओर बनती है ।
पख़–[फ़ा०स्त्री०] व्यर्थ बढ़ाई हुई बात, शर्त, अड़ंगा, झगड़ा, बखेड़ा, फ़साद, प्रतिबन्ध, रोक, चुगली, दोष, त्रुटि, ऐब, नुक्स, बकवास ।
यख़–[फ़ा०स्त्री०] गिरकर जमी हुई बर्फ़, मशीनों द्वारा बनाया हुआ सख्त बर्फ़, पाले से जमा हुआ पानी ।

ग

व्यंजन में 'क' वर्ग का तीसरा वर्ण, उच्चारण स्थान कंठ है, [सं०पु०] गीत, गंधर्व, गणेश, गुरु मात्रा, गमन करने वाला, गाने वाला ।

अग

अग–[सं०वि०] चलने में असमर्थ, स्थावर, टेढ़ा चलने वाला, अगम्य, अचल, मुस्तक़िल, पु० पेड़, वृक्ष, पर्वत, पहाड़, सूर्य, अजगर, साँप, ० अज्ञ, अनजान, घड़ा, सात की संख्या ।
कग–*[हि०पु०] कौआ, वायस, काग, बोतल का [डट्टा ।
खग–[सं०पु०] पक्षी, चिड़िया, बाण, तीर, गंधर्व, ग्रह, तारा, बादल, देवता, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, आकाश में चलने वाली वस्तु या शक्ति, वायुयान ।
गग– ×*[दे०] गागर या गगरी संबन्धी ।
घग–×*[दे०] बहुत चालाक आदमी, कांइयाँ, फ़ितरती, मन में गांठ रखने वाला, उल्लू की जाति का एक पक्षी, वायस, घाघ ।
चग–×[दे०पु०] चतुर, चालाक, चपल, चंट, वि० किसी प्रकार का धोका खाने वाला । जैसे- पैर चग गया, फिसलने या चूकने की क्रिया ।
छग–[सं०पु०] छाग, बकरा, स्त्री० छगी ।
जग–[हि०पु०] संसार, विश्व, जगत्, दुनिया, जन-समुदाय, लोक, यज्ञ, मख, हवन विशेष ।
अजग–[सं०पु०] शिव का धनुष, विष्णु, अग्नि, वि० सोया हुआ, जो जागता न हो ।
अगजग–[सं०पु०] चराचर, जगत ।
झग–[हि०पु०] झगा, ढीला कुर्ता, अँगरखा ।
टग–*[सं०पु०] सुहागा, क्रीड़ा, विलास, मेंड़, टीला ।
ठग–[हि०पु०] धोखा देकर लूटने वाला, धूर्त, छली, गठकटा, चोर, दगाबाज़, वंचना करने वाला ।
डग–[हि०पु०] एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह धरना, फाल, क़दम, रफ्तार, चाल, पग ।
अडग–[हि०वि०] न डिगने वाला, स्थिर, अचल, अटल, क़ायम ।
उष्णग–[सं०पु०] गर्मी का मौसम । [डोरा ।
तग *×[हि०पु०] तागा, सूत या रेशम का महीन
अंतग–[सं०वि०] पारगामी, स्वर्ग जाने वाला, निपुण, पूरा, जानकार, अंत तक पहुंचा हुआ ।
अनंतग–[सं०वि०] अनन्त काल तक चलने वाला ।
अत्यंतग–[सं०वि०] बहुत तेज़ चलने वाला ।
थग–× [दे०पु०] सीमा, राशि, समूह, ढेर, थाक ।
दग ×[दे०पु०] दाग़, दाह, धब्बा, मोर्चा ।
अदग–[हि०वि०] बेदाग़, निर्दोष, अछूता, बेऐब, जो दाग़ा न गया हो ।

वग-*×[हि०वि०] सूत, तागा, धागा, डोरा।

नग-[सं०वि०] गमन न करने वाला, न चलने फिरने वाला, अचल, स्थिर, पु० पर्वत, पहाड़, वृक्ष, पौधा, सूर्य, साँप, सात की संख्या, फ़ा०पु० नगीना, (काँच या रंगीन पत्थर का) जो अँगूठियां आदि में जड़ा जाता है।

असितनग-[सं०पु०] नीलगिरि या नीलाचल पर्वत।

पग-[हि०पु०] (दे०) 'डग', पाँव, पद, चरण, अनुरक्ति, प्रेम, डूबन, भीगन, सनन।

उपग-[सं०वि०] समीप आया हुआ, पीछे लगा हुआ, सम्मिलित, प्राप्त हुआ।

फग-*[हि०पु०] जाल, फंद-, प्रेम अनुराग, एक प्रकार का साग।

वग-*[हि०पु०] वगुला, 'बाग़' का लघु, (समास में) एक चींटे का नाम जो पशुओं के चिपट कर रक्त पिया करता है।

भग-[सं०पु०] सूर्य, शिव का एक रूप, वारह प्रकार के आदित्यों में से एक, ईश्वर की ६ विभूतियां ऐश्वर्य, वीर्य, यश,श्री (सौभाग्य) ज्ञान, वैराग्य, इच्छा, कान्ति, मोक्ष, धर्म, योनि, गुदा, अंडकोष, के मध्द का स्थान, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

अभग-[सं०वि०] अभागा, बदनसीब, भाग्यहीन।

मग-[हि०पु०] रास्ता, मार्ग, सं०पु०- मगध देश, एक प्रकार के शाक द्वीपी ब्राह्मण।

लग-[हि०वि०] तक, पर्यंत, समीप, पास, लिए, संग, साथ, वास्ते, स्त्री०- लगन, लौ, प्रेम।

अलग-[हि०वि०] पृथक, जुदा, न्यारा, भिन्न, दूर, विशिष्ट, सुरक्षित, बचा हुआ, कोश।

अलग अलग-[हि०अ०] व्यक्तिशः, प्रत्येक को, प्रत्येक से, दो भाग, विभक्त, जुदा-जुदा।

अलग थलग- [हि०वि०] जुदा, पृथक, दूर।

वग-[हि०स्त्री०] (दे०) 'वग'।

अध्वग-[सं०वि०] ऊपर गमन, चढ़ना, ऊंचा, उठना, स्वर्गगामी।

ऊर्ध्वग-[सं०वि०] (दे०) 'ऊर्ध्वग'।

आकाशग- [सं०पु०] पक्षी, परिन्द।

हग-[सं०क्रि०अ०] शौच करने (पखाने जाने) का सम्बोधन वाक्य।

ईहग-[सं०वि०] इच्छानुसार चलने वाला।

अजिह्मग-[सं०वि०] सीधा जाने वाला पु० बाण, [तीर।

उमग-*[हि०स्त्री०] (दे०) 'उमंग', हर्ष, खुशी।

यग-*×[दे०पु०] (दे०) 'जग' फ़ा० यगानत, निकटता, सम्बन्ध, सहयोग।

अन्यग-[सं०वि०] दूसरे के पास जाना, जार, छिनरा, लंपट, पापी, विभिचारी।

अरग-[हि०पु०] एक पीले रंग का सुगन्धित मिश्रित द्रव्य, अरगजा, यह चंदन; केशर; आदि से बनताहै।

उरग- [सं०पु०] साँप, (छाती के बल रेंगने वाला नाग।

औरग-[सं०वि०] सांप का, सांप सम्बन्धी, पु० आश्लेषा नक्षत्र।

अध्वरग-[सं०वि०] अध्वर यज्ञ के काम में आने [वाला।

ग़

उर्दू; फ़ारसी भाषा का पच्चीसवां अक्षर, उच्चारण स्थान गले का अन्तिम भाग है।

आग़

अब्लाग़ इब्लाग़ } [अ०पु०] पहुंचाना, भेजना, रवाना करना।

आग का बाग़-[पु०]कोयलों की जलती हुई अँगीठी, आतिश बाज़ी, सुनार का अँगीठा।

आली दिमाग़-[अ०वि०] बहुत बुद्धिमान, ऊंचे दिमाग़ वाला, अक़्लमन्द, तीव्र समझ वाला।

अंधा चिराग़-[उ०पु०] धुंधली रोशनी वाला चिराग़, धीमे प्रकाश का दीया।

घ

हिन्दी वर्णमाला के व्यंजनों में 'क' वर्ग का चौथा व्यञ्जन; उच्चारण स्थान कंठ या जिह्वा मूल है, यह स्पर्श वर्ण है।

अघ

अघ-[सं०पु०] पाप, दोष, अधर्म, दुष्कर्म, गुनाह, दुःख, विपत्ति, अशौच, व्यसन, अघासुर नामक कंस का सेनापति; जिसे श्री कृष्ण ने मारा था।

अघ्-[सं०धा०उ०] भूल करना, पाप करना, अनुचित करना।

अनघ-[सं०वि०] अघहीन, पाप रहित, निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह, पवित्र, शुद्ध, निर्मल, अकलुष निरापद, निष्कलंक, अशोक, सुरक्षित, अनचोटिल, सुन्दर, खूबसूरत, पु० वह जो पाप न हो, पुण्य, शिव, विष्णु, गणेश नर्मों।

अर्घ-[हि०पु०] सोलह प्रकार के उपचारों में से एक, देवता के सामने फूल; अक्षत; दूब आदि अर्पण करने की क्रिया, जल चढ़ाना।

ङ

व्यंजन वर्ण का पांचवां तथा 'क' वर्ग का अन्तिम अक्षर, यह स्पर्श वर्ण है, उच्चारण स्थान कंठ नासिका है, [सं०पु०] विषय, विषय की कामना, भैरव, शिव का एक नाम।